MINISO
Please visit store nearest to you at these locations :
IRRUMMANZIL (L&T MALL)
MOOSARAMBAGH (L&T MALL)
KOMPALLY (TNR PLAZA)

हिन्दी दिवस
हिन्दी हमारी पहचान
गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं
खबरें जो सोच बदल दे
शुभ लाभ
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

MOU Holder and Distributors
RN METALS Pvt. Ltd
Distributors of SAIL & VSP products in Telangana
Stockist of MS Beams MS Channel, MS Angle, MS Plates, TMT Bars
A-23/5 & 6, APIE, BALANAGAR, HYD.-500 037
040-23774718, 040-23774719, 9160111471

Postal Regd.No. HQ/SD/523/2026-28 । सोमवार, 14 सितंबर, 2026 । हैदराबाद और नई दिल्ली से प्रकाशित । Epaper : https://epaper.shubhlabhdaily.com । संपादक : गोपाल अग्रवाल । पृष्ठ : 12 । मूल्य-8 रु.। वर्ष-8 । अंक-254

3 दिन-15 द्विपक्षीय बैठकें

मोदी मैराथन

नई दिल्ली, 13 सितंबर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान तीन दिनों में अलग-अलग देशों के राष्ट्राध्यक्षों के साथ 15 औपचारिक द्विपक्षीय बैठकें कीं। इसके अलावा उन्होंने कई वैश्विक नेत-ाओं और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के प्रमुखों के साथ अनौपचारिक बातचीत भी की। विदेश मंत्रालय ने रविवार को इसकी जानकारी दी। भारत ने 12 और 13 सितंबर को भारत मंडपम में 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। इस बार सम्मेलन की थीम 'सुदृढ़ता, नवाचार, सहयोग और सतत विकास का निर्माण' रखी गई थी। सम्मेलन में 13 वैश्विक नेताओं के साथ कुल 17 प्रतिनिधिमंडल नई दिल्ली पहुंचे।

पुतिन से हुई मोदी की अहम मुलाकात

प्रधानमंत्री मोदी के कूटनीतिक कार्यक्रम की शुरुआत रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ बातचीत से हुई। एक महीने से भी कम समय में दोनों नेताओं की यह दूसरी मुलाकात थी। इससे पहले 31 अगस्त को बिश्केक में शंघाई सहयोग संगठन के शिखर सम्मेलन के दौरान दोनों नेता मिले थे।

मोदी-पुतिन की बैठक में रक्षा, ऊर्जा, परमाणु ऊर्जा और महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में सहयोग की समीक्षा की गई। दोनों नेताओं ने वर्ष 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को 100 अरब डॉलर तक पहुंचाने के लक्ष्य पर भी चर्चा की।

रक्षा क्षेत्र की बातचीत में एस-400 वायु रक्षा प्रणाली की पांचवीं रेजिमेंट की आपूर्ति, ब्रह्मोस मिसाइल प्रणाली के उन्नयन और आरवीवी-बी.डी. लंबी दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों की संभावित आपूर्ति जैसे मुद्दे शामिल रहे। दोनों पक्षों ने व्यापार असंतुलन कम करने, भारतीय कुशल कामगारों की रूस में आवाजाही बढ़ाने तथा उर्वरक, इस्पात और रेलवे आपूर्ति शृंखला में सहयोग बढ़ाने पर भी बातचीत की।

ईरानी राष्ट्रपति से चाबहार और ऊर्जा सुरक्षा पर चर्चा

प्रधानमंत्री मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति मसूद पेजे-श्कियान से भी मुलाकात की। राष्ट्रपति बनने के बाद यह उनका पहला भारत दौरा था। दोनों नेताओं की मुलाकात ऐसे समय हुई, जब ईरान से जुड़े संघर्ष और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति के लिए महत्वपूर्ण होर्मुज जलडमरूमध्य की सुरक्षा को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने एक बार फिर भारत की ओर से बातचीत और कूटनीति के जरिए विवादों के समाधान की बात दोहराई। दोनों नेताओं ने चाबहार बंदरगाह, क्षेत्रीय संपर्क और संघर्ष के व्यापार एवं ऊर्जा सुरक्षा पर पड़ने वाले प्रभाव को लेकर भी चर्चा की।

▶10 पर

माँसाहारी/शाकाहारी में उलझे राहुल

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान आयोजित रात्रिभोज के मेन्यू को लेकर सियासी घमासान शुरू हो गया है। दरअसल, दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्रिक्स नेताओं और प्रतिनिधियों के लिए खास रात्रिभोज का आयोजन किया था। इसमें केवल शाकाहारी भोजन परोसा गया। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने इस मेन्यू को लेकर सरकार पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि 80 फीसदी भारतीय मांसाहारी भोजन करते हैं।

राहुल गांधी ने रविवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट किया। उन्होंने लिखा, ''रिकॉर्ड के लिए, 80 प्रतिशत भारतीय मांसाहारी भोजन करते हैं।'' उन्होंने आगे कहा कि भारतीय मांसाहारी भोजन स्वादिष्ट होता है। इसके साथ ही उन्होंने अपनी बहन के छोले-भटूरे की भी तारीफ की। राहुल गांधी ने छोले-भटूरे की एक तस्वीर भी साझा की। ▶10 पर

पंचमुखी संकटमोचन महा गणपति
खैरताबाद

'शुभ-लाभ' के सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं और हॉकरों को श्री गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं। विघ्नहर्ता आपके जीवन के प्रत्येक विघ्न हरें।

अवकाश सूचना

भगवान गणेश जी की चतुर्थी के उपलक्ष्य में **'शुभ-लाभ'** कार्यालय में सोमवार दि. 14 सितंबर, 2026 को **अवकाश** रहेगा। अतः **'शुभ-लाभ'** का अगला अंक बुधवार 16 सितंबर, 2026 को प्रकाशित होगा।
- प्रबंधक

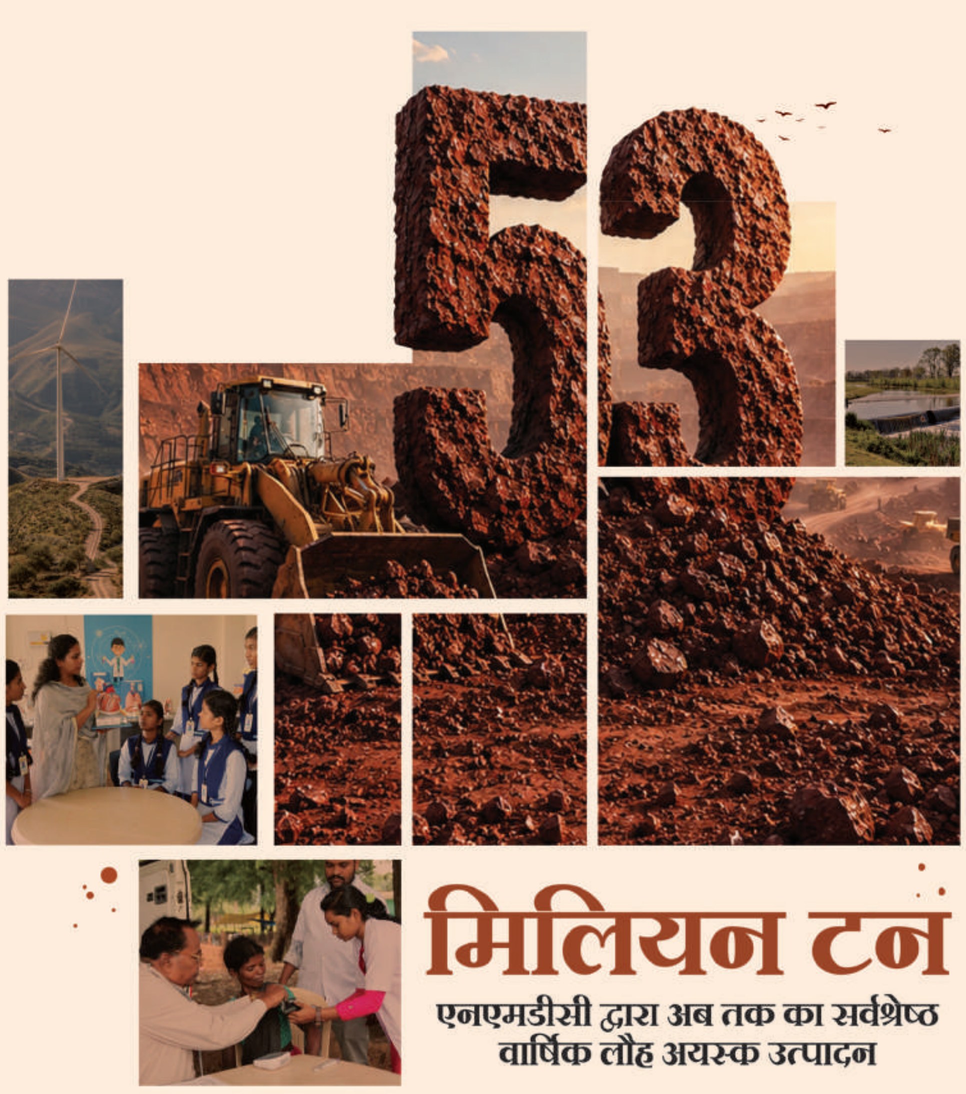

मिलियन टन
एनएमडीसी द्वारा अब तक का सर्वश्रेष्ठ वार्षिक लौह अयस्क उत्पादन

भारत की सबसे बड़ी लौह अयस्क उत्पादक एनएमडीसी इस्पात मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन नवरत्न कंपनी है, जो औद्योगिक प्रगति की जीवन रेखा है ।

मानव एवं भूमंडल के लिए उत्तरदायित्वपूर्ण खनन एनएमडीसी की मूल भावना है और इसके लिए यह निरंतर नवाचार के साथ अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर रहा है।

एनएमडीसी
NMDC

एनएमडीसी की ओर से हिन्दी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

हिन्दी है हमारी शान,
देश की एकता का अभिमान

nmdc.co.in
/nmdclimited

जिम्मेवार खनन
वैज्ञानिक | सुस्थिर | खुशियां बिखेरते हुए

एनएमडीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
पंजीकृत कार्यालयः खनिज भवन, 10-3-311/ए,
कैसल हिल्स, मासाब टैंक, हैदराबाद - 500028
सीआईएनः L13100TG1958GOI001674

हिंदी : भारत की विविधता को जोड़ती, विकास को गति देती भाषा

भारत केवल भौगोलिक सीमाओं से परिभाषित देश नहीं है। यह विविध भाषाओं, बोलियों, संस्कृतियों, परंपराओं, विचारों और जीवन-पद्धतियों का जीवंत संगम है। हमारी यही विविधता भारत की सबसे बड़ी शक्ति है। इस विविधता के बीच संवाद और समन्वय स्थापित करने में भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। हिंदी इस बहुभाषी भारत में संवाद की एक सशक्त कड़ी के रूप में निरंतर अपनी भूमिका निभाती रही है।

14 सितंबर हमारे लिए केवल हिंदी दिवस मनाने का अवसर नहीं, बल्कि अपनी भाषाई विरासत, संवैधानिक दायित्व और भविष्य की आवश्यकताओं पर विचार करने का अवसर भी है। 14 सितंबर 1949 का दिन भारतीय भाषायी इतिहास का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। यह निर्णय केवल किसी एक भाषा को प्राथमिकता देने का निर्णय नहीं था, बल्कि एक ऐसे भारत में प्रशासनिक और राष्ट्रीय संवाद की व्यवस्था विकसित करने का प्रयास था, जिसकी पहचान ही भाषाई विविधता है। यही कारण है कि भारतीय भाषाओं के परस्पर सम्मान और सह-अस्तित्व की भावना हमारे संवैधानिक दृष्टिकोण का अभिन्न हिस्सा बनी।

यह ऐतिहासिक निर्णय हमें यह भी स्मरण कराता है कि भारत में भाषा का प्रश्न केवल भाषा तक सीमित नहीं है। यह हमारी सामाजिक एकता, सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रीय संवाद से गहराई से जुड़ा हुआ है। हिंदी का विकास तभी सार्थक है, जब वह भारत की अन्य भाषाओं के साथ संवाद और समन्वय को मजबूत करते हुए देश की विविधता को और समृद्ध करे।

विविधता में संवाद की शक्ति

भारत की भाषाई विविधता हमारी सांस्कृतिक संपदा है। प्रत्येक भारतीय भाषा अपने साथ सदियों की स्मृतियां, लोकज्ञान, साहित्य और सांस्कृतिक अनुभव लेकर चलती है। इसलिए किसी एक भाषा का विकास दूसरी भाषा के विकास की कीमत पर नहीं होना चाहिए। हिंदी की वास्तविक शक्ति इसी में है कि वह भारतीय भाषाओं के साथ सह-अस्तित्व और संवाद को मजबूत करे।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौर को देखें तो भी हमें भाषा की इसी सेतु-भूमिका के अनेक उदाहरण मिलते हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ने और उनके बीच विचारों का आदान-प्रदान बढ़ाने में हिंदी और हिंदुस्तानी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महात्मा गांधी सहित अनेक राष्ट्रीय नेताओं ने ऐसी भाषा के महत्व को रेखांकित किया, जो जनसामान्य तक सहज रूप से पहुंच सके। यह इतिहास हमें एक महत्वपूर्ण संदेश देता है भाषा की सार्थकता केवल उसके बोलने वालों की संख्या में नहीं, बल्कि लोगों को जोड़ने और विचारों को एक-दूसरे तक पहुंचाने की उसकी क्षमता में निहित होती है।

हिंदी ने सदियों से विभिन्न भारतीय भाषाओं से शब्द, अभिव्यक्तियां और सांस्कृतिक तत्व आत्मसात किए हैं। यही ग्रहणशीलता उसे निरंतर समृद्ध और व्यापक बनाती रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को भारतीय भाषाओं के बीच सेतु के रूप में देखा जाए – ऐसा सेतु जो एक भाषा को दूसरी भाषा से जोड़ता है, विचारों का आदान-प्रदान बढ़ाता है और देश की एकता को अधिक मजबूत बनाता है।

विकास की भाषा के रूप में हिंदी

किसी भी भाषा की वास्तविक शक्ति तभी सामने आती है, जब वह बदलते समय की आवश्यकताओं के साथ स्वयं को विकसित करती है। आज भारत ज्ञान, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई

विवेक जायसवाल
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, ईसीआईएल

ऊंचाइयां प्राप्त कर रहा है। अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर परमाणु ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिक्स, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल तकनीक और विनिर्माण तक भारतीय प्रतिभा वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है।

ऐसे समय में वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना अत्यंत आवश्यक है। विकास तभी व्यापक और समावेशी बन सकता है, जब उसकी जानकारी समाज के अधिक से अधिक वर्गों तक उनकी सहज भाषा में पहुंचे। हिंदी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। तकनीकी विषयों की जटिलता को सरल और सहज हिंदी में प्रस्तुत करके हम ज्ञान को केवल विशेषज्ञों तक सीमित रखने के बजाय विद्यार्थियों, युवाओं, कर्मचारियों और सामान्य नागरिकों तक पहुंचा सकते हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कार्यरत सार्वजनिक उपक्रम के रूप में हमारा अनुभव भी यही बताता है कि तकनीक तभी अधिक प्रभावी बनती है, जब उसके साथ संवाद सरल और सहज हो। तकनीकी उत्कृष्टता के साथ प्रभावी संप्रेषण भी किसी संगठन की सफलता का महत्वपूर्ण आधार है।

डिजिटल युग में हिंदी की नई संभावनाएं

आज भाषा और तकनीक का संबंध पहले से कहीं अधिक गहरा हो गया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया, मोबाइल एप्लिकेशन, डिजिटल सेवाओं और कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने भाषाओं के उपयोग के नए अवसर पैदा किए हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद, वाक् पहचान, टेक्स्ट-टू-स्पीच और भाषा-संसाधन जैसी तकनीकों ने भारतीय भाषाओं के लिए संभावनाओं का एक नया संसार खोला है। यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है। यदि तकनीक को भारतीय भाषाओं के साथ प्रभावी रूप से जोड़ा जाए, तो डिजिटल सेवाओं की पहुंच और व्यापक हो सकती है।

विकसित भारत के निर्माण में भाषाओं की भूमिका

भारत आज विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। विकसित भारत केवल आर्थिक समृद्धि या तकनीकी प्रगति का नाम नहीं है। यह ऐसा भारत है जिसमें विकास का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुंचे, ज्ञान सभी के लिए सुलभ हो और नागरिकों को अपनी भाषा में अवसर एवं जानकारी प्राप्त हो।

इस दृष्टि से भारतीय भाषाएं विकास की महत्वपूर्ण आधारशिला हैं। हिंदी, अपनी व्यापक पहुंच और संप्रेषण क्षमता के कारण, इस प्रयास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है। लेकिन इसके साथ ही हमें यह भी सुनिश्चित करना होगा कि भारत की सभी भाषाओं का सम्मान और विकास समान रूप से हो।

हिंदी की प्रगति भारतीय भाषाओं की प्रगति से अलग नहीं है। वास्तव में हिंदी जितनी अधिक भारतीय भाषाओं से संवाद करेगी, उतनी ही अधिक समृद्ध होगी।

भाषा, तकनीक और भविष्य का भारत

भविष्य का भारत ज्ञान और तकनीक पर आधारित भारत होगा। ऐसे भारत में भाषा की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी। हमें ऐसी तकनीक विकसित करनी होगी जो भारतीय भाषाओं को समझे, उनके बीच संवाद स्थापित करे और ज्ञान को भाषाई सीमाओं से मुक्त करे। एक समय था जब भाषा देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों को विचार और उद्देश्य के स्तर पर जोड़ने का माध्यम बनी थी। आज परिस्थितियां बदल गई हैं, लेकिन आवश्यकता वही है संवाद की। अंतर केवल इतना है कि आज संवाद के माध्यम बदल गए हैं। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन अनुवाद और डिजिटल प्रौद्योगिकी ने भाषाओं के बीच संवाद की संभावनाओं को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा दिया है।

इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में कार्यरत संस्थानों के लिए यह एक महत्वपूर्ण अवसर है। हमें न केवल विश्वस्तरीय तकनीक विकसित करनी है, बल्कि यह भी देखना है कि उसका लाभ भारत के नागरिकों तक उनकी सहज भाषा में पहुंचे।

हिंदी दिवस : संकल्प का अवसर

हिंदी दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि भाषा केवल शब्दों का माध्यम नहीं होती। भाषा विचारों को आकार देती है, समाज को जोड़ती है और संस्कृति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे ले जाती है। इस अवसर पर हमारा संकल्प होना चाहिए कि हम हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें, उसे सरल और आधुनिक बनाएं तथा विज्ञान, प्रौद्योगिकी और डिजिटल दुनिया के साथ उसका संबंध और मजबूत करें। साथ ही, भारत की सभी भाषाओं के प्रति सम्मान और उनके विकास की भावना को भी निरंतर आगे बढ़ाएं।

आज भारत एक नए आत्मविश्वास के साथ विश्व पटल पर आगे बढ़ रहा है। इस यात्रा में हमारी भाषाएं हमारी सांस्कृतिक पहचान भी हैं और सामाजिक शक्ति भी। हिंदी इस बहुरंगी भाषाई भारत को जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

आइए, हिंदी दिवस पर हम ऐसा भारत बनाने का संकल्प लें, जहां भाषा संवाद का माध्यम बने, विविधता हमारी शक्ति बने, तकनीक ज्ञान को सब तक पहुंचाए और विकास प्रत्येक नागरिक तक पहुंचे।

यही हिंदी की सार्थक भूमिका है भारत की विविधता को जोड़ना और भारत के विकास को गति देना।

हिंदी हृदय गान है

आन-बान सब शान है, और हमारा गर्व।
हिंदी से ही पर्व है, हिंदी सौरभ सर्व।।

हिंदी हृदय गान है, मृदु गुणों की खान।
आखर-आखर प्रेम है, शब्द-शब्द है ज्ञान।।

बिंदिया भारत भाल की, हिंदी एक पहचान।
सैर कराती विश्व की, बने किताबी यान।।

प्रीत प्रेम की भूमि है, हिंदी निज अभिमान।
मिला कहाँ किसको कहीं, बिन भाषा सम्मान।।

वन्दन, अभिनन्दन करे, ऐसा हो गुणगान।
ग्रंथन हिंदी का कर लो, तभी मिले सम्मान।।

हिंदी भाषा रस भरी, रखती अलग पहचान।
हिंदी वेद पुराण है, हिंदी हिन्दुस्तान।।

हिंदी का मैं दास हूँ, करूँ मैं इसकी बात।
हिंदी मेरे उर बसे, हिंदी हो जज्बात ।।

निज भाषा का धनी जो, वही सही धनवान।
अपनी भाषा सीख कर, बनता व्यक्ति महान।।

मौसम बदले रंग ज़ब, तब बदले परिवेश।
हो हिंदीमय स्वयं जब, तभी बदलता देश।।

निज भाषा बिन ज्ञान का, होता कब उत्थान।
अपनी भाषा में रचे, सौरभ छंद सुजान।।

एक दिवस में क्यों बंधे, हिन्दी का अभियान।
रचे बसे हर पल रहे, हिन्दी हिन्दुस्तान।।

-डॉ. प्रियंका सौरभ
(राजनीति विज्ञान,
कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक)

हिंदी का विकास – ज्ञान का विस्तार, श्री अन्न का प्रसार – खाद्य एवं पोषण सुरक्षा का आधार

डॉ. (श्रीमती) सी. तारा सत्यवती
निदेशक
भाकृअनुप–भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान

प्रिय साथियों,

हिंदी दिवस के इस गौरवपूर्ण अवसर पर भाकृअनुप–भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान की ओर से आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं।

भारत भाषाई, सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विविधताओं से समृद्ध राष्ट्र है। हमारी भाषाएं हमारी सांस्कृतिक चेतना तथा ज्ञान परंपरा की अमूल्य धरोहर हैं। हिंदी, भारत के व्यापक जनसमूह के बीच संवाद तथा संपर्क का एक सशक्त माध्यम होने के साथ–साथ ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान और जनसंचार को जन–जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आज विश्व अनेक गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है – जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों पर बढ़ता दबाव, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा तथा सतत कृषि जैसी चुनौतियां वैश्विक चिंता का विषय हैं। ऐसे समय में श्री अन्न (बाजरा, ज्वार, रागी, कंगनी, कोदो, कुटकी, सावां, चेना, छोटी कंगनी) का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। कम पानी की आवश्यकता, प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में उत्पादन की क्षमता तथा पोषण संबंधी विशेषताओं के कारण श्री अन्न भविष्य की सतत कृषि एवं खाद्य प्रणालियों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण फसलों के रूप में उभर रहे हैं।

भारत, श्री अन्न की समृद्ध परंपरा तथा विविधता संपन्न देश है, और आज वह इनके अनुसंधान, विकास, उत्पादन, मूल्य संवर्धन तथा लोकप्रियकरण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। वर्तमान समय में किसानों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों, उद्योगों तथा उपभोक्ताओं के बीच श्री अन्न के प्रति बढ़ती जागरूकता एक सकारात्मक परिवर्तन का संकेत है। श्री अन्न केवल हमारी पारंपरिक कृषि विरासत का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि पोषण सुरक्षा, किसानों की आय, जलवायु–अनुकूल कृषि व सतत विकास की दिशा में भी महत्वपूर्ण संभावनाएं प्रस्तुत करते हैं।

इस परिवर्तन को व्यापक जनभागीदारी से जोड़ने में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैज्ञानिक अनुसंधान तथा नवीन तकनीकों का वास्तविक लाभ तभी व्यापक स्तर तक पहुंच सकता है, जब वैज्ञानिक जानकारी किसानों तथा सामान्य जन की भाषा में स्पष्ट व सहज तथा सुगम रूप में उपलब्ध हो। हिंदी इस दिशा में विज्ञान तथा समाज के बीच एक प्रभावी सेतु का कार्य कर रही है।

हमारा दायित्व है कि श्री अन्न से संबंधित वैज्ञानिक ज्ञान, उन्नत कृषि तकनीकों, नई किस्मों, प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन तथा उद्यमिता संबंधी जानकारी को जनसुलभ भाषा में ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंचाएं। हिंदी सहित अन्य भारतीय भाषाओं के प्रभावी उपयोग से अनुसंधान उपलब्धियों को खेत से लेकर बाजार व उपभोक्ता तक पहुंचाने की प्रक्रिया और अधिक सशक्त बनाई जा सकती है।

हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह संकल्प लें कि हम विज्ञान को जनभाषा से जोड़ेंगे तथा जनभाषा की शक्ति से विज्ञान एवं अनुसंधान को जन–जन तक पहुंचाएंगे। इसके अलावा, श्री अन्न के माध्यम से एक ऐसे भविष्य के निर्माण में योगदान देंगे जो पोषण–संपन्न, जलवायु–अनुकूल, किसान–केंद्रित तथा सतत विकास पर आधारित हो।

भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान अपने निरंतर अनुसंधान, नवाचार तथा ज्ञान के प्रसार के माध्यम से देश तथा संपूर्ण विश्व में श्री अन्न की संभावनाओं को साकार करने के लिए प्रतिबद्ध है। इसे सुदृढ़ करने हेतु श्री नरेंद्र मोदी, माननीय प्रधान मंत्री ने इस संस्थान को श्री अन्न वैश्विक उत्कृष्ट शोध केंद्र के रूप में उन्नत किया तथा भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान इस संस्थान में महर्षि (श्री अन्न एवं अन्य प्राचीन अनाज अनुसंधान पहल) का सचिवालय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। इस दिशा में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाएं हमारे वैज्ञानिक ज्ञान को समाज से जोड़ने का सशक्त माध्यम बनेंगी। हम हिंदी को ज्ञान एवं विज्ञान का सशक्त माध्यम बनाने तथा श्री अन्न को स्वस्थ, समृद्ध व सतत भविष्य की आधारशिला के रूप में स्थापित करने हेतु प्रतिबद्ध हैं।

हिंदी का विकास – ज्ञान का विस्तार। श्री अन्न का प्रसार – खाद्य एवं पोषण सुरक्षा का आधार। जय हिंद! जय हिंदी! जय श्री अन्न!

समृद्ध हिंदी, सशक्त समाज – विकसित भारत

डॉ. महेश कुमार
सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा)
भाकृअनुप – भारतीय श्री अन्न अनुसंधान संस्थान

भारत विविध भाषाओं, संस्कृतियों एवं परंपराओं का देश है। हमारी भाषाई विविधता हमारी शक्ति है तथा हिंदी इस विविधता के बीच संवाद, संपर्क व भावनात्मक एकता का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की संस्कृति, संवेदना, ज्ञान–विज्ञान, विचार एवं जन–जन की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण आधार है।

वर्तमान में भारत तीव्र गति से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, डिजिटल संचार, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, शिक्षा, प्रशासन तथा नवाचार के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। ऐसे समय में हिंदी की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। डिजिटल माध्यमों, इंटरनेट, सोशल मीडिया तथा आधुनिक तकनीकी उपकरणों ने हिंदी को वैश्विक स्तर पर नई पहचान एवं व्यापक पहुंच प्रदान की है। आज हिंदी में ज्ञान–विज्ञान, तकनीकी जानकारी, प्रशासनिक सेवाओं तथा जनोपयोगी सूचनाओं की उपलब्धता निरंतर बढ़ रही है।

राजभाषा के रूप में हिंदी का प्रभावी प्रयोग प्रशासन को अधिक सरल, सुगम तथा पारदर्शी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना केवल राजभाषा संबंधी दायित्व का निर्वहन नहीं है, बल्कि सामान्य नागरिकों तक शासन व प्रशासन की पहुंच को सहज बनाने का भी एक प्रभावी माध्यम है।

हिंदी अधिकारी एवं अनुवादक के रूप में हमारा दायित्व केवल दस्तावेजों का अनुवाद करना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना भी है कि हिंदी में प्रस्तुत प्रशासनिक, तकनीकी एवं अन्य सामग्री प्रयोक्ता अनुकूल, स्पष्ट, सटीक व सहज हो। अनुवाद विभिन्न भाषाओं के बीच एक सशक्त सेतु का कार्य करता है तथा ज्ञान एवं सूचनाओं को व्यापक जनसमूह तक पहुंचाने में सहायता करता है।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हिंदी का विकास भारत की अन्य सभी भाषाओं के सम्मान एवं संवर्धन के साथ ही संभव है। अनेकता में एकता की हमारी भावना को मजबूत करते हुए हिंदी को संपर्क, सहयोग तथा संवाद की भाषा के रूप में आगे बढ़ाना हम सभी की सामूहिक दायित्व है।

हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम अपने दैनिक कार्यों तथा व्यवहार में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे, राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन में सक्रिय सहयोग देंगे एवं आधुनिक विज्ञान, तकनीक और डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप हिंदी को और अधिक समृद्ध, सक्षम एवं जनोपयोगी बनाने में अपना योगदान देंगे। हिंदी दिवस के इस गौरवपूर्ण अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। हिंदी का सम्मान, राष्ट्र का सम्मान। हिंदी का विकास, जन–जन का विकास। जय हिंद! जय हिंदी!

हिंदी : हमारी पहचान, हमारी संस्कृति और हमारे संस्कार

हिंदी दिवस केवल हिंदी भाषा के सम्मान का अवसर नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति, अपनी परंपरा और अपने संस्कारों से जुड़ने का पर्व है। हिंदी हमारे देश की करोड़ों भावनाओं की अभिव्यक्ति है। यह वह भाषा है, जिसमें मां की ममता, मिट्टी की खुशबू, रिश्तों की आत्मीयता और भारतीय जीवन की सहजता महसूस होती है।

हिंदी को केवल एक भाषा के रूप में देखना इसके व्यापक स्वरूप को सीमित करना होगा। हिंदी हमारी जीवनशैली और सामाजिक चेतना का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस भाषा ने देश के अलग–अलग क्षेत्रों और विविध समाजों के बीच संवाद और आत्मीयता का सेतु बनाने का कार्य किया है। भारत की सबसे बड़ी खूबसूरती उसकी विविधता में एकता है। यहां अनेक भाषाएं और बोलियां हैं, जिनका अपना गौरव और महत्व है। इन सभी भाषाओं के प्रति सम्मान रखते हुए हिंदी को भी वह सम्मान मिलना चाहिए, जिसकी वह अधिकारी है। हिंदी ने भारतीय साहित्य, पत्रकारिता, सिनेमा, शिक्षा और सामाजिक जीवन को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज दुनिया तेजी से डिजिटल युग की ओर बढ़ रही है। मोबाइल, इंटरनेट और सोशल मीडिया ने संवाद के तौर–तरीकों को बदल दिया है। ऐसे समय में हिंदी के लिए संभावनाओं के नए द्वार खुले हैं। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम हिंदी को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ें और युवा पीढ़ी को हिंदी के प्रयोग के लिए प्रेरित करें। किसी भी राष्ट्र की मजबूती केवल उसकी आर्थिक प्रगति से नहीं, बल्कि उसकी संस्कृति और भाषायी विरासत से भी तय होती है। जो समाज अपनी भाषा और संस्कारों को भूल जाता है, वह धीरे–धीरे अपनी जड़ों से दूर होने लगता है। इसलिए हिंदी को आगे बढ़ाना केवल भाषा का संरक्षण नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और मूल्यों का संरक्षण भी है। नई पीढ़ी को हिंदी से जोड़ना आज की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से एक है। घर में हिंदी का सहज प्रयोग, बच्चों को हिंदी साहित्य पढ़ने के लिए प्रेरित करना और अपनी मातृभाषा में विचार व्यक्त करने का आत्मविश्वास देना छोटे–छोटे कदम हैं, लेकिन इनका प्रभाव बहुत बड़ा हो सकता है।

राम प्रकाश अग्रवाल
संयोजक – राधे राधे ग्रुप
हैदराबाद

हिंदी : राष्ट्र को जोड़ने वाली भाषा

आप सभी हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। हिंदी दिवस के इस विशेष अवसर पर आप सबसे कुछ बातें साझा करना चाहता हूँ। मेरी मातृभाषा तेलुगु है, और मैंने अपनी शिक्षा-दीक्षा भी तेलुगु और अंग्रेज़ी में ही पूरी की। पर जब मैं संगठन में विभिन्न राज्यों के सहकर्मियों के साथ काम करने लगा, तो धीरे-धीरे यह समझ आया कि हिंदी सचमुच हम सबको आपस में जोड़ने वाली एक कड़ी है।

हमारे देश में 22 अनुसूचित भाषाएँ हैं और सैकड़ों बोलियाँ बोली जाती हैं। मैं जब भी उत्तर भारत के अपने कार्यालयों का दौरा करता हूँ, तो पाता हूँ कि वहाँ के साथी चाहे कोई भी भाषा घर में बोलते हों, हिंदी में बात करते ही एक जुड़ाव-सा महसूस होता है। यही अनुभव मुझे बार-बार यह सोचने पर मजबूर करता है कि हिंदी सिर्फ एक भाषा नहीं, बल्कि हमारे संस्थान और हमारे देश की साझा पहचान है। मेरा अपना निजी अनुभव रहा है कि हिंदी मेरी मातृभाषा से अलग है किंतु भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए इन दोनों में कोई अंतर नहीं हैं।

डॉ. एस वी एस नारायण मूर्ति
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेश
मिधानि, हैदराबाद

केंद्र सरकार के कार्यलयों में हिंदी का अपना महत्व है। हमारे संगठन में भी मैंने देखा है कि कार्यालयीन पत्राचार और सूचनाएँ अक्सर हिंदी और अंग्रेज़ी, दोनों में तैयार की जाती हैं, ताकि हर कर्मचारी तक बात सही तरीके से पहुँचे; रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों और सार्वजनिक स्थलों पर हिंदी में लिखी सूचना पट्टिकाएँ लोगों की रोज़मर्रा की मदद करती हैं; सरकारी योजनाओं और नीतियों की जानकारी हिंदी में देने से आम जनता तक उनकी पहुँच बढ़ती है। मैं, तकनीकी क्षेत्र में काम कर रहे हिंदी भाषा के जानकार विद्वानों से निवेदन करना चाहता हूँ कि आप बच्चों के लिए हिंदी में तकनीकी साहित्य का सृजन करें। इससे हमारी नई पीढ़ी को भी प्रेरणा मिलेगी। तकनीकी साहित्य भारत के आम जन तक हिंदी में पहुँचेगा।

एक दक्षिण भारतीय होने के नाते जब मैं हिंदी सीख रहा था, तब यह सिर्फ एक कामकाजी ज़रूरत लगती थी। पर समय के साथ यह मेरे लिए अपने उत्तर भारतीय सहकर्मियों, मित्रों और ग्राहकों से जुड़ने का एक सहज माध्यम बन गई।

हिंदी भाषा से एकता की भावना प्रकट होती है। महात्मा गांधी ने हिंदी को ''जनभाषा'' कहा था, और आज भी यह बात उतनी ही सच लगती है। स्वतंत्रता संग्राम में भी हिंदी ने अलग-अलग प्रांतों के लोगों को एक मंच पर लाने का काम किया था। हिंदी फिल्में और साहित्य भी इस भावना को आगे बढ़ाते रहे हैं ˉ चाहे कोई तेलुगु भाषी हो, तमिल भाषी हो, या बांग्ला भाषी, हिंदी फिल्म देखते समय हम सब एक जैसा ही अनुभव करते हैं।

मैं मानता हूँ कि अपनी मातृभाषा से प्रेम करना बहुत ज़रूरी है, और मुझे अपनी तेलुगु भाषा पर गर्व है। पर साथ ही, हिंदी को अपनाना मुझे अपने देश के बाकी हिस्सों से और करीब से जोड़ता है। मेरा मानना है कि जब हम अपनी मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी को भी सहजता से अपनाते हैं, तभी हम सच में ''विविधता में एकता'' के उस भाव को जी पाते हैं, जिस पर हमारा देश खड़ा है।

आइए, हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम सब यह संकल्प लें कि अपनी-अपनी मातृभाषाओं का सम्मान करते हुए, हिंदी को भी एक-दूसरे से जुड़ने के माध्यम के रूप में अपनाएँगे।

जय हिंद।

हिन्दी महाविद्यालय
HINDI MAHAVIDYALAYA
हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ
INTERMEDIATE
(BOARD OF INTERMEDIATE, TELANGANA)
H.no. 2-1-569, O.U. Road, Nallakunta, Hyderabad - 44
ENGLISH MEDIUM :
COLLEGE CODE : 61390
HINDI MEDIUM :
● M.E.C (Mathematics, Economics, Commerce)
● C.E.C (Commerce, Economics, Civics)
● M.P.C (Mathematics, Physics, Chemistry)
● C.E.C (Commerce, Economics, Civics)
DEGREE & PG COLLEGE
(AUTONOMOUS & NAAC RE – ACCREDITED) (AFFILIATED TO OSMANIA UNIVERSITY)
H.no. 2-1-569, O.U. Road, Nallakunta, Hyderabad - 44
UG ENGLISH MEDIUM :
DOST CODE : 11092
• B.COM (GENERAL) • B.COM (COMPUTER APPLICATIONS)
• B.B.A • B.B.A (BUSINESS ANALYTICS)
• B.SC (ARTIFICIAL INTELLIGENCE AND MACHINE LEARNING, DATA SCIENCE, COMPUTER SCIENCE, STATISTICS, MATHEMATICS, PHYSICS, CHEMISTRY)
• B.SC (BIO TECHNOLOGY, MICRO BIOLOGY, CHEMISTRY, APPLIED NUTRITION & HEALTH CARE)
• B.Voc (HOSPITALITY & TOURISM ADMINISTRATION)
PG ENGLISH MEDIUM :
• M.COM
• M.SC (MATHEMATICS)
• M.SC (APPLIED STATISTICS)
UG & PG HINDI MEDIUM :
• B.COM (GENERAL)
• B.A. (HISTORY, HINDI (ML), POLITICAL SCIENCE)
• M.A. (HINDI)
NCC, NSS & Sports Facilities • Hostel facility for grils Available
M.C. GUPTA COLLEGE OF BUSINESS MANAGEMENT
COLLEGE CODE : 1332
ICET CODE : MCGM
(APPROVED BY AICTE & AFFILIATED TO OSMANIA UNIVERSITY)
H.no. 2-1-569, O.U. Road, Nallakunta, Hyderabad - 44
M.B.A.
ALL THE ABOVE ARE MANAGED BY HINDI MAHAVIDYALAYA SAMITI
For Admission Contact : 040-27616330, 8712608261 & 8712608262

हिंदी का डिजिटल सफर : शब्द-संपदा से तकनीकी विकास तक

हिंदी भाषा सेवियों एवं प्रेमियों को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। हिंदी के प्रचार-प्रसार और विकास के लिए भारत सरकार निरंतर प्रयासरत है। साथियो, जरा सोचिए! जब हम हिंदी में कोई लेख लिखते हैं, किसी कठिन शब्द का अर्थ खोजते हैं या अंग्रेजी सामग्री का हिंदी में अनुवाद करते हैं, तो क्या हर बार शब्दकोश के पन्ने पलटने पड़ते हैं? आज डिजिटल तकनीक ने इस कार्य को सरल बना दिया है। हमारे मोबाइल और कंप्यूटर में उपलब्ध विभिन्न टूल्स एवं एप्स हिंदी के अध्ययन, लेखन, अनुवाद और प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। हिंदी शब्द सिंधु इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, शिक्षा मंत्रालय के संयुक्त प्रयासों से विकसित हिंदी बृहत् शब्दकोश है। इसमें सात लाख से अधिक शब्द संकलित हैं। सामान्य शब्दों के साथ पर्यायवाची, विलोम, मुहावरे तथा विज्ञान-प्रौद्योगिकी के पारिभाषिक शब्द भी इसमें समाहित हैं।

डॉ. बी. बालाजी
प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार) मिधानि
हैदराबाद

अब आप सोचिए, इतना विशाल डिजिटल शब्द-भंडार विद्यार्थियों, लेखकों, अनुवादकों और सरकारी कर्मचारियों के लिए कितना उपयोगी होगा! इसकी विशेषता केवल शब्दों की संख्या नहीं, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों की शब्दावली और भारतीय भाषाओं के बीच शब्द-संपदा का सेतु बनना भी है। हिंदी का विकास केवल नए शब्द गढ़ने से नहीं, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करने और उनके अर्थ समझने से भी होता है। यही भाषायी आदान-प्रदान हमारी एकता को मजबूत करता है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय हिंदी के विकास, प्रचार-प्रसार और मानकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। हिंदी की वर्तनी, शब्दकोश निर्माण, हिंदी शिक्षण तथा भाषा संबंधी सामग्री के विकास में इसके प्रयास उल्लेखनीय हैं। डिजिटल युग में मानक शब्दावली और शुद्ध भाषा का महत्व और बढ़ जाता है। इसी प्रकार, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कंप्यूटर विज्ञान और अन्य विषयों के लिए हिंदी पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण एवं विकास का कार्य करता है। इससे हिंदी ज्ञान-विज्ञान और तकनीक की भाषा के रूप में सशक्त बन रही है।

अब बात करते हैं कंठस्थ की। इसका नाम बदलकर अब भारती-बहुभाषा सारथी कर दिया गया है। इसका उद्देश्य हिंदी और भारत की 15 भाषाओं के बीच सेतु का काम करके क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देना है। सरकारी कार्यालयों में अनुवाद कार्य करने वाले साथी जानते हैं कि एक ही प्रकार के दस्तावेजों का बार-बार अनुवाद करने में समय लगता है। भारती जैसे अनुवाद-सहायक टूल्स पूर्व अनूदित सामग्री के उपयोग में सहायता करते हैं। इससे अनुवाद कार्य में गति और शब्दावली में एकरूपता आती है। इसी प्रकार, लीला हिंदी शिक्षण प्रणाली के माध्यम से हिंदी प्रबोध, प्रवीण और प्राज्ञ जैसे प्रशिक्षण स्तरों पर हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध है। इससे गैर-हिंदी भाषी कर्मचारियों और हिंदी सीखने के इच्छुक लोगों को लाभ मिलता है।

आज सोशल मीडिया, यूट्यूब, ब्लॉग और डिजिटल पत्रिकाएँ हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रभावी माध्यम बन चुके हैं। लेकिन तकनीक तभी सार्थक होगी, जब हम उसका उपयोग करेंगे। हमें हिंदी में मौलिक सामग्री तैयार करनी होगी, डिजिटल शब्दकोशों का लाभ उठाना होगा और नई पीढ़ी को हिंदी के तकनीकी संसाधनों से जोड़ना होगा। हमें यह समझना होगा कि हिंदी का भविष्य केवल उसकी साहित्यिक परंपरा में नहीं, बल्कि उसके वैज्ञानिक, तकनीकी और डिजिटल विकास में भी निहित है। आज हिंदी का प्रचार-प्रसार केवल पुस्तकों और समाचार-पत्रों तक सीमित नहीं है। सोशल मीडिया, यूट्यूब, ब्लॉग, पॉडकास्ट और डिजिटल पत्रिकाओं ने हिंदी को नए पाठकों और दर्शकों तक पहुँचाया है। लेकिन हमें यह भी समझना होगा कि तकनीक केवल एक साधन है। उसका प्रभाव तभी दिखाई देगा, जब हम उसका उपयोग करेंगे। हमें हिंदी में मौलिक सामग्री लिखनी होगी, डिजिटल शब्दकोशों का उपयोग करना होगा, तकनीकी विषयों को हिंदी में समझाने का प्रयास करना होगा और नई पीढ़ी को हिंदी के डिजिटल संसाधनों से जोड़ना होगा।

भारत सरकार के हिंदी शब्द सिंधु, भारती, लीला हिंदी शिक्षण प्रणाली तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय और वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग जैसे संस्थानों के प्रयास हिंदी को आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप सशक्त बना रहे हैं। भारत सरकार के इन प्रयासों को सफल बनाने में हम सभी की भागीदारी आवश्यक है। आइए, हम सब मिलकर हिंदी को ज्ञान, विज्ञान, तकनीक और जनसंचार की प्रभावी भाषा बनाएँ। क्योंकि, हिंदी का विकास तभी सार्थक होगा, जब वह हमारे विचारों की भाषा होने के साथ-साथ हमारे ज्ञान और तकनीकी कार्यों की भाषा भी बनेगी। जय हिंद, जय हिंदी!

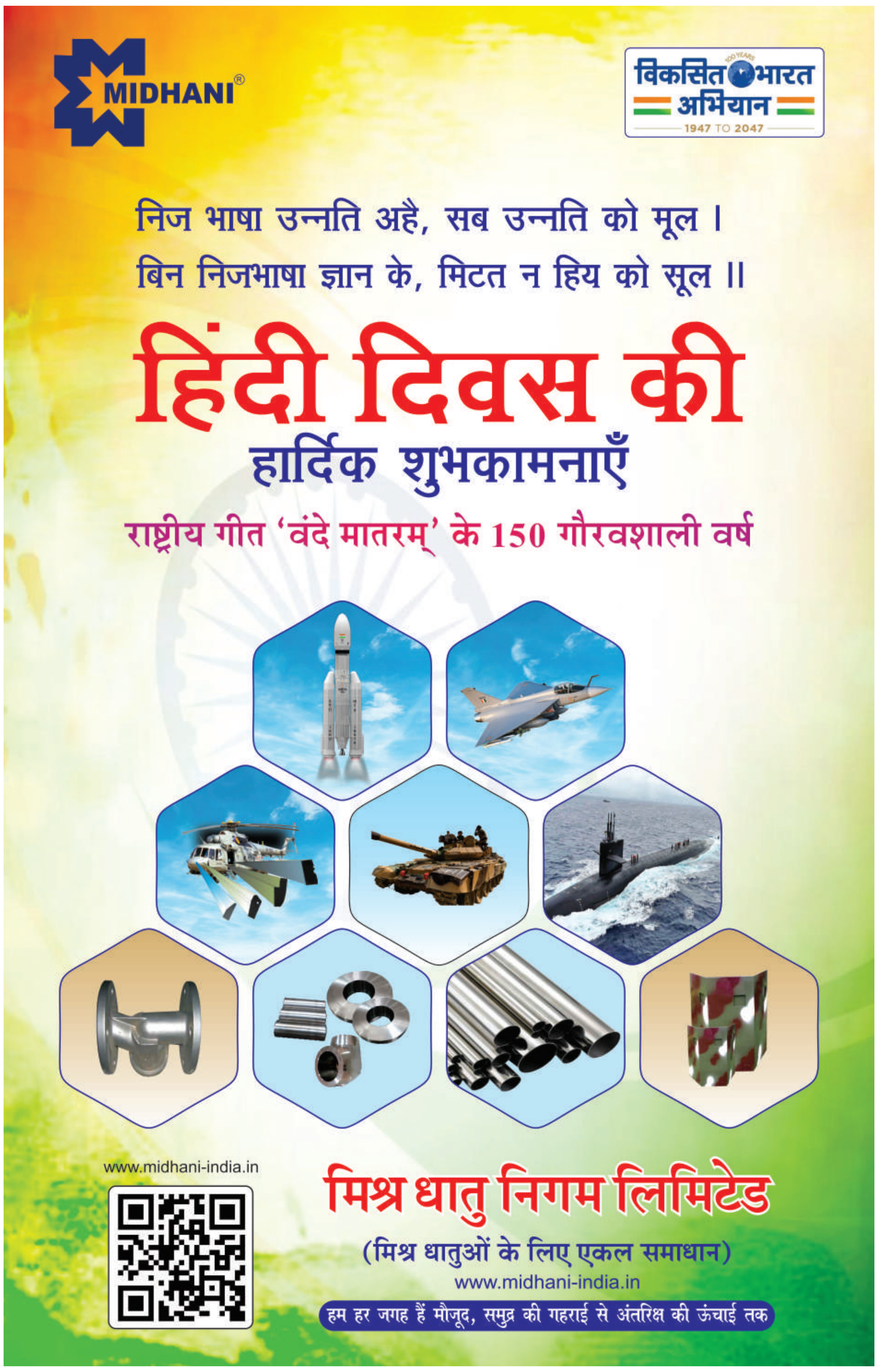

हिंदी हमारी पहचान ही नहीं, हमारी संस्कृति और संस्कारों की आत्मा है

हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की भावनाओं, संस्कारों, संस्कृति और सामाजिक एकता की सशक्त अभिव्यक्ति है।

हिंदी दिवस हमें अपनी मातृभाषा के प्रति सम्मान व्यक्त करने के साथ-साथ यह सोचने का अवसर भी देता है कि हम अपनी भाषा को आने वाली पीढ़ियों तक किस तरह गर्व और सम्मान के साथ पहुंचाएं। भाषा किसी भी समाज की पहचान होती है और अपनी भाषा से जुड़ाव हमें अपनी जड़ों से जोड़कर रखता है। हिंदी की सबसे बड़ी विशेषता इसकी सहजता और आत्मीयता है। यह ऐसी भाषा है, जिसमें रिश्तों की मिठास, अपनों का अपनापन और भावनाओं की गहराई सहज रूप से व्यक्त होती है। देश के अलग-अलग क्षेत्रों, बोलियों और संस्कृतियों के बीच हिंदी ने संवाद और संपर्क की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यही कारण है कि हिंदी आज करोड़ों लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा है।

आज का समय तेजी से बदल रहा है। शिक्षा, व्यापार, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में दूसरी भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है और हमें उनका ज्ञान अवश्य प्राप्त करना चाहिए।

जगतनारायण अग्रवाल
संयोजक – राधे राधे ग्रुप, हैदराबाद

दक्षिण भारत में हिंदी माध्यम का अक्षय वृक्ष : हिंदी महाविद्यालय

डॉ. सुरभि दत्त
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी महाविद्यालय

दक्षिण भारत की भूमि हैदराबाद के हृदय में स्थित हिंदी महाविद्यालय 65 वर्षों का वैभवशाली इतिहास रखता है। इसका सफल वर्तमान और भविष्य उज्ज्वल। संस्था को सर्वप्रथम 2006 में 'राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन समिति' से मान्यता प्राप्त हुई । 2023 में राष्ट्रीय पुनर्मूल्यांकन का चौथा चरण पूरा कर लिया है। 2012 से स्वायत्तता का दर्जा प्राप्त कर शिक्षा का यह अक्षय वृक्ष विद्यार्थियों का चतुर्दिक विकास कर रहा है। अविराम गतिविधियों द्वारा प्रगति पथ पर अग्रसर है। हीरक जयंती भी पूर्ण कर चुका है।

जून 1961 में हिन्दी माध्यम से उच्च एवं उच्चतम शिक्षा उपलब्ध कराने के लक्ष्य के साथ स्थापित अखिल दक्षिण भारत का प्रथम एवं एकमात्र केंद्र है।यह संस्था श्री विनायक राव विद्यालंकार, राजा पन्नालाल पित्ती, आचार्य कृष्ण दत्त खांडेराव कुलकर्णी, पं. गंगाराम जैसे शिक्षाविद् हिन्दी सेवियों और समाज सेवियों की तपोभूमि है।

त्याग-तप का यह केंद्र कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकायों के गठन द्वारा इंटर एवं स्नातक स्तर पर हिन्दी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के लक्ष्य के साथ छात्रों के सपनों को साकार कर रहा है। स्नातकोत्तर स्तर पर सर्वप्रथम हिंदी से एम.ए प्रारंभ हुआ। दक्षिण की भूमि पर हिंदी माध्यम से शिक्षा प्रदान कर इतिहास रचा है। महाविद्यालय की प्रवेश संख्या वर्तमान में 800 है।

स्व. चेयरमैन एमिरेट्स सुरेंद्र लूणिया जी का भवन विस्तारिकरण और प्रबंधन में योगदान उल्लेखनीय है। वर्तमान प्रबंध समिति के नेतृत्व में ज्ञान ज्योति से निरंतर प्रज्वलित हो रहा है। संस्था अध्यक्ष सी.ए लक्ष्मीनिवास शर्मा, उपाध्यक्ष श्याम सुंदर मूंदड़ा, कार्यदर्शी सुशील जैन, संयुक्त कार्यदर्शी प्रदीप कुमार दत्त, कोशाध्यक्ष सी.ए एस.बी काबरा एवं समिति के सक्रिय सदस्यों के दिशा-निर्देश में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। समिति द्वारा तकनीकी ज्ञान से संबंधित एवं कौशल विकास से जुड़े पाठ्यक्रमों को सम्मिलित कर रोजगार की संभावनाओं को बढ़ाया गया है। निरंतर गतिमान शिक्षा के साथ कदम मिलाते हुए आर्टिफिशल इंटेलिजेंस एंड मेकेनिकल लर्निंग(ए.आई ए. एम.एल) तथा डाटा साइंस तथा डाटा एनालिसिस को जोड़ा गया है। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को संपूर्ण ज्ञान उपलब्ध कराना लक्ष्य है। कम्प्यूटर लैब में 350 से अधिक कम्प्यूटर सिस्टम हैं। जिनका लाभ छात्र एवं शिक्षक समान रूप से उठा रहे हैं।

प्रचार्य डॉ. बाला कुमार के नेतृत्व में महाविद्यालय के छात्रों के लिए नई योजनाएँ बनाई गई है। इसी वर्ष से अंग्रेजी माध्यम से इंटर की कक्षाएँ प्रंभ हुई हैं। प्रत्येक विभाग द्वारा निर्धारित अवधि में अनुभवी और विशेषज्ञ व्याख्याताओंका आमंत्रित कर व्याख्यानों का और राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। भारतय ज्ञान परंपरा पर 2026 में राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफल आयोजन किया गया। महाविद्यालय छात्रों को जागरूक नागरिक बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय पर्व, हिंदी दिवस, संस्कृत दिवस, मतदाता एवं संविधान दिवस, योग दिवस , पर्यावरण दिवस, तेलंगाना स्थापना दिवस सहित सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

महाविद्यालय विभिन्न भाषा-भाषी छात्रों और प्राध्यापकों की संगम स्थली के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। पिछले 6 दशकों से नई शिक्षा नीति के लक्ष्य 'सबके लिए शिक्षा' को लेकर चल रहा है। भारत के विभिन्न राज्यों से स्थानांतरण पर आए परिवारों के, केंद्रीय विद्यालयों में पढ़ाई पूरी करके आए विद्यार्थियों को शिक्षा के उच्च एवं उच्चतम अवसर दे रहा है।

सर्व शिक्षा अभियान पर चलते हुए आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को हर संभव सहायता दी जाती है। राष्ट्र के प्रति सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों का निर्वाह करते हुए आवश्यक सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है। छात्र छात्राओं के लिए हास्टल की व्यवस्था है। परिसर में स्वास्थ्य केंद्र है।प्रतिवर्ष स्वास्थ्य कैंप लगाए जाते है। समिति के तत्वावधान में पन्नालाल पित्ती ट्रस्ट के द्वारा तथा राज्य सरकार की ओर से छात्रों को स्कॉलरशिप दी जाती है।

महाविद्यालय के छात्र राज्य, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रशासनिक संस्थाओं में हिन्दी अधिकारी एवं अन्य उच्च पदों को सुशोभित कर रहे हैं। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में शिक्षक हैं। लगभग 10 छात्र अंग्रेजी माध्यम के कॉलेजों में प्राचार्य पद पर हैं। कई छात्र राज्य व केंद्र की विज्ञान प्रयोगशालाओं में कार्यरत हैं। महाविद्यालय के लिए सर्वाधिक गौरव की बात है कि यहाँ के प्रतिभावान छात्र वैज्ञानिक हैं। अंतरिक्ष एजेंसी नासा में भी कार्यरत है। छात्रों ने सिद्ध कर दिया है कि हिन्दी से प्राप्त शिक्षा उनकी सफलता के मार्ग में सहायक ही सिद्ध हुई है।

हिंदी महाविद्यालय शिक्षा और संस्कृति को जोड़ कर रख रहा है। शिक्षक दिवस पर सेवानिवृत्त शिक्षकों को, उच्च पदों पर आसीन पूर्व छात्रों को सम्मानित किया जाता है। महाविद्यालय राष्ट्रीय एवं साहित्यिक गतिविधियों का भी प्रमुख केंद्र है। भारत के महान शिक्षाविद्, भारत के महामहिम राष्ट्रपति, महामहिम राज्यपाल एवं मुख्यमंत्रियों के आगमन ने इसके गौरव को बढ़ाया है। प्रबुद्ध चिंतक, मूर्धन्य साहित्यकार, कला जगत के कलाकार, समाज सेवी तथा राष्ट्र के गणमान्य कर्णधारों के ओजस्वी उद्बोधनों ने इसके प्रांगण को गुंजित किया है।

प्रगति के सोपान तय करते हुए अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। 2007-8 में बी.एससी तथा 2012 में बी. बी. ए पाठ्यक्रम प्रारंभ हुए। 2012-13 उपलब्धियों की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। हिंदी स्नातकोत्तर विभाग स्वायत्तता की परिधि में आ गया। आज महाविद्यालय सेल्फ फाइनेंस शिक्षण संस्था के रूप में शिक्षा का विस्तारीकरण करते हुए छात्रों के लिए अपनी रुचि अनुसार विषय चयन का अवसर दे रहा है।

उस्मानिया विश्वविद्यालय से संबद्ध रहते हुए नवीन पाठ्यक्रमों की रचना और संचालन में स्वतंत्र है।

इसी उद्देश्य से स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर अंग्रेजी माध्यम के विज्ञान और वाणिज्य विषयों का नवीनीकरण किया गया है। स्नातक स्तर पर बैंकिंग एंड इन्श्योरेन्स, टूरिज्म एडमिनिस्ट्रेशन पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए। 2016-17 से बीकॉम-कंप्यूटर एप्लीकेशन, बीबीए, बीएससी-एमपीसी, बीएससी-मैथेमेटिक्स, फिजिक्स, केमेस्ट्री, मैथेमेटिक्स, स्टेटिस्टिक्स, केमेस्ट्री, बायो/बी-केमेस्ट्री/माइक्रो-बायोलॉजी, बायो-टेक/माइक्रो-बायो/केमेस्ट्री, बायो-केमेस्ट्री/माइक्रो-बायो केमेस्ट्री तथा स्नातकोत्तर स्तर पर एमकाम (फाइनांस), एमएससी (मैथेमेटिक्स), (एप्लाइड स्टेटिस्टिक्स) चलाए जा रहे हैं। इन सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश संख्या बढ़ी है। विज्ञान विषयों की प्रयोगशालाएं आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित हैं। एमसी गुप्ता कालेज आफ मैनेजमेंट (एम.बी.ए) के छात्रों को प्लेसमेंट एजेंसी के द्वारा विभिन्न संस्थानों के लिए चुना जाता है।

यहाँ का पुस्तकालय इस संस्था की धुरी है और नगरद्वय के शोधार्थियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह लगभग 45,000 पुस्तकों से समृद्ध है। इसके अतिरिक्त विद्यालय एवं विद्यालयेत्तर अध्येताओं के लिए पृथक रूप से अध्ययन कक्ष की व्यवस्था है।

डायमंड जुबली ब्लॉग स्टेडियम के ऊपरी भाग में वाणिज्य विभाग है। 33 कक्षाएं और एक प्राध्यापक कक्ष है। इस भाग में वाणिज्य, प्रबंधन एवं स्किल डेवलपमेंट की कक्षाएं सुचारू रूप से चल रही हैं।

छात्रों के चतुर्मुखी विकास को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1994 में एनसीसी इकाई का गठन किया गया। इस इकाई में संप्रति छात्र व छात्राओं को मिलाकर 141 कैडेट्स प्रशिक्षणाधीन हैं। महाविद्यालय के लिए गौरव की बात है कि एनसीसी यूनिट से छात्र भारतीय सेना के विभिन्न विभागों के लिए चुने गए। पुलिस विभाग में छात्रों का चयन हुआ है। एनएसएस यूनिट का 217 में नवीनीकरण किया गया, जिसमें 100 छात्रों ने राष्ट्र स्वयं सेवक के रूप में प्रवेश लिया। इसका उद्देश्य छात्रों में सामाजिक दायित्व, अनुशासन और सेवा भावना को निर्मित करना है।

महाविद्यालय की क्रिकेट कोचिंग अकादमी व ओपन स्टेडियम नगरद्वय में लोकप्रिय है। अकादमी में प्रशिक्षित विद्यार्थी क्रिकेट जगत में कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।फिजिकली चैलेंज्ड खिलाड़ियों को निशुल्क प्रशिक्षण दिया जाता है। अकादमी के खिलाड़ी तलवार बाजी, कुश्ती, वालीबॉल, रेसलिंग, रणजी ट्राफी इत्यादि में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। स्वर्ण,रजत और कांस्य पदक अर्जित किए हैं।

दक्षिण भारत का यह विलक्षण 'हिंदी महाविद्यालय' हिंदी माध्यम से शिक्षा प्रदान करने का लक्ष्य रखकर आधुनिक शिक्षा प्रणाली के साथ चलते हुए उच्च शिक्षा की अभिलाषा पूर्ण करने वाली संजीवनी बन कर चमक रहा है।

है हिंदी यूँ हीन

बोल-तोल बदले सभी, बदली सबकी चाल।
परभाषा से देश का, हाल हुआ बेहाल।।

जल में रहकर ज्यों सदा, रहती प्यासी मीन।
होकर भाषा राज की, है हिंदी यूँ हीन।।

हिंदी मेरे देश की, पहली गूढ़ जुबान।
फ़र्ज़ सभी का है यही, इसका हो उत्थान।।

अपनी भाषा साधना, गूढ़ ज्ञान का सार।
खुद की भाषा से बने, निराकार साकार।।

हो जाते हैं हल सभी, यक्ष-प्रश्न तब मीत।
निज भाषा से जब जुड़ें, जागे अंतर-प्रीत।।

अपनी भाषा से करें, अपने ही आघात।
हिंदी के उत्थान की, अंग्रेज़ी में बात।।

हिंदी माँ का रूप है, ममता की पहचान।
हिंदी ने पैदा किए, तुलसी और रसखान।।

मन से चाहें हम अगर, भारत का उत्थान।
परभाषा को त्यागकर, बाँटें हिंदी ज्ञान।।

भाषा के बिन देश का, होता कब उत्थान।
बात पते की जो कहे, समझे वही सुजान।।

जिनकी भाषा है नहीं, उनका रुके विकास।
करती भाषा गैर की, हाथों-हाथ विनाश।।

-डॉ. सत्यवान सौरभ
(पीएचडी (राजनीति विज्ञान),
एक कवि और सामाजिक विचारक।)

हिन्दी : हमारी अस्मिता, संस्कृति और भविष्य का संबल

भाषा केवल भावों को व्यक्त करने का माध्यम मात्र नहीं होती, बल्कि वह किसी जाति, समाज और राष्ट्र की आत्मा होती है। हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि भारत की सामासिक संस्कृति, उसकी धड़कन और उसकी पहचान का सबसे सशक्त प्रतीक है। जब हम 'हिन्दी दिवस' के अवसर पर इस भाषा की चर्चा करते हैं, तो यह केवल औपचारिकता नहीं होनी चाहिए, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़ने और आत्ममंथन करने का एक सुअवसर होना चाहिए।

इतिहास और राष्ट्र निर्माण में योगदान

आधुनिक हिन्दी का यह सफर सदियों के विकास से होकर गुजरा है। अपभ्रंश और प्राकृत के पड़ावों को पार करती हुई यह भाषा जन-जन के संपर्क की भाषा बनी। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, जब देश विभिन्न रियासतों, भाषाओं और बोलियों में विभाजित था, तब हिन्दी ने ही 'राष्ट्रभाषा' के रूप में पूरे देश को एक सूत्र में पिरोने का ऐतिहासिक कार्य किया। महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक और स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे महापुरुषों ने यह पहचाना था कि स्वराज्य का मार्ग स्वदेशी और अपनी भाषा के बिना प्रशस्त नहीं हो सकता। हिन्दी ने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता की अलख जगाने में जनमानस को जोड़ने का जो कार्य किया, वह अविस्मरणीय है।

डिजिटल युग और वैश्विक पटल पर हिन्दी

आज वैश्वीकरण और डिजिटल क्रांति के इस दौर में हिन्दी ने अपनी प्रासंगिकता को न केवल बनाए रखा है, बल्कि नए आयाम भी गढ़े हैं। आज इंटरनेट पर सामग्री उपभोग करने वालों में अंग्रेजी के बाद सबसे बड़ा वर्ग हिन्दी भाषियों का है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और तमाम वैश्विक टेक कंपनियां अब अपनी सेवाओं में हिन्दी को प्राथमिकता दे रही हैं। विदेशों के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई और सिखाई जा रही है। यह इस बात का प्रमाण है कि भाषाएं संवाद और रोजगार के साथ समय के अनुसार खुद को ढालने में सक्षम हैं।

वर्तमान चुनौतियां और हमारा दायित्व

भले ही हिन्दी का दायरा बढ़ा हो, लेकिन आज यह अपनी ही भूमि पर कुछ चुनौतियों से जूझ रही है। आधुनिकता की अंधी दौड़ में अंग्रेजी को प्रतिष्ठा और हिन्दी को हीनता का प्रतीक मान लिया गया है। दफ्तरों, अदालतों और उच्च शिक्षा के संस्थानों में आज भी हिन्दी को उसका वास्तविक स्थान मिलने की प्रतीक्षा है। यदि हम अपनी भाषा को केवल घरों तक सीमित रखेंगे और व्यावसायिक व तकनीकी शिक्षा से दूर कर देंगे, तो वह बौद्धिक भाषा के रूप में पिछड़ जाएगी।

आवश्यकता इस बात की है कि हम भाषा को लेकर हीनभावना से बाहर निकलें। इसका यह अर्थ कतई नहीं है कि हम अन्य भाषाओं का सम्मान न करें; बहुभाषावाद हमारी खूबी है, लेकिन अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा की कीमत पर नहीं। प्राथमिक शिक्षा हिन्दी या मातृभाषा में हो, दफ्तरों का कामकाज सहज हिन्दी में चले और विज्ञान-तकनीक के क्षेत्र में हिन्दी में मौलिक साहित्य रचा जाए।

हिन्दी दिवस तभी सार्थक होगा जब हम केवल मंचों से भाषण देने के बजाय अपने दैनिक जीवन में हिन्दी के प्रयोग को गर्व का विषय बनाएं। आइए, इस हिन्दी दिवस पर यह संकल्प लें कि हम अपनी संस्कृति की इस अमूल्य थाती को संवारेंगे और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे और अधिक समृद्ध बनाएंगे।

-राजकुमार टंडन

न्यायपालिका, विज्ञान तकनीक और हिंदी : चुनौतियाँ, संभावनाएँ और भविष्य

ज्ञान-आधारित भारत की भाषा-दृष्टि

कोई भी भाषा तभी सशक्त बनती है, जब वह न्याय, ज्ञान, विज्ञान और तकनीक की भाषा भी बन जाए।

भारत की भाषाई परंपरा अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी रही है। हिंदी ने साहित्य, पत्रकारिता, जनसंचार और सामाजिक जीवन में अपनी व्यापक पहचान स्थापित की है, किंतु इक्कीसवीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हिंदी का विस्तार केवल साहित्य तक सीमित न रहे, बल्कि वह न्यायपालिका, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा, उच्च शिक्षा और अनुसंधान जैसे ज्ञान-प्रधान क्षेत्रों में भी समान रूप से सक्षम भाषा बने।विकसित भारत की परिकल्पना केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है। इसके लिए ऐसी ज्ञान-व्यवस्था आवश्यक है, जिसमें प्रत्येक नागरिक अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त कर सके, वैज्ञानिक जानकारी समझ सके, न्याय तक सहज पहुँच बना सके और आधुनिक तकनीक का आत्मविश्वास के साथ उपयोग कर सके। इस दृष्टि से हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

न्यायपालिका और भाषा का प्रश्न

न्याय केवल निष्पक्ष होना ही पर्याप्त नहीं है; उसका नागरिकों के लिए समझ में आना भी उतना ही आवश्यक है। यदि न्यायालयों की भाषा सामान्य व्यक्ति की समझ से बाहर होगी, तो न्याय और नागरिक के बीच एक अनावश्यक दूरी बनी रहेगी।

न्यायिक कार्यवाही में विधिक शुद्धता सर्वोपरि होती है, इसलिए भाषा का प्रयोग अत्यंत सावधानी से किया जाता है। हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में विधिक शब्दावली, निर्णयों के अनुवाद और न्यायिक प्रक्रियाओं को अधिक सुलभ बनाने की दिशा में निरंतर प्रयास हो रहे हैं। आवश्यकता इस बात की है कि भाषा की सरलता और विधिक सटीकता के बीच संतुलन बनाए रखा जाए।

विज्ञान और तकनीक में हिंदी की भूमिका

लंबे समय तक यह धारणा बनी रही कि विज्ञान और तकनीक का अध्ययन केवल अंग्रेज़ी के माध्यम से ही प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। परंतु आज यह स्पष्ट हो चुका है कि ज्ञान का संबंध भाषा से नहीं, बल्कि उसकी प्रस्तुति और समझ से है।

यदि उच्च गुणवत्ता की पाठ्य-पुस्तकें, वैज्ञानिक सामग्री, शोध-साहित्य और तकनीकी संसाधन हिंदी में उपलब्ध हों, तो लाखों विद्यार्थियों के लिए ज्ञान अर्जित करना अधिक

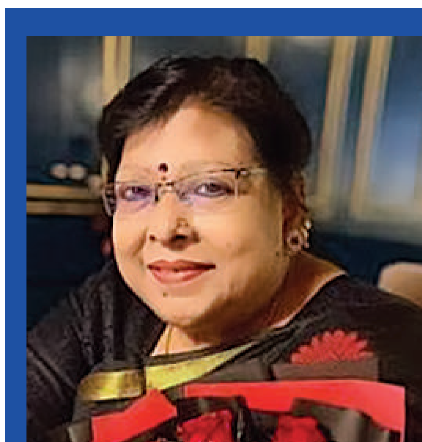

-डॉ कुमुद बाला
रिटायर्ड प्राध्यापिका

सहज हो सकता है। नई शिक्षा व्यवस्था ने भी भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन-सामग्री विकसित करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

हिंदी के समक्ष आज सबसे बड़ी चुनौती किसी दूसरी भाषा से प्रतिस्पर्धा की नहीं, बल्कि स्वयं को निरंतर अद्यतन बनाए रखने की है। विज्ञान, चिकित्सा, विधि, प्रबंधन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा और अंतरिक्ष विज्ञान जैसे क्षेत्रों में प्रतिदिन नई अवधारणाएँ विकसित हो रही हैं। इनके अनुरूप हिंदी की शब्दावली, अध्ययन-सामग्री और तकनीकी अभिव्यक्ति का भी निरंतर विकास आवश्यक है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती गुणवत्तापूर्ण संदर्भ-सामग्री की उपलब्धता है। उच्च शिक्षा और शोध के अनेक क्षेत्रों में आज भी हिंदी में पर्याप्त और अद्यतन सामग्री का अभाव अनुभव किया जाता है। यह स्थिति केवल अनुवाद से नहीं बदलेगी; इसके लिए मौलिक लेखन, शोध और वैज्ञानिक चिंतन को भारतीय भाषाओं में भी प्रोत्साहित करना होगा।

तकनीक ने इन चुनौतियों को अवसरों में बदलने का मार्ग भी खोला है। डिजिटल पुस्तकालय, ई-पुस्तकें, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, शोध-पोर्टल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषा उपकरण और मुक्त ज्ञान-संसाधन अब हिंदी में भी उपलब्ध होने लगे हैं। यदि इनका योजनाबद्ध विस्तार किया जाए, तो ज्ञान तक पहुँच अधिक व्यापक और लोकतांत्रिक बन सकती है।

हिंदी और विकसित भारत की परिकल्पना

विकसित भारत का निर्माण केवल आर्थिक उन्नति से नहीं, बल्कि ज्ञान, नवाचार और समान अवसरों से होगा। जब कोई विद्यार्थी अपनी भाषा में विज्ञान समझ सके, कोई नागरिक अपने अधिकारों को सहजता से जान सके, कोई शोधार्थी हिंदी में गुणवत्तापूर्ण शोध कर सके और कोई उद्यमी तकनीकी जानकारी अपनी भाषा में प्राप्त कर सके, तभी विकास वास्तव में समावेशी होगा।

हिंदी का विकास अन्य भारतीय भाषाओं के साथ मिलकर होना चाहिए। भारत की भाषाई विविधता हमारी शक्ति है। राजभाषा हिंदी की उन्नति तभी सार्थक होगी, जब वह भारतीय भाषाओं के बीच सहयोग, ज्ञान-विनिमय और राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करेगी।

भाषा का भविष्य : नवाचार और समन्वय

भविष्य की भाषा वही होगी जो परिवर्तन को स्वीकार करेगी। हिंदी को भी पारंपरिक साहित्यिक गौरव के साथ-साथ डिजिटल प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैज्ञानिक अनुसंधान और वैश्विक संवाद के अनुरूप स्वयं को विकसित करना होगा।

आज आवश्यकता ऐसी हिंदी की है जो प्रयोगधर्मी हो, ज्ञानसमृद्ध हो, तकनीक-अनुकूल हो और विश्वस्तरीय संवाद की क्षमता रखती हो। यही हिंदी आने वाले भारत की आकांक्षाओं की भाषा बन सकती है।

भविष्य की दिशा : ज्ञान, तकनीक और भाषा का समन्वय

आज भारत ऐसे परिवर्तनकारी दौर से गुजर रहा है, जहाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, नवाचार और वैश्विक संपर्क विकास की नई दिशा निर्धारित कर रहे हैं। इस परिवेश में हिंदी की भूमिका केवल संपर्क भाषा या राजभाषा तक सीमित नहीं रह सकती। उसे ज्ञान-सृजन, शोध, तकनीकी संवाद और जनसेवा की सक्षम भाषा के रूप में भी विकसित होना होगा।

इसके लिए आवश्यक है कि हिंदी में उच्चस्तरीय मौलिक लेखन को प्रोत्साहन मिले, वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का निरंतर सृजन हो, विधिक और प्रशासनिक शब्दावली समयानुकूल परिष्कृत होती रहे तथा डिजिटल मंचों पर हिंदी की उपयोगिता और विश्वसनीयता को सुदृढ़ किया जाए। भाषा तभी जीवंत रहती है जब वह समय के साथ स्वयं को विकसित करती है।

यह भी स्मरणीय है कि हिंदी का विकास भारत की अन्य भाषाओं के सहयोग और सम्मान के साथ ही संभव है। भारत की भाषाई विविधता हमारी सांस्कृतिक शक्ति है। इसलिए हिंदी का भविष्य प्रतिस्पर्धा में नहीं, बल्कि समन्वय, सह-अस्तित्व और ज्ञान-साझेदारी में निहित है।

निष्कर्ष

राजभाषा हिंदी की यात्रा स्वतंत्र भारत के संविधान से प्रारंभ होकर आज डिजिटल प्रशासन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, विज्ञान, न्यायपालिका और वैश्विक संवाद तक पहुँच चुकी है। यह यात्रा अभी पूर्ण नहीं हुई है; बल्कि प्रत्येक पीढ़ी को इसे अपने समय की आवश्यकताओं के अनुरूप आगे बढ़ाना है।

राजभाषा का वास्तविक उद्देश्य केवल सरकारी कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना नहीं, बल्कि शासन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी और नागरिक-केंद्रित बनाना है। उसी प्रकार ज्ञान-विज्ञान में हिंदी का उद्देश्य किसी भाषा का स्थान लेना नहीं, बल्कि अधिकाधिक लोगों तक ज्ञान की पहुँच सुनिश्चित करना है।

आज आवश्यकता ऐसी हिंदी की है जो सरल हो परंतु गंभीर भी, आधुनिक हो परंतु अपनी जड़ों से जुड़ी भी, तकनीक-अनुकूल हो परंतु मानवीय संवेदनाओं से संपन्न भी। यही संतुलन हिंदी को भविष्य की प्रभावी ज्ञान-भाषा बनाएगा।

जब भाषा ज्ञान से जुड़ती है, तो समाज प्रगतिशील बनता है; जब भाषा न्याय से जुड़ती है, तो लोकतंत्र सशक्त होता है; और जब भाषा तकनीक से जुड़ती है, तो विकास सर्वसुलभ बन जाता है।

राजभाषा हिंदी का भविष्य किसी एक नीति, एक कार्यालय या एक दिवस पर निर्भर नहीं है। उसका भविष्य उन करोड़ों भारतीयों के विश्वास, प्रयोग और सृजनशीलता में निहित है, जो प्रतिदिन हिंदी को जीवन, ज्ञान, प्रशासन और विकास की भाषा बना रहे हैं।

आइए, हिंदी दिवस को केवल एक औपचारिक आयोजन न मानकर हिंदी को व्यवहार, विज्ञान, प्रशासन, तकनीक और जनसेवा की सशक्त भाषा बनाने का संकल्प लें।

यही राजभाषा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि और राष्ट्रनिर्माण में हमारा सार्थक योगदान होगा।

संपादकीय

नस्लभेदी अमेरिका

यूं तो ट्रंप प्रशासन भारतीयों को नस्लीय आधार पर निशाना बनाने का मौका कभी नहीं छोड़ता, लेकिन हाल ही में अमेरिकी डिपार्टमेंट ऑफ होमलैंड सिक्योरिटी यानी डीएचएस द्वारा जारी एक विवादित विज्ञापन ने उसकी संकीर्ण सोच को ही उजागर किया है। हालांकि, अमेरिका के हिंदू,सिख संगठनों और डेमोक्रेट नेताओं द्वारा पुरजोर विरोध करने के बाद सोशल मीडिया पर पोस्ट किया गया वह विज्ञापन हटा लिया गया, जिसमें 'मिस्टर सिंह' को निशाना बनाया गया था। निश्चित रूप से इस अप्रिय घटना को सिर्फ एक पोस्ट हटाने के बावजूद नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। दूसरे अर्थों में यह अमेरिका में भारतीयों को लगातार निशाना बनाने की लगातार की जा रही कोशिशों का ही हिस्सा भर है। दरअसल, अमेरिका में बिना लाइसेंस वाले कमर्शियल ड्राइवरों के खिलाफ चलाये जा रहे अभियान के तहत जारी इस विज्ञापन में एआई के जरिये बनाई गई, एक दाढ़ी वाले गेहुंआ रंग के व्यक्ति की तस्वीर का इस्तेमाल किया गया था। इसके साथ अभद्र भाषा के साथ चेतावनी वाला संदेश भी लिखा गया था- 'हमारी सड़कों से हट जाओ, तुम्हें गाड़ी चलाना नहीं आता, मिस्टर सिंह।' उसके बाद धमकी दी गई थी, 'खुद देश छोड़कर चले जाओ या अंजाम भुगतो।' दशकों से पूरी दुनिया की सरकारों को मानवता, धर्मनिरपेक्षता, मौलिक अधिकार, समरसता जैसे भारी-भरकम शब्दों के जरिये अस्थिर करने के प्रयासों में लगा अमेरिका अपनी इस कवायद से बेनकाब होता नजर आया है। स्वाभाविक रूप से इस विज्ञापन के सामने आने के बाद भारतीय-अमेरिकियों और सिख संगठनों के साथ-साथ डेमोक्रेट नेताओं ने भी इस पोस्ट को नस्लवादी और भेदभावपूर्ण बताकर घोर निंदा की है। इसमें दो राय नहीं कि आप्रवासन कानून को लागू करने या खतरनाक तरीके से गाड़ी चलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने में कुछ भी गलत नहीं है। असल में, जब लापरवाही या आपराधिक व्यवहार के कारण मौतें होती हैं, तो सरकारों का यह भी कर्तव्य होता है कि वह कार्रवाई करें। लेकिन कानून का पालन व्यक्ति के व्यवहार के आधार पर होना चाहिए न कि उसकी जाति, रूप-रंग, धर्म या उपनाम के आधार पर किया जाए। इसमें दो राय नहीं है कि भारतीय व अन्य प्रवासियों ने अपने खून-पसीने से अमेरिका की समृद्धि को सींचा है। उनकी समृद्धि अथक प्रयासों व कड़ी मेहनत का फल है जो आज गोरे अमेरिकनों को रास नहीं आता। अब तक भारतवंशियों का विरोध अमेरिका में गुपचुप ढंग से होता था, ट्रंप के शासनकाल में वह खुलकर सामने आने लगा है। अमेरिका की एक जिम्मेदार फेडरल एजेंसी डीएचएस जब इस तरह का कृत्य करती है तो यह शर्मनाक ही कहा जाएगा। उसके विज्ञापन में भारत में आदर से लिये जाने वाले 'सिंह' उपनाम का दुर्भावना से प्रयोग किया जाना विशेषकर चिंता की बात है। यह उपनाम सिखों में आम है और कुछ हिंदू भी इसका प्रयोग करते हैं। इस शब्द को गैर-कानूनी आप्रवासन या खतरनाक ड्राइविंग से जोड़ने से एक आम सांस्कृतिक पहचान को एक मजाक में बदले जाने का खतरा पैदा होता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि सिख समुदाय को 9/11 के हमलों के बाद लगातार नफ़रत प्रेरित अपराधों का सामना करना पड़ा था। उनकी पहचान को अज्ञानतावश हमलावरों से जोड़ कर देखा जा रहा था। इस समुदाय के लिये यह दंश झेलना बेहद कष्टकारी रहा है। डीएचएस यह दलील दे सकता है कि इस अभियान का मकसद गंभीर अपराधों के आरोपी विदेशी नागरिकों से जुड़े कुछ खास मामलों को उजागर करना था। यदि ऐसा है तो इन मामलों की जांच होनी चाहिए। साथ ही जहां जरूरी हो, वहां कानूनी कार्रवाई भी करनी चाहिए। लेकिन किसी व्यक्ति विशेष की गलत हरकत को पूरे समुदाय पर शक करने की वजह नहीं बनाया जा सकता। निस्संदेह, सरकारों को लोगों की सुरक्षा को बढ़ावा देना चाहिए और कानूनी तौर पर होने वाले आव्रजन में मदद करनी चाहिए- न कि पूरे समुदाय का मजाक उड़ाकर बदनाम करना चाहिए। अमेरिका को चाहिए कि वह अपने कानूनों को निष्पक्ष रूप से लागू करे। सभी नागरिकों पर एक ही नियम-कानून लागू होने चाहिए। अब चाहे उनका सरनेम, धर्म, त्वचा का रंग या मूल नागरिकता किसी भी देश की हो।

दशकों से पूरी दुनिया की सरकारों को मानवता, धर्मनिरपेक्षता, मौलिक अधिकार, समरसता जैसे भारी-भरकम शब्दों के जरिये अस्थिर करने के प्रयासों में लगा अमेरिका अपनी इस कवायद से बेनकाब होता नजर आया है। स्वाभाविक रूप से इस विज्ञापन के सामने आने के बाद भारतीय-अमेरिकियों और सिख संगठनों के साथ-साथ डेमोक्रेट नेताओं ने भी इस पोस्ट को नस्लवादी और भेदभावपूर्ण बताकर घोर निंदा की है। इसमें दो राय नहीं कि आप्रवासन कानून को लागू करने या खतरनाक तरीके से गाड़ी चलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई करने में कुछ भी गलत नहीं है। असल में, जब लापरवाही या आपराधिक व्यवहार के कारण मौतें होती हैं, तो सरकारों का यह भी कर्तव्य होता है कि वह कार्रवाई करें। लेकिन कानून का पालन व्यक्ति के व्यवहार के आधार पर होना चाहिए न कि उसकी जाति, रूप-रंग, धर्म या उपनाम के आधार पर किया जाए। इसमें दो राय नहीं है कि भारतीय व अन्य प्रवासियों ने अपने खून-पसीने से अमेरिका की समृद्धि को सींचा है। उनकी समृद्धि अथक प्रयासों व कड़ी मेहनत का फल है जो आज गोरे अमेरिकनों को रास नहीं आता। अब तक भारतवंशियों का विरोध अमेरिका में गुपचुप ढंग से होता था, ट्रंप के शासनकाल में वह खुलकर सामने आने लगा है। अमेरिका की एक जिम्मेदार फेडरल एजेंसी डीएचएस जब इस तरह का कृत्य करती है तो यह शर्मनाक ही कहा जाएगा। उसके विज्ञापन में भारत में आदर से लिये जाने वाले 'सिंह' उपनाम का दुर्भावना से प्रयोग किया जाना विशेषकर चिंता की बात है। यह उपनाम सिखों में आम है और कुछ हिंदू भी इसका प्रयोग करते हैं। इस शब्द को गैर-कानूनी आप्रवासन या खतरनाक ड्राइविंग से जोड़ने से एक आम सांस्कृतिक पहचान को एक मजाक में बदले जाने का खतरा पैदा होता है।

14 सितंबर हिंदी दिवस पर विशेष

सरल हिंदी की बढ़ती वैश्विक व्यापकता

हिंदी को लेकर अकसर शिकायत रहती है कि यह भाशा सरल नहीं है, इसलिए किशोर एवं युवा वर्ग इससे दूर हो रहा है। जबकि यह सच्चाई नहीं है। देषभर में आजीविका और बोलचाल की भाशा बन जाने के कारण पूरे देष में हिंदी का बोलबाला और सर्व-स्वीकार्यता बढ़ रही है। स्वतंत्रता आंदोलन, हिंदी फिल्में, टीवी सीरियल, विज्ञापन और अब डिजिटल और सोषल मीडिया की प्रमुख भाषा हिंदी ही है। इन माध्यमों पर हिंदी की लोक बोली और भाशाओं का प्रभुत्व निरंतर बढ़ रहा है। 'हनुमान अंश' फिल्म के लोकप्रिय होने का कारण इसके लोकगीत और आंचलिक भाशा ही है। सरकारी काम-काज में हिंदी की उपयोगिता बढ़ाने की दृश्टि से केंद्रीय राजभाशा मंत्रालय ने एक परिपत्र जारी करके हिंदी अनुवाद की जटिलता को दूर करने का काम भी कर दिया है। षासकीय विभागों को निर्देष जारी किए हैं कि वे अपने पत्रों व अपने अभिलेखों में उर्दु, अंग्रेजी, अरबी, फारसी और तुर्की मूल के उन षब्दों का प्रयोग कर सकते हैं, जो लोकप्रिय होने के साथ प्रचलन में है। अतएव अनुवादित हिंदी में अब 'लोह पथ गामिनी' और 'द्विचक्र वाहिनी' जैसे दुररूह षब्दों की अनिवार्यता खत्म हो गई है। वैसे भी भाषा केवल विचारों को व्यक्त करने का माध्यम नहीं है, वह मनुष्य के अनुभवों, संवेदनाओं, स्मृतियों और सपनों को एक-दूसरे तक पहुँचाने वाला सेतु भी है। कोई भाषा तभी जीवंत और प्रभावशाली बनती है, जब वह अपने समय के मनुष्य से सहज संवाद कर सके। हिंदी के संदर्भ में आज आवश्यकता ऐसी भाषा की है जो न तो अनावश्यक रूप से कठिन हो और न ही अपनी अभिव्यक्ति की गरिमा खोए। वह सरल, सरस, संवेदनशील भी हो और समावेशी भी। इसी दृष्टि से 'सुवार्तित हिंदी' की संकल्पना महत्वपूर्ण प्रतीत होती है। 'सुवारित' या 'सुवार्तित' को यदि हम व्यापक अर्थ में ग्रहण करें तो इसका आशय ऐसी हिंदी से हो सकता है जो अपने कथ्य को सुंदर, स्पष्ट, सहज और प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करे। ऐसी हिंदी पाठक पर शब्दों का बोझ नहीं डालती, बल्कि विचार और भाव को उसके मन तक स्वाभाविक रूप से पहुँचाती है। इसमें भाषा का सौंदर्य शब्दों की कठिनता में नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति की सजीवता में दिखाई देता है।

सरलता का अर्थ भाषा को कमजोर या साधारण बना देना नहीं है। सरल भाषा वह है जिसमें जटिल विचारों को भी सहज ढंग से व्यक्त करने की क्षमता हो। विज्ञान, दर्शन, इतिहास, समाजशास्त्र अथवा साहित्य जैसे गंभीर विषय भी यदि सरल भाषा में प्रस्तुत किए जाएँ तो उनका प्रभाव व्यापक हो जाता है। हिंदी की शक्ति उसकी व्यापक जन संस्कृति में है। गांव से लेकर महानगर तक, विद्यार्थी से लेकर सामान्य पाठक तक और साहित्य से लेकर पत्रकारिता तक हिंदी के अनेक रूप दिखाई देते हैं। इसलिए हिंदी को केवल विद्वानों की भाषा न होकर सामान्य जन की अनुभूति और समझ की भाषा है। किसी भी भाशा में एक ही बात को दो प्रकार से कहा जा सकता है। पहला वाक्य वह जो केवल सूचना देता है, जबकि दूसरा वाक्य उसी सूचना में अनुभूति और जीवन को संवेदित चेतना से जोड़ देता है। सरस हिंदी पाठक के मन में दृश्य बनाती है, संवेदना जगाती है और उसे विषय से जोडती है। इसलिए हिंदी की मूल प्रकृति समावेशी है। भारत की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता बहुत व्यापक है। हिंदी अनेक भारतीय भाषाओं से शब्द ग्रहण करती रही है और अपने विकास के क्रम में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं से प्रभावित हुई है। इसलिए हिंदी को किसी एक संकीर्ण भाषाई सीमा में नहीं बांधा जा सकता है। हिंदी के इस समावेशी स्वरूप को सामने लाने का काम भारतेंदु युग में ही आरंभ हो गया था। यद्यपि आरंभ में हिंदी गद्य अपरिमार्जित और अशुद्ध भी था। इस कमी पर महावीर प्रसाद द्विवेदी की दृश्टि गई और उन्होंने अनेक समस्याओं से जूझते हुए भाशा को परिस्कृत करने का काम किया। इस समय हिंदी के कई रूप थे-पूर्वी बोली, ब्रज, अवधी और बुंदेलखंडी द्विवेदी जी ने इसे एकरूप में ढालने का काम 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से किया। हालांकि हिंदी की खड़ी बोली का स्वरूप दसवीं से चैदहवीं षताब्दी के बीच विकसित होना आरंभ हो गया था, परंतु 19वीं षताब्दी में पहुंचने पर ही आधुनिक मानक हिंदी खड़ी बोली के रूप में स्थापित हो पाई। इसका उपन्यास, कहानी और नाटकों को गद्य रूप देने का काम मुंषी प्रेमचंद, जयषंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और महादेवी वर्मा ने प्रमुख रूप से किया। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में जीवन को व्यावहारिक यथार्थवाद से जोड़ा। प्रसाद ने अपने उपन्यास, कहानी, नाटक और निबंधों में भाशा की ऐतिहासिक चेतना को स्थान दिया। निराला ने मजदूर वर्ग की समस्याओं को 'कुकुरमुत्ता' और 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी आंदोलित करने वाली षब्द संरचना दी। महादेवी ने अपनी कविताओं में नारी सषक्तिकरण को भावुक व्यंजनाओं के साथ प्रस्तुत किया। महादेवी ने 'असीम' और 'ससीम' संबोधनों के माध्यमों से रहस्यवाद की उस दार्षनिक अवधारणा को अभिव्यक्त किया जो जीवात्मा और परमात्मा के अंतरसंबंधों को दर्षाती है। रीतिकाल और छायावाद को लेकर अक्सर 'संस्कृतनिश्ठ हिंदी' और 'सरल हिंदी' के बीच विवाद खडा कर दिया जाता है। वास्तव में शुद्धता और सरलता एक-दूसरे की विरोधी नहीं हैं। भाषा में व्याकरण, वर्तनी और अर्थ की स्पष्टता आवश्यक है। अतएव इसे आलोचकों का दृष्टिदोष या पूर्वग्रह ही कहा जाएगा कि जिस छायावादी युग का छायावादी साहित्य हिंदी में सबसे ज्यादा लोकप्रिय है, उसकी आलोचना इसलिए हुई, क्योंकि यही वह साहित्य है, जिसमें इतिहास के पुनर्लेखन के साथ भारतीय ज्ञान-परंपरा की सशक्त अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। हिंदी के साहित्यिक लेखन का उद्देश्य केवल साहित्य की प्रवृत्तियों का अनुसरण नहीं होना चाहिए, अपितु भाषाई शब्द व्यंजना और शिल्प को संवाद-संप्रेषणीयता के परिप्रेक्ष्य में देखने की जरूरत है। संप्रेषणीयता ही रचना की वह शक्ति है, जो भाषा को सुवारित और सहज बनाती है। इसी कारण सोषल मीडिया में यह भाशा भी डिजिटल रूप में खूब स्वीकार की जा रही है। नरेंद्र मोदी देश के ऐसे एकमात्र प्रधानमंत्री हैं, जो हिंदी में एशिया समेत यूरोपीय देशों में बेहिचक भाषण देते हैं। मोदी दक्षेश नेताओं से हिंदी में द्विपक्षीय वार्ताएं करके और संयुक्त राष्ट्रसंघ समेत दुनिया के अनेक देशों में हिंदी में दिए उद्बोधनों में तालियां बटोरकर दुनिया को जता चुके हैं कि विश्व में हिंदी को बोलने और समझने वालों की संख्या करोड़ों में है। मोदी देश के ऐसे पहले प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने जिस भाषा में वोट मांगे, उसी भाषा को देश-विदेश में संवाद की भाषा बनाए हुए हैं।

स्वतंत्रता आंदोलन, हिंदी फिल्में, टीवी सीरियल, विज्ञापन और अब डिजिटल और सोषल मीडिया की प्रमुख भाषा हिंदी ही है। इन माध्यमों पर हिंदी की लोक बोली और भाशाओं का प्रभुत्व निरंतर बढ़ रहा है। 'हनुमान अंश' फिल्म के लोकप्रिय होने का कारण इसके लोकगीत और आंचलिक भाशा ही है। सरकारी काम-काज में हिंदी की उपयोगिता बढ़ाने की दृश्टि से केंद्रीय राजभाशा मंत्रालय ने एक परिपत्र जारी करके हिंदी अनुवाद की जटिलता को दूर करने का काम भी कर दिया है। षासकीय विभागों को निर्देष जारी किए हैं कि वे अपने पत्रों व अपने अभिलेखों में उर्दु, अंग्रेजी, अरबी, फारसी और तुर्की मूल के उन षब्दों का प्रयोग कर सकते हैं, जो लोकप्रिय होने के साथ प्रचलन में है। अतएव अनुवादित हिंदी में अब 'लोह पथ गामिनी' और 'द्विचक्र वाहिनी' जैसे दुररूह षब्दों की अनिवार्यता खत्म हो गई है।

देश दुनिया से

अनसुनी न करें हिमालय की चेतावनियों को

हिमालय लगातार खतरनाक आपदाओं के रूप में एक के बाद एक चेतावनियां दे रहा है—जैसे अचानक बाढ़, हिमस्खलन, ग्लेशियल झील के फटने से आई बाढ़, बादल फटना, भूस्खलन और ज़मीन का बुरी तरह धंसना। हमने केदारनाथ, धौलीगंगा, जोशीमठ, सिक्किम और अब नेपाल में इन्हें होते देखा है, अपने पीछे भारी तबाही छोड़ते हुए। हर आपदा के बाद, ग्लेशियरों की निगरानी, आरंभिक चेतावनी प्रणालियां विकसित करने, खतरे और जोखिमों की मैपिंग करने और बचाव संबंधी एवं नुकसान कम से कम रखने के उपाय करने की बातें होती हैं। कुछ हफ़्तों या महीनों के बाद, शोर-शराबा थम जाता है और सब कुछ पहले की भांति हो जाता है। हिमालयी क्षेत्र में आपदाओं से निपटने के लिए एक बहुआयामी रणनीति की ज़रूरत है, जिसमें वैज्ञानिक शोध, नीति-निर्माण, क्रियान्वयन तंत्र, जन-जागरूकता और समुदाय की भागीदारी शामिल हो। विज्ञान ने हिमालय के पर्यावरण, खासकर ग्लेशियरों और जल प्रणालियों से जुड़ी स्थिति के खतरों के बारे में स्पष्ट राय दी है—कि क्या करने की ज़रूरत है और समझने में क्या कमियां हैं। वैश्विक स्तर पर, इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) ने कई रिपोर्टें प्रकाशित की हैं, जिनमें विभिन्न देशों से ग्लेशियरों और पहाड़ी पारिस्थितिकी तंत्र पर शोध के नतीजों को एक साथ लाया गया है। भारत में, नेशनल रिमोट सेंसिंग सेंटर ने रिमोट सेंसिंग तस्वीरों का इस्तेमाल करके भारतीय हिमालयी क्षेत्र में कुल मिलाकर लगभग 28,000 ग्लेशियल झीलों में से ज़्यादा जोखिम वाली 7,500 ग्लेशियल झीलों की मैपिंग की है। साथ ही, खतरनाक हो सकने वाली ग्लेशियल झीलों से बनने वाली बाढ़ की संभावना भी तैयार की है। इसमें बाढ़ का खतरा और अगर ये झीलें कभी टूटती हैं, तो नीचे बसे इलाकों तक बाढ़ की लहरें पहुंचने में लगने वाले संभावित समय का ब्योरा भी दिया गया है। इस साल मार्च में, काठमांडू स्थित इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट (आईसीआईएमओडी) ने दो अहम रिपोर्टें प्रकाशित कीं—'1990 से 2020 तक हिंदू कुश हिमालय क्षेत्र में ग्लेशियरों की बदलती गतिशीलता' और 'एचकेएच ग्लेशियर आउटलुक 2026: हिमालयी ग्लेशियरों की 50 साल की निगरानी से मिली जानकारी।' इन रिपोर्टों के नतीजे चिंताजनक हैं। पहली रिपोर्ट हिंदू कुश क्षेत्र के 63,761 ग्लेशियरों के डेटा पर आधारित थी, जो 55,000 वर्ग किलोमीटर से ज़्यादा इलाके में फैले हैं और जिनमें अनुमानित 5,700 क्यूबिक किलोमीटर बर्फ का भंडार है। विश्लेषण से पता चला है कि इस इलाके में ग्लेशियर 1990 से लगातार सिकुड़ रहे हैं, जिससे कुल ग्लेशियर क्षेत्र में 12 प्रतिशत की कमी आई है और बर्फ के अनुमानित भंडार में 9 फीसदी की गिरावट हुई है। ग्लेशियर सिकुड़ने की रफ़्तार सबसे ज़्यादा 2010 और 2020 के बीच बढ़ी, खासकर पूर्वी और मध्य हिस्सों में। सिंधु नदी बेसिन के ग्लेशियर क्षेत्र में 6 फीसदी की कमी आई, जबकि गंगा और ब्रह्मपुत्र नदी बेसिन में क्रमशः 21 और 16 प्रतिशत की कमी देखी गई। रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि ग्लेशियर के इस तरह सिकुड़ते जाने का सीधा नतीजा सूखे के मौसम में पानी की कमी और ग्लेशियल झील के टूटने से बनी बाढ़, हिमस्खलन, भूस्खलन और मलबे के बहाव जैसे जोखिम होंगे। निगरानी किए गए 38 ग्लेशियरों पर आधारित दूसरी रिपोर्ट संकेत देती है कि 'हिमालय के क्रायोस्फीयर (बर्फ वाले हिस्से) के कुछ हिस्से ऐसे नाजुक मोड़ के करीब हैं, जिसके बाद उनकी सिकुड़न को रोकना संभव नहीं होगा।' आईसीआईएमओडी के महानिदेशक पेमा ग्यामत्शो का नीति निर्माताओं के लिए सीधा संदेश था—'यह कोई दूर की समस्या नहीं है, बल्कि एक ऐसा संकट है जो वर्तमान में मुंह बाए खड़ा है, और हर गर्मी और मॉनसून में नई आपदाएं आ रही हैं। इस सदी में बर्फ घटने की दर दोगुनी हो गई है।' नेपाल में बनी नवीनतम आपदा के बाद ये शब्द लगभग भविष्यवाणी जैसे लगते हैं। ग्यामत्शो के अनुसार, 'यह अब अनदेखी की जा सकने वाली वह स्थिति नहीं रही कि अचानक से सामना हो; ये हमारा नया यथार्थ हैं।' ग्लेशियर गतिशीलता विज्ञान और 1974 से इकट्ठा किए गए सैटेलाइट एवं ज़मीनी डेटा के विश्लेषण पर आधारित यह शायद सबसे स्पष्ट चेतावनी थी। वैज्ञानिक डेटा विश्लेषण से और कार्रवाई न करने के गंभीर नतीजों के बारे में चेतावनी देकर अपना काम कर रहे हैं, लेकिन नीति निर्माता, राजनेता और प्रशासन की प्रतिक्रिया धीमी, बिखरी हुई या उदासीन भी रही है। दुनिया भर में, आईपीसीसी की रिपोर्टों पर प्रतिक्रिया सुस्त रही है, खासकर जब मुख्य मुद्दे को हल करने की बात आए—यानी ग्लोबल वार्मिंग के असर को कम करने के लिए उत्सर्जन में कटौती करना, जो सीधे तौर पर हिमालय को प्रभावित कर रहा है। क्षेत्रीय स्तर पर, हिमालयी क्षेत्र के देशों के बीच सहयोग लगभग न के बराबर है। जबकि इन देशों को साथ मिलकर काम करना चाहिए, क्योंकि जलवायु और पर्यावरण से जुड़ी आपदाएं राजनीतिक सीमाओं को नहीं मानतीं, जैसा कि नेपाल की त्रासदी से पता चला है। सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेकांग जैसी बड़ी नदियां हिमालय से निकलती हैं और कई देशों से होकर गुजरती हैं। उदाहरणार्थ, एक देश में भूस्खलन से दूसरे देश में प्रलयंकारी बाढ़ आ सकती है। कम से कम और कुछ नहीं तो डेटा और जानकारी साझा की जानी चाहिए, तत्पश्चात संयुक्त निगरानी और वैज्ञानिक सहयोग किया जाना चाहिए। राष्ट्रीय स्तर पर भी, नीति-निर्माताओं ने लगातार विज्ञान पर आधारित चेतावनियों को नज़रअंदाज़ किया है।

आप का नज़रिया

पनीर का अर्थशास्त्र

एक समय देश में विशिष्ट खाद्य पदार्थ माने जाने वाले पनीर को लेकर आज गहराता अविश्वास चिंता की बात है। मुनाफे के लिये उपभोक्ता के विश्वास से खिलवाड़ का यह धंधा पूरे देश में खूब चल रहा है। दिल्ली में सामने आया नकली पनीर का मामला इसी कड़ी का एक हिस्सा है। निस्संदेह, ये मामले हमारी खाद्य सुरक्षा व्यवस्था की एक बड़ी कमजोरी को ही उजागर करते हैं। ये विडंबना ही है कि किसी उत्पाद की लागत, उसमें प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं और ग्राहक को इस बाबत दी जाने वाली जानकारी में अकसर विरोधाभास पाया जाता है। देश में एनालॉग पनीर की धड़ल्ले से बिक्री के पीछे भी मुनाफे का प्रलोभन ही है। जिसमें वेजिटेबल फैट,स्टार्च, प्लांट प्रोटीन और गैर डेयरी उत्पादों को मिलाया जाता है। दरअसल, यह पनीर, असली दूध वाले पनीर की तुलना में काफी सस्ता होता है और उत्पादकों के मुनाफे को बढ़ाता है। जानकारों का अनुमान है कि कीमतों का यह अंतर चालीस से पचास फीसदी तक हो सकता है। ऐसे में जब रेस्टोरेंट,कैटरर और खाने-पीने के दूसरे कारोबार कम मुनाफे पर करते हैं तो महंगे पनीर के जगह सस्ता पनीर इस्तेमाल करने का लालच होना एक स्वाभाविक बात है। दरअसल, इसका मतलब यह कतई नहीं है कि हर एनालॉग प्रोडक्ट वास्तव में खाने की दृष्टि से असुरक्षित ही होता है। वास्तव में मुख्य समस्या धोखा देने की है। यदि किसी डेयरी पदार्थों से मुक्त विकल्प की पहचान स्पष्ट तौर पर एनालॉग पनीर के तौर पर की जाती है, तो ग्राहक सोच-समझकर उसको खरीदने के बारे में फैसला स्वतंत्र रूप से ले सकते हैं। लेकिन सबसे बड़ी बात इसको लेकर ईमानदारी न होना है। जब विक्रेता इसे दूध का पनीर बताकर बेचने लगते हैं तो उपभोक्ता निर्णय नहीं ले पाते। ऐसे में असली पनीर वाली पौष्टिकता उन्हें नहीं मिल पाती। निर्विवाद रूप से इस मामले में रेस्टोरेंट सबसे कमजोर कड़ी के रूप में सामने आते हैं। जिनका मुख्य मकसद अपने मुनाफे को प्राथमिकता देना ही होता है। वास्तव में जब भी कोई रेस्टोरेंट अपने किचन में एनालॉग पनीर आदि का इस्तेमाल करना शुरू करता है और उससे कोई व्यंजन बना लेता है तो ग्राहक नहीं समझ पाता है कि असली पनीर है या नकली पनीर है। देश के खाद्य पदार्थों का नियमन करने वाली संस्था एफएसएसएआई ने फूड-सर्विस देने वाले संस्थानों को स्पष्ट निर्देश दे रखे हैं कि वे यह सुनिश्चित करें कि पनीर वाली डिश में एनालॉग पनीर का इस्तेमाल ग्राहकों को सही जानकारी दिए बिना न किया जाए। इस विवाद के चलते देश के कई राज्यों ने कृत्रिम पनीर के खिलाफ सख्त कदम उठाए हैं। पंजाब सरकार ने इसके बनाने, संग्रहण करने, ट्रांसपोर्ट करने, बांटने और पनीर के नाम पर बेचने पर एक साल के लिये रोक लगा दी है। लेकिन यह भी एक हकीकत है कि एनालॉग पनीर के खिलाफ छापेमारी और उस पर प्रतिबंध लगाने मात्र से यह समस्या हल नहीं होने वाली है। दरअसल, नियामकों को उन आर्थिक कारणों पर भी गंभीरता से ध्यान देना होगा, जिसकी वजह से असली पनीर की जगह नकली पनीर का इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जा रहा है। वास्तव में पनीर की जांच और गुणवत्ता के असली पनीर की उपलब्धता को सुनिश्चित करना जरूरी है। साथ ही तमाम रेस्टोरेंट व होटलों को उन खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता के लिये जवाबदेह बनाना होगा, जिन्हें वे खरीदते हैं और ग्राहकों को परोसते हैं। निस्संदेह, हर ग्राहक को इस बात का हक है कि वह जान सके कि वह किस तरह का पनीर खा रहा है। एनालॉग पनीर उत्पादकों को उत्पाद के पैकेट पर स्पष्ट रूप से लिखना अनिवार्य होना चाहिए कि यह एनालॉग पनीर है। इसके अलावा सवाल इसके अर्थशास्त्र का भी है कि यदि उत्पादक इसके जरिये मुनाफा कमा रहे हैं तो उपभोक्ता को उस कीमत के अंतर का लाभ मिलना चाहिए। साथ ही उन विक्रेताओं पर नकेल कसनी होगी जो असली पनीर की कीमत पर एनालॉग पनीर धड़ल्ले से बेच रहे हैं। वहीं दूसरी ओर ग्राहकों की सजगता भी इस समस्या के अंतिम समाधान में मददगार हो सकती है।

दिल्ली में सामने आया नकली पनीर का मामला इसी कड़ी का एक हिस्सा है। निस्संदेह, ये मामले हमारी खाद्य सुरक्षा व्यवस्था की एक बड़ी कमजोरी को ही उजागर करते हैं। ये विडंबना ही है कि किसी उत्पाद की लागत, उसमें प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं और ग्राहक को इस बाबत दी जाने वाली जानकारी में अकसर विरोधाभास पाया जाता है। देश में एनालॉग पनीर की धड़ल्ले से बिक्री के पीछे भी मुनाफे का प्रलोभन ही है। जिसमें वेजिटेबल फैट, स्टार्च, प्लांट प्रोटीन और गैर डेयरी उत्पादों को मिलाया जाता है। दरअसल, यह पनीर, असली दूध वाले पनीर की तुलना में काफी सस्ता होता है और उत्पादकों के मुनाफे को बढ़ाता है। जानकारों का अनुमान है कि कीमतों का यह अंतर चालीस से पचास फीसदी तक हो सकता है। ऐसे में जब रेस्टोरेंट,कैटरर और खाने-पीने के दूसरे कारोबार कम मुनाफे पर करते हैं तो महंगे पनीर के जगह सस्ता पनीर इस्तेमाल करने का लालच होना एक स्वाभाविक बात है। दरअसल, इसका मतलब यह कतई नहीं है कि हर एनालॉग प्रोडक्ट वास्तव में खाने की दृष्टि से असुरक्षित ही होता है। वास्तव में मुख्य समस्या धोखा देने की है। यदि किसी डेयरी पदार्थों से मुक्त विकल्प की पहचान स्पष्ट तौर पर एनालॉग पनीर के तौर पर की जाती है, तो ग्राहक सोच-समझकर उसको खरीदने के बारे में फैसला स्वतंत्र रूप से ले सकते हैं। लेकिन सबसे बड़ी बात इसको लेकर ईमानदारी न होना है।

कुछ अलग

संतोष से साधना

एक बार गौतम बुद्ध अपने शिष्यों के साथ पदयात्रा पर निकले। रास्ते में कई गांवों, कस्बों, नगरों आदि में ठहरते रहे और नये-नये अनुभव हासिल करते रहे। एक शाम वे सब बहुत थक गए थे। तथागत ने कहा, 'इस जंगल में रात को रुक जाते हैं। गर्मी का मौसम है, रात सुहावनी रहेगी। सुबह होगी तो फिर से चल देंगे।' सब थककर चूर थे, अतः सबने सहमति जताई। सुबह हुई तो एक आवाज़ से सब चौंक गए। एक युवक नीचे गिरे पत्तों को एक बड़े बर्तन में जमा कर रहा था। उस युवक ने जब अपने लिए पत्तियां जमा कर लीं, तो गौतम बुद्ध ने उसके नज़दीक जाकर उसके साथ वार्तालाप किया। उस युवक ने वहां पर कुछ पेड़ों की तरफ़ संकेत करके बताया, 'इनकी पत्तियां भोजन और जल की कमी पूरी करती हैं।' युवक के जाने पर शिष्यों ने पूछा, 'तथागत, आपने उस देहाती से इतनी घनिष्ठता से वार्तालाप क्यों किया?' महात्मा बुद्ध ने कहा, 'तुमने देखा, वह कितना संतोषी है।

दृष्टि कोण

करेंसी को टिकाऊ बनाने की दिशा में अहम बदलाव

भारत की मुद्रा केवल कागज़, सुरक्षा धागे और स्याही का भौतिक उत्पाद नहीं है; यह देश की संप्रभुता का प्रतीक, रोज़मर्रा के सामाजिक भरोसे का ठोस माध्यम और राज्य की संस्थागत क्षमता का प्रतीक है। भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा छोटे मूल्यवर्ग, खासकर 10 रुपये और 20 रुपये, में पॉलिमर यानी प्लास्टिक नोटों के बड़े पैमाने पर फील्ड ट्रायल की दिशा में उठाए गए हालिया नीतिगत क़दम देश की मौद्रिक यात्रा में दूरगामी मोड़ हैं। यह पहल नोटों के टिकाऊपन, मुद्रण लागत में कटौती व जालसाज़ी पर अंकुश का वादा तो करती है, लेकिन साथ ही पर्यावरण संतुलन, सामाजिक समावेशिता और करेंसी सुधार की राजनीति पर भी गंभीर विमर्श की मांग करती है। वैश्विक पटल पर पॉलिमर बैंकनोट्स कोई सर्वथा नया प्रयोग नहीं है। वर्ष 1988 में ऑस्ट्रेलिया से शुरू होकर ब्रिटेन, कनाडा, वियतनाम और नाइजीरिया जैसे देशों ने इसे सफलतापूर्वक अपनाया है। इन देशों में पॉलिमर करेंसी को अपनाने का मुख्य कारण उसका लंबा जीवनकाल और उन्नत सुरक्षा तंत्र रहा है। पारंपरिक कागज़ी नोटों की तुलना में पॉलिमर नोट औसतन तीन से चार गुना अधिक चलते हैं। भारत में छोटे मूल्यवर्ग के नोटों की स्थिति ज़मीनी स्तर पर अत्यंत दयनीय रहती है। सब्ज़ी मंडी, ऑटो-रिक्शा, चाय की थड़ियों और स्थानीय हाट-बाज़ारों में 10 और 20 रुपए के नोट इतनी तेजी से हाथ बदलते हैं कि उनका औसत जीवनकाल बमुश्किल एक वर्ष ही रह जाता है। पसीने, नमी, धूल और बार-बार मोड़ने-मरोड़ने के कारण वे जल्द ही फट जाते हैं। रिज़र्व बैंक की 'क्लीन नोट पॉलिसी' के तहत प्रतिवर्ष अरबों की संख्या में कटे-फटे और मैले नोट नष्ट कर उनकी जगह नोट छापने पड़ते हैं। इस प्रक्रिया में भारी वित्तीय संसाधन, विदेशी सबस्ट्रेट यानी नोट-पेपर का आयात और लॉजिस्टिक्स का खर्च शामिल होता है। पॉलिमर नोट पानी, तेल और गंदगी के प्रति प्रतिरोधी होते हैं। इन्हें बार-बार बदलने की दर घटने से केंद्रीय बैंक के मुद्रण खर्च में बड़ी कमी आएगी। इसके साथ ही, पारदर्शी 'विंडो' और जटिल ऑप्टिकल सुरक्षा विशेषताओं के चलते नकली नोटों के संगठित नेटवर्क पर प्रभावी अंकुश लगाना कहीं अधिक संभव हो सकेगा। पॉलिमर नोटों का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव भारत की विशाल अनौपचारिक इकोनॉमी पर पड़ेगा। रेहड़ी-पटरी वाले, छोटे दुकानदार, दिहाड़ी मज़दूर और ग्रामीण परिवार रोज़मर्रा के लेन-देन के लिए मुख्य रूप से नकदी पर ही निर्भर हैं। जब किसी आम नागरिक के हाथ में फटा हुआ नोट आता है और बाज़ार में उसे लेने से मना कर दिया जाता है, तो यह सिर्फ आर्थिक हानि नहीं बल्कि रोज़मर्रा की असुविधा और गरिमा पर चोट का कारण बनता है। लंबे समय साफ़-साबुत रहने वाले नोट आम जनता को लेन-देन में सुगमता और मानसिक सुरक्षा प्रदान करेंगे। यह नीतिगत क़दम इस व्यावहारिक सच्चाई को भी स्वीकार करता है कि यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) और सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी के अभूतपूर्व प्रसार के बावजूद भारत में नकद लेन-देन पूरी तरह समाप्त नहीं हो सकता। डिजिटल भुगतान की बुनियादी सीमाएं हैं—नेटवर्क कनेक्टिविटी, स्मार्टफ़ोन की उपलब्धता और डिजिटल साक्षरता की बाधाएं अभी पूरी तरह दूर नहीं हुईं। प्रस्तावित पॉलिमर नोट कागज़ी मुद्रा के समांतर चलेंगे, जिससे सुनिश्चित होगा कि तकनीकी रूप से वंचित वर्ग वित्तीय प्रणाली के हाशिए पर न छूटे। हालांकि, पॉलिमर नोटों की चमक के पीछे दो प्रमुख चुनौतियां भी छिपी हैं—पहली पर्यावरणीय और दूसरी सांस्कृतिक व जलवायुगत। पॉलिमर नोट प्लास्टिक आधारित होने के कारण गैर-बायोडिग्रेडेबल हैं।

आज घर-घर विराजेंगे गणपति

ब्रह्म योग में मनाई जायेगी गणेश चतुर्थी

सनातन धर्म में गणेश चतुर्थी के त्योहार का खास महत्व है। विनायक को समृद्धि और बुद्धि का देवता माना जाता है। गणेश चतुर्थी का त्योहार भाद्रपद माह की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। भगवान गणेश को प्रथम देव माना जाता है। किसी भी शुभ काम को शुरू करने से पहले लंबोदर की पुजा की जाती है।

इस साल 14 सितंबर को गणेश चतुर्थी है। पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान जयपुर - जोधपुर के निदेशक ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि इस साल गणेश चतुर्थी 14 सितंबर को मनाया जाएगा और बप्पा के भक्त गणपति की प्रतिमा को घर में लाकर उनकी भक्ति भाव से पूजा करेंगे। इस साल गणेश चतुर्थी का उत्सव 14 सितंबर से शुरू होगा, जबकि गणेश विसर्जन 25 सितंबर के दिन किया जाएगा।

शुभ मुहूर्त

भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक डा. अनीष व्यास ने बताया कि । वैदिक पंचांग के अनुसार गणेश पूजन के लिए मध्याह्न काल (वृश्चिक लग्न सहित) को श्रेष्ठ माना गया है। गणेश पूजन हेतु मध्याह्न काल (वृश्चिक लग्न सहित) प्रातः 11:08 से प्रातः 11:58 तक रहेगा। अमृत का चौघड़िया प्रातः 06:16 से प्रातः 07:48, शुभ का चौघड़िया प्रातः 09:19 से प्रातः 10:51, अभिजित् प्रातः 11:58 से दोपहर 12:46 तक रहेगा।

ब्रह्म योग

गणेश चतुर्थी के दिन ब्रह्म योग दोपहर 12:45 बजे तक रहेगा। वहीं चित्रा नक्षत्र दोपहर 1:55 बजे तक रहेगा। ऐसे में ब्रह्म योग के दौरान गणपति पूजन, संकल्प और मंत्र जाप को विशेष शुभ माना जा रहा है। श्रद्धालु इस दौरान भगवान गणेश की प्रतिमा स्थापित कर विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर सकेंगे।

गणेश विसर्जन तिथि

शास्त्रों के अनुसार गणेश चतुर्थी पर्व का समापन अनंत चतुर्दशी के दिन किया जाता है। साथ ही इसी दिन बप्पा को श्रद्धापूर्वक विदा किया जाता है। पंचांग के अनुसार गणेश विसर्जन 25 सितंबर 2026 को किया जाएगा।

महत्व

हिंदू धर्म में भगवान गणेश को प्रथम पूज्य देवता माना गया है। किसी भी शुभ और मांगलिक कार्यक्रम में सबसे पहले गणेशी जी वंदना और पूजा की जाती है। भगवान गणेश बुद्धि, सुख-समृद्धि और विवेक का दाता माना जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भगवान गणेश जी का जन्म भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि, स्वाति नक्षत्र और सिंह लग्न में दोपहर के प्रहर में हुआ था। ऐसे में गणेश चतुर्थी के दिन पर अगर आप घर पर भगवान गणेश की मूर्ति की स्थापना करने जा रहे है तो दोपहर के शुभ मुहूर्त में करना होता है। गणेश चतुर्थी तिथि लेकर अनंत चतुर्दशी तक यानी लगातार 10 दिनों तक विधि-विधान के साथ गणेश जी की पूजा उपासना किया जाता है। गणेश जी की पूजा करने से जीवन में आने वाली सभी तरह की बाधाएं और संकट दूर हो जाते हैं और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।

-डा. अनीष व्यास
भविष्यवक्ता और कुण्डली विश्लेषक
पाल बालाजी ज्योतिष संस्थान
जयपुर - जोधपुर

ज्योतिषाचार्य डा. अनीष व्यास ने बताया कि हिंदू पंचांग के अनुसार हर साल भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को गणेश चतुर्थी का पावन पर्व मनाया जाता है। गणेश महोत्सव का पर्व चतुर्थी तिथि से प्रारंभ होकर अगले 10 दिनों तक चलता है। वहीं अनंत चतुर्दशी के दिन भगवान गणेश को विदा किया जाता है। इस बार उदया तिथि के आधार पर 14 सितंबर को गणेश चतुर्थी का व्रत रखा जाने वाला है। माना जाता है कि गणेश चतुर्थी के दिन चंद्रमा को नहीं देखना चाहिए। इससे श्राप लगता है। वहीं गणेश चतुर्थी के दिन भगवान गणेश की मूर्ति स्थापना शुभ मुहूर्त में ही करनी चाहिए।

गणेश चतुर्थी तिथि

सनातन धर्म में गणेश चतुर्थी के पर्व का विशेष महत्व होता है। वैदिक पंचांग के अनुसार, वैदिक पंचांग के अनुसार, भाद्रपद माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि 14 सितंबर सुबह 7:06 बजे शुरू होगी वहीं 15 सितंबर सुबह 7:44 मिनट पर चतुर्थी तिथि का समापन होगा। सनातन धर्म में उदया तिथि मान है। इसके लिए 14 सितंबर को गणेश चतुर्थी को मनाई जाएगी।

पूजा विधि

डा. अनीष व्यास ने बताया कि गणेश चतुर्थी तिथि पर शुभ मुहूर्त को ध्यान में रखकर सबसे पहले अपने घर के उत्तर भाग, पूर्व भाग, अथवा पूर्वोत्तर भाग में गणेश जी की प्रतिमा रखें। फिर पूजन सामग्री लेकर शुद्ध आसन पर बैठें। पूजा सामग्री में दूर्वा, शमी पत्र,लड्डू, हल्दी, पुष्प और अक्षत से ही पूजन करके गणेश जी को प्रसन्न किया जा सकता है। गणेश जी की आराधना केवल दूर्वा से भी की जा सकती है। सर्वप्रथम गणेश जी को चौकी पर विराजमान करें और नवग्रह, षोडश मातृका आदि बनाएं। चौकी के पूर्व भाग में कलश रखें और दक्षिण पूर्व में दीया जलाएं। अपने ऊपर जल छिड़कते हुए ॐ पुंडरीकाक्षाय नमः कहते हुए भगवान विष्णु को प्रणाम करें और तीन बार आचमन करें तथा माथे पर तिलक लगाएं। यदि आपको कोई भी मंत्र नहीं आता तो 'ॐ गं गणपतये नमः। इसी मंत्र से सारी पूजा संपन्न कर सकते हैं। हाथ में गंध अक्षत और पुष्प लें और दिए गए मंत्र को पढ़कर गणेश जी का ध्यान करें। इसी मंत्र से उन्हें आवाहन और आसन भी प्रदान करें। आसन के बाद गणेश जी को स्नान कराएं। पंचामृत हो तो और भी अच्छा रहेगा और नहीं हो तो शुद्धजल से स्नान कराएं। पूजा के पश्चात इन्हीं मंत्रों से गणेश जी की आरती करें। पुनः पुष्पांजलि हेतु गंध अक्षत पुष्प से इन मंत्रों ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्ती प्रचोदयात्। से पुष्पांजलि अर्पित करें, तत्पश्चात गणेश जी की तीन बार प्रदक्षिणा करें।

अभिषेक शर्मा ने 82 रन ठोके, भारत ने 38 गेंद शेष रहते 157 रन का लक्ष्य किया हासिल

नई दिल्ली।

भारतीय टीम ने अफगानिस्तान के खिलाफ ट्वेंटी-20 शृंखला का आगाज जीत के साथ किया। अरुण जेटली स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में भारत ने अफगानिस्तान को 7 विकेट से आसानी से हरा दिया। पहले बल्लेबाजी करते हुए अफगानिस्तान ने 43 रन पर 5 विकेट गंवा दिए थे। यहां से टीम संभली और 156 रन तक पहुंचने में सफल रही। इसके जवाब में अभिषेक शर्मा ने तूफानी बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम को महज 13.4 ओवर में ही जीत दिला दी। तीन मैचों की शृंखला में भारतीय टीम 1-0 से आगे हो गई है।

अभिषेक शर्मा ने भारतीय टीम के लिए तूफानी बल्लेबाजी करते हुए 82 रनों की शानदार पारी खेली। उन्होंने इस दौरान 7 चौके और 7 छक्के लगाए। अभिषेक ने महज 22 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। सलामी बल्लेबाज संजू सैमसन 8 गेंदों पर 10 रन बनाकर आउट हो गए।

दूसरे विकेट के लिए ईशान किशन के साथ अभिषेक शर्मा ने 121 रनों की शानदार साझेदारी की। इस दौरान दोनों बल्लेबाजों ने सिर्फ 53 गेंदों का सामना किया। इस साझेदारी में अभिषेक का योगदान 27 गेंदों पर 76 रनों का रहा। ईशान किशन ने 33 गेंदों पर 42 रन ठोके। अफगानिस्तान के सभी गेंदबाज

महंगे साबित हुए। फजलहक फारूकी ने तो सिर्फ दो ओवर में ही 38 रन लुटा दिए।

टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी अफगानिस्तान की शुरुआत बेहद खराब रही। जसप्रीत बुमराह ने पारी की दूसरी गेंद पर ही रहमानुल्लाह गुरबाज को बिना खाता खोले पवेलियन भेज दिया।

उस समय अफगानिस्तान के खाते में सिर्फ 5 रन थे।

इसके बाद सेदिकुल्लाह अटल ने कप्तान इब्राहिम जादरान के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया। दोनों खिलाड़ियों ने दूसरे विकेट के लिए 22 गेंदों में 32 रनों की साझेदारी की। टीम ने 38 रन के स्कोर पर इब्राहिम जादरान के रूप में दूसरा विकेट गंवाया। जादरान 10 गेंदों में 11 रन बनाकर पवेलियन लौटे।

उमरजई ने पहुंचाया 150 के पार

43 रन तक पहुंचते-पहुंचते सेदिकुल्लाह अटल 13 रन, गुलबदीन नायब 2 रन और दरवेश रसूली 2 रन बनाकर अपना विकेट गंवा चुके थे। इसके बाद मोहम्मद नबी ने अजमतुल्लाह उमरजई के साथ छठे विकेट के लिए 56 गेंदों में 83 रनों की महत्वपूर्ण साझेदारी करते हुए अफगानिस्तान को शतक के पार पहुंचाया।

मोहम्मद नबी 27 गेंदों में 33 रन बनाकर आउट हुए। अजमतुल्लाह उमरजई ने 44 गेंदों में 4 छक्कों और इतने ही चौकों की मदद से 64 रन की नाबाद पारी खेली। भारतीय गेंदबाज शिवम दुबे ने आखिरी ओवर में 21 रन दे दिए, जिससे अफगानिस्तान का स्कोर 150 के पार पहुंच गया।भारत की ओर से अर्शदीप सिंह सबसे सफल गेंदबाज रहे। उन्होंने 4 ओवर में 19 रन देकर 3 विकेट हासिल किए।

जसप्रीत बुमराह, अक्षर पटेल और वरुण चक्रवर्ती को 1-1 सफलता मिली। अभिषेक शर्मा की विस्फोटक बल्लेबाजी के सामने अफगानिस्तान के गेंदबाज पूरी तरह बेअसर नजर आए और भारत ने 38 गेंद शेष रहते 7 विकेट से मुकाबला अपने नाम कर लिया।

भारत ने श्रीलंका को 72 रनों से हराकर जीता महिला एशिया कप, आठवीं बार चैंपियन बनी हरमन सेना

दुबई। भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने महिला एशिया कप 2026 का खिताब अपने नाम कर लिया है। भारत ने फाइनल मुकाबले में गत चैंपियन श्रीलंका को 72 रनों से करारी शिकस्त देकर आठवीं बार टूर्नामेंट की ट्रॉफी जीतने का गौरव हासिल किया। दुबई अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में पहले बल्लेबाजी करते हुए भारतीय टीम ने 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 183 रन बनाए। इसके जवाब में श्रीलंका की पूरी टीम आखिरी ओवर में 111 रन बनाकर ऑलआउट हो गई। उल्लेखनीय है कि श्रीलंका ने 2024 में भारत को हराकर ही एशिया कप का खिताब जीता था।

स्मृति और शेफाली ने की रनों की बरसात

टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी भारतीय टीम की शुरुआत धमाकेदार रही। स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा ने मिलकर पहले विकेट के लिए 12.5 ओवर में 129 रनों की शानदार साझेदारी की। शेफाली और मंधाना ने महिला ट्वेंटी-20 एशिया कप के इतिहास की सबसे बड़ी साझेदारी का रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया।

शेफाली वर्मा ने महज 24 गेंदों में अपना अर्धशतक पूरा किया। वह महिला ट्वेंटी-20 एशिया कप में सबसे तेज अर्धशतक लगाने वाली बल्लेबाज बन गईं। उन्होंने 39 गेंदों की अपनी पारी में 68 रन बनाए। उनकी पारी में 9 चौके और 2 छक्के शामिल रहे।

स्मृति मंधाना ने 5 चौकों और 3 छक्कों की मदद से 59 रन बनाए। कप्तान हरमनप्रीत कौर सिर्फ 14 रन बनाकर आउट हुईं। ऋचा घोष भी बड़े शॉट लगाने के लिए संघर्ष करती दिखाई दीं और उन्होंने 13 गेंदों में 17 रन बनाए। दीप्ति शर्मा का बल्ला भी खामोश रहा और वह 5 रन बनाकर आउट हुईं। भारती फुलमाली ने 2 रन बनाए, जबकि प्रगुनालन कमलिनी ने 5 गेंदों में 15 रन बनाकर नाबाद रहते हुए शानदार योगदान दिया। कमलिनी ने पारी की आखिरी गेंद पर छक्का लगाकर भारतीय टीम को 20 ओवर में 183 रनों के

मजबूत स्कोर तक पहुंचाया।

श्रीलंका की ओर से गेंदबाजी करते हुए कप्तान चमारी अटापट्टू, मिताली अयोध्या और चमुदी प्रबोधा ने एक-एक विकेट हासिल किया।

पहले ही ओवर में श्रीलंका को लगा झटका

लक्ष्य का पीछा करने उतरी श्रीलंकाई टीम को भारतीय गेंदबाज क्रांति गौड़ ने पहले ही ओवर में झटका दे दिया। उन्होंने इमेशी दुलानी को बोल्ड कर भारत को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद दूसरे विकेट के लिए चमारी अटापट्टू और विश्मी गुनारत्ने के बीच 58 रनों की साझेदारी हुई। दोनों ने 53 गेंदों का सामना किया। दीप्ति शर्मा की गेंद पर 36 रन बनाकर चमारी अटापट्टू स्टंप हुईं। इसके बाद दीप्ति ने ही विश्मी गुनारत्ने को बोल्ड कर दिया। विश्मी ने 20 रन बनाए।

14वें ओवर तक 86 रन, फिर 25 रन में गिरे 6 विकेट

14वें ओवर में श्रीलंका का स्कोर 86 रन पर 3 विकेट था। इसके बाद भारतीय गेंदबाजों ने श्रीलंका पर शिकंजा कस दिया और उसके आखिरी 6 विकेट महज 25 रन के भीतर गिर गए। इस तरह श्रीलंका की पूरी टीम आखिरी ओवर में 111 रन पर सिमट गई।

भारत की ओर से श्री चरणी सबसे सफल गेंदबाज रहीं। उन्होंने 4 ओवर में 20 रन देकर 4 विकेट हासिल किए। दीप्ति शर्मा ने भी शानदार गेंदबाजी करते हुए 3 विकेट अपने नाम किए। इस बेहतरीन गेंदबाजी प्रदर्शन के दम पर भारत ने श्रीलंका को 72 रनों से हराकर महिला एशिया कप का खिताब अपने नाम कर लिया।

मोहसिन नकवी से ट्रॉफी लेने नहीं पहुंची भारतीय महिला टीम, एशिया कप जीतने के बाद भी नहीं हुई प्रस्तुति

भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने एशिया कप का खिताब जीतने के बाद एशियन क्रिकेट काउंसिल के अध्यक्ष मोहसिन नकवी के हाथों ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। इससे पहले सितंबर 2025 में हुए पुरुष एशिया कप में भी भारतीय टीम ने नकवी के हाथों ट्रॉफी लेने से इनकार किया था।

रविवार को खेले गए फाइनल मुकाबले में भारत ने श्रीलंका को 72 रन से हराकर एशिया कप का खिताब अपने नाम किया। इसके बाद आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में श्रीलंकाई टीम की कप्तान ने मोहसिन नकवी से उपविजेता ट्रॉफी और चेक स्वीकार किया। हालांकि, भारतीय टीम ट्रॉफी लेने के लिए मंच पर नहीं पहुंची। इसके बाद पुरस्कार वितरण समारोह समाप्त कर दिया गया।मोहसिन नकवी एशियन क्रिकेट काउंसिल के अध्यक्ष होने के साथ-साथ पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष और पाकिस्तान सरकार में गृह मंत्री भी हैं। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान उनके भारत विरोधी बयानों को लेकर भी विवाद हुआ था। इसी वजह से 2025 में भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम ने उनके हाथों ट्रॉफी स्वीकार नहीं की थी।भारतीय महिला टीम ने भी इसी रुख को कायम रखते हुए मोहसिन नकवी से ट्रॉफी लेने से इनकार कर दिया। इस तरह पुरुष टीम के बाद महिला टीम ने भी पुरस्कार वितरण समारोह में नकवी के हाथों ट्रॉफी नहीं ली।

न्यूज ब्रीफ

इंग्लैंड ने पाकिस्तान के खिलाफ क्रिकेट सीरीज 3-0 से जीती, एक भी खिलाड़ी शतक नहीं लगा पाया

एजबेस्टन । इंग्लैंड ने यहां हुए तीसरे क्रिकेट टेस्ट मैच में भी मेहमान टीम पाकिस्तान को हराकर 3-0 से सीरीज जीती है। दोनो ही टीम के क्रिकेट इतिहास में ये पहली बार है जब सीरीज में एक भी खिलाड़ी शतक नहीं लगा पाया। इस सीरीज में कुल 20 अर्धशतक लगे पर कोई भी बल्लेबाज 100 रनों तक नहीं पहुंच पाया, यानी किसी भी खिलाड़ी ने शतक नहीं जड़ा। ऐसा क्रिकेट इतिहास में पहली बार हुआ है। इससे पहले 1993 में पाकिस्तान और जिम्बाब्वे के बीच हुई टेस्ट सीरीज में भी कोई बल्लेबाज शतक नहीं लगा पाया था। तब भी 18 अर्धशतक लगे थे, मगर कोई भी बल्लेबाज शतक नहीं लगा पाया था। इसी प्रकार सल 1969 में भारत और न्यूजीलैंड के बीच हुई टेस्ट सीरीज में भी नौ अर्धशतक लगे थे पर शतक एक भी नहीं लगा थ। यह भी हैरानी की बात है कि टेस्ट क्रिकेट में बिना शतक के सबसे अधिक अर्धशतकों वाली शीर्ष-5 सीरीज की सूची में पाकिस्तान का नाम तीन बार दर्ज है। तीन मैचों की इस टेस्ट सीरीज के अंतिम मुकाबले में पाक टीम नौवें नंबर के बल्लेबाज रजाउल्लाह खान के कारण मैच को चौथे दिन तक खींचने में सफल रहा पर हार से बच नहीं पाया। इंग्लैंड के कप्तान जो रूट के नाबाद अर्धशतक 62 रनों और जार्डन काक्स के नाबाद 59 रनों की सहायता से मेजबानों ने 130 रन के छोटे से लक्ष्य को आसानी से हासिल कर लिया। इस प्रभावशाली जीत के साथ, इंग्लैंड ने एक दिन शेष रहते हुए सीरीज में 3-0 से बड़ी जीत हासिल की है। यह साल 2024 के बाद इंग्लैंड की पहली तीन मैचों की टेस्ट सीरीज में पहली क्लीन स्वीप थी, इससे पहले उसने वेस्टइंडीज के खिलाफ ये कारनामा किया था।

वनडे क्रिकेट में रोहित शर्मा का अटूट 264 का विश्व कीर्तिमान

नई दिल्ली। वनडे क्रिकेट, जो कभी धैर्य और संभलकर खेलने वाला फार्मेट माना जाता था, अब बल्लेबाजों की आक्रामक शैली और चौके-छक्कों की आतिशबाजी से परिभाषित होता है। जब कोई बल्लेबाज क्रीज पर टिककर व्यक्तिगत रूप से 200 से अधिक रनों का आंकड़ा पार करता है, तो वह केवल स्कोरबोर्ड को नहीं बढ़ाता, बल्कि विपक्षी गेंदबाजों के हौसले पस्त कर देता है। इतिहास के ऐसे ही पांच सबसे बड़े व्यक्तिगत वनडे स्कोरों ने क्रिकेट जगत में खलबली मचा दी थी और कई रिकार्ड बनाए। इस सूची में सबसे पहला और अविश्वसनीय नाम भारत के हिटमैन रोहित शर्मा का आता है। कोलकाता के ऐतिहासिक ईडन गार्डन्स में 13 नवंबर 2014 का दिन वनडे क्रिकेट के सुनहरे अक्षरों में दर्ज हो गया, जब श्रीलंका के खिलाफ रोहित शर्मा ने 173 गेंदों में रिकार्ड 264 रनों की ऐतिहासिक पारी खेली।

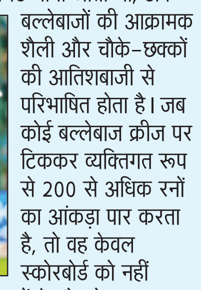

सीएसके के नए हेड कोच पर जल्द फैसला, हेमांग बदानी सबसे मजबूत दावेदार

नई दिल्ली। चेन्नई सुपर किंग्स के नए हेड कोच को लेकर चल रहा सस्पेंस अब जल्द खत्म हो सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक अगले एक से दो सप्ताह में फ्रेंचाइजी नए कोच के नाम की आधिकारिक घोषणा कर सकती है। पांच बार की आईपीएल चैंपियन टीम ने लंबे समय तक कोच रहे स्टीफन फ्लेमिंग से अलग होने के बाद नए नेतृत्व की तलाश शुरू कर दी है। इस दौड़ में पूर्व भारतीय बल्लेबाज हेमांग बदानी का नाम सबसे मजबूत दावेदार के तौर पर सामने आया है। चेन्नई सुपर किंग्स ने लगातार तीन सत्र प्लेआफ में जगह बनाने में नाकाम रहने के बाद अपने कोचिंग ढांचे में बदलाव का फैसला किया। स्टीफन फ्लेमिंग के साथ लंबे समय से चला आ रहा सफल दौर समाप्त होने के बाद टीम अब नए नजरिए के साथ आगे बढ़ना चाहती है। टीम के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक कासी विश्वनाथन ने भी संकेत दिया था कि नए हेड कोच की तलाश की जिम्मेदारी महेंद्र सिंह धोनी को सौंपी गई है। बताया जा रहा है कि धोनी नए कोच के रूप में किसी भारतीय को प्राथमिकता दे रहे हैं। उनका मानना है कि आईपीएल में घरेलू खिलाड़ियों और भारतीय प्रतिभाओं की भूमिका लगातार बढ़ रही है। ऐसे में भारतीय परिस्थितियों, खिलाड़ियों और घरेलू क्रिकेट की बेहतर समझ रखने वाला कोच टीम के लिए ज्यादा प्रभावी हो सकता है। हेमांग बदानी के पक्ष में उनका कोचिंग अनुभव और घरेलू परिस्थितियों की जानकारी सबसे बड़ी वजह मानी जा रही है। वह दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच रह चुके हैं। इसके अलावा दक्षिण अफ्रीका की एसए20, संयुक्त अरब अमीरात की आईएलटी20 और श्रीलंका की एलपीएल जैसी टी20 लीगों में भी कोचिंग की जिम्मेदारी निभा चुके हैं।

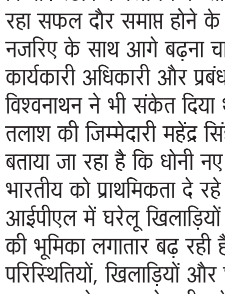

टेस्ट क्रिकेट के शर्मनाक रिकार्ड: बांग्लादेश का 21 हार का लंबा सिलसिला

नई दिल्ली। टेस्ट क्रिकेट का इतिहास जितना गौरवशाली है, उतना ही यह अप्रत्याशित और निर्मम भी रहा है, जहाँ जीत के बड़े-बड़े कीर्तिमानों के साथ-साथ लगातार हार का एक ऐसा सिलसिला भी दर्ज है जो टीमों के मनोबल को तोड़ देता है। टेस्ट क्रिकेट में लगातार सबसे ज्यादा मुकाबले हारने का शर्मनाक रिकार्ड बांग्लादेश के नाम दर्ज है। नवंबर 2001 से फरवरी 2004 के बीच, बांग्लादेशी क्रिकेट टीम एक ऐसे बुरे दौर से गुजरी जहाँ उसे लगातार 21 टेस्ट मैचों में हार का सामना करना पड़ा। यह सिलसिला 15 नवंबर 2001 को चटगांव में ज़िम्बाब्वे के खिलाफ 8 विकेट की हार से शुरू हुआ था और 19 फरवरी 2004 को हरारे में ज़िम्बाब्वे के हाथों ही 183 रन की हार के साथ खत्म हुआ, जिसने इतिहास का सबसे लंबा पराजय-सिलसिला रच दिया। इस दौरान बांग्लादेश को न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका, वेस्टइंडीज, आस्ट्रेलिया और इंग्लैंड जैसी टीमों से लगातार करारी शिकस्त झेलनी पड़ी। जिम्बाब्वे की टीम भी दो अलग-अलग मौकों पर हार के भंवर में फंसी। उनका पहला दौर दिसंबर 2001 से जून 2003 के बीच आया, जब टीम को लगातार 11 टेस्ट मैचों में हार मिली। इस दौरान उन्हें श्रीलंका, भारत, पाकिस्तान और इंग्लैंड जैसी टीमों ने मात दी।

सीपीएल : बारबाडोस ट्राइडेंट्स ने आखिरी गेंद पर जीता मुकाबला, प्लेआफ में बनाई जगह

ब्रिजटाउन

बारबाडोस ट्राइडेंट्स ने सैड्रैक डेसकार्टे के शानदार अर्धशतक और गुडाकेश मोती के आलराउंड प्रदर्शन के दम पर केंसिंग्टन ओवल में खेले गए कैरेबियन प्रीमियर लीग (सीपीएल) के 34वें मुकाबले में जमैका किंग्समेन को आखिरी गेंद पर हराकर रोमांचक जीत दर्ज की। इस जीत के साथ ट्राइडेंट्स ने प्लेआफ में जगह पक्की कर ली। बेहतर नेट रन रेट के आधार पर जमैका भी चौथी टीम के रूप में प्लेआफ में पहुंच गई।

मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करते हुए जमैका ने 20 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 150 रन बनाए। जवाब में बारबाडोस ने 20 ओवर में 8 विकेट पर 151 रन बनाते हुए जीत अपने नाम की। 151 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए बारबाडोस की शुरुआत खराब रही और टीम ने पावरप्ले में 36 रन पर 3 विकेट खो दिए। जैकरी कार्टर 03, ब्रैंडन किंग 18 और रिवाल्डो क्लार्क एक रन पर आउट होकर टीम की मुश्किलें बढ़ा गए। इसके बाद सैड्रैक डेसकार्टे और क्विंटन डी काक ने पारी को संभालने की कोशिश की। हालांकि, डी काक 14 रन बनाकर आउट हो गए। शेरफेन रदरफोर्ड भी 5 रन बनाकर दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से रन आउट हुए।

76/5 के स्कोर पर बारबाडोस की पारी संकट में नजर आ रही थी, लेकिन डेसकार्टे ने आक्रामक अंदाज अपनाया और कुछ बड़े शाट लगाते हुए अपना अर्धशतक पूरा किया। डेसकार्टे 17वें ओवर की शुरुआत में आंद्रे रशेल की गेंद पर आउट हुए। इसके बाद डेनियल सैम्स 5 और क्रिस ग्रीन 17 रन की उपयोगी पारी खेलकर आउट हुए। बारबाडोस को आखिरी ओवर में 17 रन चाहिए थे।

आखिरी ओवर में गुडाकेश मोती ने पहले चौका और फिर एक छक्का जड़ दिया। आखिरी दो गेंदों पर जीत के लिए दो रन चाहिए थे, जो बाबाडोस ने बनाते हुए मुकाबला अपने नाम कर लिया। गुडाकेश मोती 8 गेंदों में 2 चौके और एक छक्का लगाकर नाबाद 17 रन बनाए।

इससे पहले जमैका किंग्समेन ने 150 रन का स्कोर खड़ा किया। टीम के लिए सबसे ज्यादा रन माज सदाकत ने बनाए, जिन्होंने 34 गेंदों में 3 चौके और 2 छक्कों की मदद से 47 रन का पारी खेली। सदाकत के अलावा उस्मान खान 18 रन, हसन खान 16 रन,केसी कार्टी15 रन, किर्क मैकेंजी 11 आंद्रेस रसेल 10 और कप्तान रोवमैन पावेल ने 8 रन का योगदान दिया।

क्रिकेट के बाद अब टीवी पर रोहित शर्मा की नई पारी, नान-कमिटल टी-शर्ट ने मचाई हलचल

नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान रोहित शर्मा अब क्रिकेट के मैदान से निकलकर छोटे पर्दे पर नई पारी शुरू करने जा रहे हैं। अपनी आक्रामक बल्लेबाजी, शांत कप्तानी और मजाकिया अंदाज के लिए मशहूर रोहित अब पहली बार टीवी होस्ट की भूमिका में नजर आएंगे। उनका नया गेम शो फैमिली फुल हाउस 19 सितंबर 2026 से सोनी एंटरटेनमेंट टेलीविजन और सोनी लिव पर प्रसारित होने जा रहा है।

शो के सेट से सामने आई पहली झलक और पर्दे के पीछे के वीडियो ने प्रशंसकों की उत्सुकता बढ़ा दी है। शो के सेट पर रोहित के लिए खास लाउंज तैयार किया गया है, जिसे उनके क्रिकेट करियर की यादों से सजाया गया है। लाउंज की दीवार पर उनकी 45 नंबर की मशहूर जर्सी फ्रेम करके लगाई गई है। वहीं एक प्रमुख दीवार पर उनके चर्चित उपनाम हिटमैन को उकेरा गया है। एक शेल्फ पर उनका पसंदीदा बल्ला और हेलमेट

भी रखा गया है।

पूरे लाउंज को भारतीय क्रिकेट टीम से जुड़े गहरे नीले रंग में डिजाइन किया गया है। यह सेट रोहित के क्रिकेट सफर और उनके नए टेलीविजन अवतार के बीच खास कड़ी बनाता है। हालांकि शो के सेट से सामने आए एक वीडियो ने मनोरंजन से ज्यादा क्रिकेट प्रशंसकों का ध्यान खींच लिया है। वीडियो में रोहित सफेद टी-शर्ट पहने नजर आ रहे हैं, जिस पर अंग्रेजी में नान-कमिटल लिखा हुआ है। इसके बाद सोशल मीडिया पर इस शब्द को लेकर चर्चाएं शुरू हो गईं। कई प्रशंसक इसे भारतीय क्रिकेट टीम के मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर के पुराने बयान से जोड़कर देख रहे हैं। दरअसल, अक्टूबर 2025 में रोहित शर्मा और विराट कोहली के 2027 वनडे विश्व कप में खेलने को लेकर सवाल पूछे जाने पर अजीत अगरकर ने दोनों खिलाड़ियों की स्थिति को नान-कमिटल बताया था। अब रोहित की टी-शर्ट पर यही शब्द दिखाई देने के बाद कुछ प्रशंसकों ने इसे अगरकर के बयान पर परोक्ष प्रतिक्रिया या मजाकिया जवाब माना है।

हालांकि रोहित शर्मा की ओर से इस टी-शर्ट के संदेश को लेकर कोई आधिकारिक स्पष्टीकरण सामने नहीं आया है। क्रिकेट से टेलीविजन तक का यह सफर रोहित के लिए बिल्कुल नया अनुभव है। मैदान पर गेंदबाजों और विपक्षी टीम की रणनीति को समझने वाले रोहित अब स्टूडियो में दर्शकों का मूड समझकर उन्हें मनोरंजन से जोड़े रखने की चुनौती संभालेंगे।

उनकी स्वाभाविक हाजिरजवाबी और हास्यपूर्ण अंदाज को देखते हुए शो में उनका एक अलग रूप देखने को मिल सकता है। फैमिली फुल हाउस के जरिए रोहित शर्मा पहली बार क्रिकेट से अलग अपनी प्रस्तुति क्षमता दिखाते नजर आएंगे।

BOOK YOUR DISPLAY CLASSIFIED ADVERTISEMENTS AT
Timings : 9 am to 7 pm
Head office
SHREE SIDDIVINAYAK PUBLICATIONS,
Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,
APIE, Balanagar, Hyderabad - 500 037
City office
SHREE SIDDIVINAYAK PUBLICATIONS,
Plot No. A-23/5 & 6 2nd Floor,
APIE, Balanagar,
Hyderabad - 500 037
8688868345

शुभ लाभ
म्हारो भाग्यनगर
दैनिक हिन्दी शुभ लाभ, हैदराबाद, सोमवार, 14 सितंबर , 2026

शुभ लाभ
आपकी सेवा में
शुभ लाभ से जुड़ी किसी भी समस्या या सुझाव के लिए मो. 86888 68345 पर संपर्क करें ।

पित्ती ट्रस्ट एवं अग्रवाल सेवा दल का 172वां निःशुल्क मेगा स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित

153 लोगों ने लिया स्वास्थ्य शिविर का लाभ, 126 मरीजों की निःशुल्क नेत्र जांच

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। बदरीविशाल पन्नालाल पित्ती ट्रस्ट एवं अग्रवाल सेवा दल द्वारा सेंट्रल पीस एंड वेलफेयर सोसायटी के सहयोग से चिराग अली लेन, आबिड्स स्थित डायमंड जुबली हाई स्कूल में 172वां निःशुल्क मेगा स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया। शिविर में कुल 153 लोगों ने स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया।

अग्रवाल सेवा दल के अजीत गुप्ता द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, शिविर में किम्स सनशाइन अस्पताल द्वारा हड्डी, हृदय, ईसीजी, द्वि-आयामी इको, अस्थि घनत्व जांच, यादृच्छिक रक्त शर्करा, रक्तचाप एवं सामान्य चिकित्सा की सेवाएं प्रदान की गईं। सामान्य चिकित्सा में डॉ. लक्ष्मी एवं डॉ. चंटी, नर्सिंग स्टाफ निकिता, अनुषा, रानी एवं मल्लेश्वरी, द्वि-आयामी इको तकनीशियन भानुश्री, अस्थि घनत्व जांच तकनीशियन डेविड एवं मोहन तथा विपणन विभाग के उदय ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं।लायंस क्लब ऑफ हैदराबाद साधुराम आई हॉस्पिटल, दोमलगुडा द्वारा 126 रोगियों की निःशुल्क नेत्र जांच की गई। इनमें से 59 लोगों को निःशुल्क चश्मे वितरित किए गए, जबकि 13 लोगों के निःशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन की व्यवस्था की गई। इस अवसर पर अजीत कश्यप, रेहान, फैज़, के. भास्कर, साई एवं सलमान ने सहयोग प्रदान किया।

डॉ. अखिल क्लिनिक (पुरणदास रणछोड़दास) की ओर से डॉ. अखिल सुगंधी, डॉ. मीनल खेरिया सुगंधी एवं डॉ. यशवी ने सामान्य जांच की सेवा प्रदान की। फिजियोथेरेपी की सेवा बजाज फिजियो केयर की डॉ. मीता बजाज ने तथा दांतों की जांच की सेवा हाई टेक डेंटल केयर के डॉ. राजकुमार अग्रवाल एवं डॉ. दृष्टि अग्रवाल ने प्रदान की।

इस अवसर पर अकोला में चिकित्सा शिविरों तथा दिव्यांगों की सेवा में तत्पर रहने वाली श्रीमती विजया (अकोला) का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में पित्ती ट्रस्ट के चेयरमैन एवं अग्रवाल सेवा दल के सलाहकार शरद बी. पित्ती, अग्रवाल सेवा दल एवं शिविर संयोजक प्रदीप अग्रवाल, सुधीर गुप्ता, सुरेंद्र गोयल, रतन गुप्ता, अजीत गुप्ता, विनय सी. अग्रवाल एवं निखिल राणासरिया सहित अनेक लोगों ने सहयोग प्रदान किया।

स्थानीय भागीदार केंद्रीय शांति एवं कल्याण समिति के खैरताबाद जोन अध्यक्ष शशिकांत अग्रवाल, सिकंदराबाद जोन अध्यक्ष नारायण रेड्डी, हाफिज मुजफ्फर, संरक्षक चारमीनार क्षेत्र अध्यक्ष खाजा मोइज, अवैस मिर्जा, संयोजक जी. मनीला विजयालक्ष्मी, टी. सुनील कुमार, अमुदा लक्ष्मण राव, एस. मनोज कुमार, के. आनंद अम्मा, डी.बी. अनिल, आबिद अली, शेख कुथुद्दीन, धीरेन्द्र बियानी, मोहम्मद इस्माइल, एस. मुनि कुमार, बोंगोनी श्रीनिवास गौड़, संतोष कुमार अग्रवाल, गोपाल दास, बी. भगवान दास, जे. प्रेम दास, जी. मोहन राव, मेहर मिर्जा, अंजलि सुष्मिता, स्वयंसेवक योगेश अग्रवाल, सतीश गर्ग, सरला अग्रवाल, दीपा गर्ग, वंदना अग्रवाल, अजय तुलस्यान, पंकज संघी, समाजसेवी शंकरलाल यादव, घनश्याम यादव एवं पित्ती लेमिनेशन के सदस्यों ने अपना सहयोग प्रदान किया।

सभी के सहयोग से स्वास्थ्य जांच शिविर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। शिविर में कुल 153 लोगों ने विभिन्न स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ लिया।

कोरेमुला सीरवी समाज का बीज महोत्सव श्रद्धा-भक्ति के साथ सम्पन्न

आईमाताजी के 611वें अवतरण दिवस एवं मंदिर के 12वें वार्षिकोत्सव पर हुए धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजन

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। कोरेमुला स्थित सीरवी समाज की आस्था के केंद्र श्री आईमाता मंदिर में श्री आईमाता जी का 611वां अवतरण दिवस एवं 12वां वार्षिकोत्सव समाजबंधुओं के सान्निध्य में श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर भादवा सुदी बीज महोत्सव के तहत दो दिवसीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

जारी विज्ञप्ति में संरक्षक प्रभुराम परिहारिया, अध्यक्ष कालूराम काग एवं सचिव डायाराम लचेटा ने बताया कि भादवा सुदी बीज महोत्सव के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

शनिवार 12 सितंबर को श्री आईमाताजी का विशेष शृंगार किया गया। इसके बाद समाज के बाल कलाकारों द्वारा विशेष रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। रात्रि में पूजा-अर्चना एवं सांची ज्योत प्रज्वलित कर महाआरती की गई। इसके पश्चात जागरण का आयोजन हुआ, जिसमें निकिता सिंदड़ा सीरवी, मध्यप्रदेश तथा भंवरलाल सीरवी एवं पार्टी ने भक्ति भजनों के पुष्प अर्पित किए। भजनों से मंदिर परिसर का वातावरण भक्तिमय हो गया।

रविवार 13 सितंबर को समाजबंधुओं ने श्री आईमाताजी के चरणों में श्रद्धा के पुष्प एवं श्रीफल भेंट किए तथा सपरिवार महाप्रसादी का लाभ उठाया। इस अवसर पर सचिव डायाराम लचेटा ने समाज में किए गए विकासशील कार्यों से समाजबंधुओं को अवगत कराया।

अध्यक्ष कालूराम काग ने मंदिर निर्माण के लिए समाजबंधुओं से तन-मन-धन से सहयोग करने का आग्रह किया। उन्होंने समाजबंधुओं को बीज महोत्सव की बधाई देते हुए सभी का आभार प्रकट किया।

कोरेमुला बडेर के अध्यक्ष कालूराम काग ने संबोधित करते हुए कहा कि हैदराबाद में आईमाताजी के शिखरबद्ध नवनिर्मित मंदिर का निर्माण होने जा रहा है। यह एक बहुत ही सुंदर एवं भव्य मंदिर बनेगा। उन्होंने कहा कि हैदराबाद में यह पहला ऐसा मंदिर होगा, जिसमें सभी देवता विराजमान रहेंगे।

उन्होंने समाजबंधुओं से अपील करते हुए कहा कि इस भव्य मंदिर के निर्माण कार्य में सभी तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें। इस अवसर पर संरक्षक प्रभुराम परिहारिया ने भी मंदिर निर्माण कार्य के लिए समाजबंधुओं से तन-मन-धन से सहयोग करने का आग्रह किया। साथ ही बडेर प्रांगण में भव्य मंदिर निर्माण कार्य के लिए समाजबंधुओं से सहयोग का आह्वान किया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित संरक्षक प्रभुराम परिहारिया, अध्यक्ष कालूराम काग, उपाध्यक्ष वगताराम पंवार, राजाराम पंवार, सचिव डायाराम लचेटा, सह-सचिव राजाराम गहलोत, कोषाध्यक्ष पोकरराम पंवार, खेल मंत्री ओमप्रकाश हाम्बड़, सलाहकार रमेश हाम्बड़, पुनाराम हाम्बड़, कार्यकारिणी सदस्य ओगड़राम सैणचा, तेजाराम काग, जेरुपराम परेरिया, रताराम सोलंकी, छोगाराम गहलोत, बाबूलाल काग, भीकाराम पंवार, बाबूलाल परिहार, अर्जुनसिंह राठौड़, हुक्माराम सपेटा, देवाराम परिहारिया, प्रकाश खण्डाला, पुनमचन्द्र पंवार, खीवाराम गहलोत, ताराराम भायल सहित बड़ी संख्या में समाजबंधु उपस्थित रहे।

मंच का संचालन सचिव डायाराम लचेटा ने किया। अध्यक्ष कालूराम काग के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

बाबा रामदेव पीर का आशीर्वाद सेवा और मानवता की राह दिखाता है : भाकर राम कुमावत

हैदराबाद। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में रविवार को पब्लिक गार्डन स्थित पिलर नंबर 1261-ए के पास जारी नियमित अन्नदान कार्यक्रम में लोकदेवता बाबा रामदेव पीर महाराज का प्राकट्य दिवस (भादवा बीज) श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बाबा रामदेव जी महाराज को श्रद्धापूर्वक स्मरण करते हुए उनके चरणों में नमन किया गया तथा सभी के सुख, समृद्धि, शांति एवं खुशहाली की मंगलकामना की गई।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए भाकर राम कुमावत ने कहा कि लोकदेवता बाबा रामदेव जी महाराज करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र हैं। उनका संपूर्ण जीवन मानवता, समानता, भाईचारे और सेवा का संदेश देता है। बाबा रामदेव जी ने समाज के प्रत्येक वर्ग को साथ लेकर चलने और जरूरतमंदों की सेवा करने की प्रेरणा दी। उनके बताए मार्ग पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा और भक्ति है।

उन्होंने कहा कि बाबा रामदेव जी महाराज के प्राकट्य दिवस के पावन अवसर पर संसदीय क्षेत्र की जैतारण विधानसभा के बिराटिया खुर्द स्थित बाबा रामदेव जी मंदिर में दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया एवं सभी के सुख, समृद्धि और खुशहाली की कामना की। उन्होंने कहा कि बाबा रामदेव जी का आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बना रहे और समाज में प्रेम, सद्भाव तथा भाईचारे की भावना निरंतर मजबूत होती रहे।

भाकर राम कुमावत ने कहा कि राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद द्वारा नियमित अन्नदान और सेवा कार्य बाबा रामदेव जी के मानवता एवं सेवा के संदेश को आगे बढ़ाने का एक सार्थक प्रयास है। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित सदस्यों ने भी बाबा रामदेव जी महाराज को श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए उनके आदर्शों को जीवन में अपनाने का संकल्प व्यक्त किया। इस अवसर पर अन्नदान कार्यक्रम में आने वाले लोगों को भोजन वितरित किया गया।

कार्यक्रम में राम प्रकाश अग्रवाल, महेश गुप्ता, सुशील गुप्ता, मनीष गुप्ता, निशा गुप्ता, रोहित अग्रवाल, सुमन अग्रवाल, संजय गोयल, किरण गोयल, भाकर राम कुमावत, कमला कुमावत एवं जगत नारायण अग्रवाल सहित राधे-राधे ग्रुप के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

संगारेड्डी में श्रद्धा-भक्ति के साथ सम्पन्न हुआ बीज महोत्सव

संगारेड्डी, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। संगारेड्डी स्थित श्री आईमाताजी मंदिर (बडेर) में श्री आईमाताजी का 611वां अवतरण दिवस एवं मंदिर का 12वां वार्षिकोत्सव भादवा सुदी बीज महोत्सव के रूप में श्रद्धा, आस्था और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। सीरवी समाजबंधुओं की सहभागिता में आयोजित दो दिवसीय धार्मिक कार्यक्रम के दौरान मंदिर परिसर में पूजा-अर्चना, भजन-संध्या, जागरण, हवन तथा विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने आईमाता के दर्शन कर परिवार एवं समाज की सुख-समृद्धि की मंगलकामना की।

जारी प्रेस विज्ञप्ति में मंदिर अध्यक्ष प्रभुराम हाम्बड़, सचिव पीताराम चोयल तथा बडेर के मनोनीत सदस्य रुगाराम परिहारिया एवं घीसाराम काग ने बताया कि हर वर्ष की परंपरा के अनुसार इस बार भी भादवा सुदी बीज महोत्सव श्रद्धापूर्वक आयोजित किया गया।

शनिवार 12 सितंबर की शाम 6.15 बजे से रात 8.30 बजे तक महिला मंडल एवं नन्हे-मुन्ने बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने उपस्थित श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। कार्यक्रम का संचालन पीताराम चोयल एवं लिखमाराम शानपुरा ने किया। इसके पश्चात श्रद्धालुओं के लिए भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई।

रात 9.15 बजे विशाल भजन-जागरण का शुभारंभ गणेश वंदना एवं श्री आईमाताजी की विधिवत पूजा-अर्चना के साथ हुआ। भजन सम्राट जुगलकिशोर परिहार एंड पार्टी एवं गीता मेवाड़ी ने आईमाता के चरणों में भक्ति के भजनों के पुष्प अर्पित किए। भजनों में आईमाता की महिमा, भक्ति एवं आध्यात्मिक भावों की प्रस्तुति ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। श्रद्धालु देर रात तक भजनों की धुन पर नाचते-गाते रहे और आईमाता के जयकारे लगाते रहे।

रविवार 13 सितंबर की प्रातः शुभ वेला में मंदिर परिसर में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान एवं पूजा-अर्चना की गई। इस दौरान समाजबंधुओं ने परंपरानुसार विभिन्न धार्मिक बोलियों में उत्साहपूर्वक भाग लिया और पूजा एवं धार्मिक सेवाओं का लाभ प्राप्त किया। मुख्य पट्ट द्वार खोलने की बोली ढगलारामजी गेहलोत, संगारेड्डी ने ली। हवन के मुख्य यज्ञमान का लाभ प्रभुरामजी हाम्बड़, पटानचेरू ने प्राप्त किया। श्री गणेशजी की पूजा की बोली मल्लारामजी परिहारिया, चेवेल्ला तथा श्री हनुमानजी की पूजा की बोली हीरालालजी काग, जाहिराबाद ने ली।

अखंड ज्योति का लाभ नाथुराम मुलेवा, जोगीपेट ने प्राप्त किया। श्री आईमाताजी की पूजा-अर्चना का लाभ मल्लारामजी राठौड़, ईसनापुर ने लिया। खेतलाजी महाराज की पूजा की बोली गोपारामजी काग, विकाराबाद तथा राधा-कृष्णजी की पूजा की बोली हीरालालजी काग, जाहिराबाद ने ली।

शीतला माताजी एवं तुलसी माता की पूजा का लाभ गोपारामजी काग, विकाराबाद ने प्राप्त किया। महाप्रसादी का कड़ाव खोलने की बोली नैनारामजी राठौड़, लिंगमपल्ली ने ली। झालर-टंकोरा एवं आरती का लाभ गेनारामजी राठौड़, संगारेड्डी ने प्राप्त किया।

वार्षिक प्रसाद की बोली रतनलालजी काग, ईसनापुर, वार्षिक पुष्पाहार की बोली मोहनलालजी लेरचा, लिंगमपल्ली तथा वार्षिक नारियल की बोली नेमारामजी राठौड़, ईसनापुर ने ली। वार्षिक द्विवेल का लाभ रामलालजी सेनचा ने परिवार सहित पूजा-अर्चना कर प्राप्त किया।धार्मिक आयोजन के दौरान मंदिर परिसर में आस्था और सामाजिक एकजुटता का विशेष वातावरण रहा। अध्यक्ष प्रभुराम हाम्बड़ की अध्यक्षता में पधारे सम्मानित अतिथियों एवं समाजबंधुओं का कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा स्वागत किया गया।

कार्यक्रम में उपाध्यक्ष रमेश काग, ढगलाराम गेहलोत, सचिव पीताराम चोयल, सह-सचिव प्रभुराम काग, कोषाध्यक्ष जीव-राम चोयल, ओमप्रकाश हाम्बड़, संचार मंत्री रतनलाल काग, मोदी हुराराम गेहलोत सहित नवयुवक मंडल अध्यक्ष सुरेश परिहारिया, उपाध्यक्ष गेनाराम बर्फा, सचिव थानाराम राठौड़, सह-सचिव गेनाराम पंवार उपस्थित रहे।महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती संतोषदेवी परिहारिया, सचिव श्रीमती लीलादेवी परिहार सहित बड़ी संख्या में समाजबंधुओं ने भी धार्मिक आयोजन में सहभागिता निभाई।

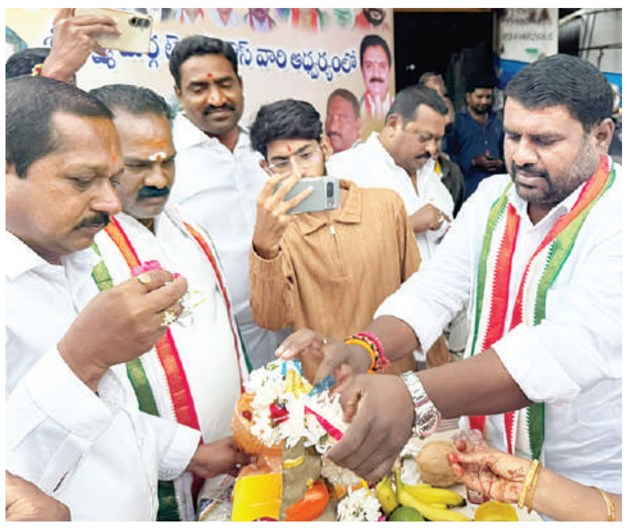

निजामाबाद में 37वें डिवीजन के कांग्रेस पार्टी प्रभारी एवं जिला कांग्रेस अध्यक्ष कटपल्ली नागेश रेड्डी ने नगर महापौर उमा रानी एवं कांग्रेस पार्टी के सदस्यों के साथ मिट्टी की विनायक प्रतिमाओं का वितरण किया। इस अवसर पर प्रवीणा, सह-विकल्प सदस्य बोब्बाली मुरली, स्थानीय नेता एवं बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे।

आज का राशिफल

मेष – चू,चे,चो,ला,लि,लू,ले,लो,अ

आज खर्चा ज्यादा होगा स्वास्थ्य भी चिंतित करेगा इसलिए समजदारी से कार्यो का संचालन करें। आपका जीवन साथी आपकी और परिवार की पूरी देखभाल करेंगे आप को भी खुशी होगी। आपके दुश्मन आपके खिलाफ गुप्त रूप से काम कर सकते हैं और आपको परेशानी दे सकते हैं. आज कोई दुखद घटना आप को परेशान करेगी यात्रा का योग नही हैं फिलहाल टाल दें। मृत्युंजय यंत्र का जप करें ब्राह्मण बटुक को दूध का दान करें।

वृषभ – इ,उ,ए,ओ,वा,वि,वु,वे,वो

आज आपका दिन बदलाव का हैं परिवर्तन होगा सीनियर्स आपके कार्यों की प्रशंसा होगी. बचपन के किसी मित्र से आपकी मुलाकात होगी. दोस्त के साथ कहीं घूमने की प्लानिंग करेंगे. आपका मन प्रसन्न रहेगा. धैर्य पूर्वक किसी कार्य पर किया गया विचार बहुत फलदायी रहेगा. सोचे हुए कार्य पूरे होंगे. बिजनेस में कई नए मौके आपको मिलेंगे. अपने कारोबारी पार्टनर के साथ सही तालमेल रहेगा अपने परिवार के साथ किसी रेस्टोरेंट में लंच करने भी जा सकते हैं. शिवजी को जलधारा अर्पित करें बिल्वपत्र चढाए।

मिथुन – क,कि,कृ,घ,ड़,छ,के,को,ह

आप को साझेदारी वाले कारोबार मे बहुत सोचसमझकर निर्णय लेने होंगे जीवनसंगिनी का पगपग पर साथ मिलेगा। कर्मचारियों के साथ आप असहज महसूस करेंगे . आज कहीं प्राकृतिक सौंदर्ययुक्त स्थान पर घूमने का आनन्द उठाएंगे. विद्यार्थियों के लिए समय मध्यम है. आपका रोमांटिक अंदाज दाम्पत्य जीवन को प्यार से भर देगा. समाज में मान सम्मान बढ़ेगा. संबंधो को बहुत ही नाजुकता से निभाने की जरुरत हैं घर मे पौधरोपण करें सुबह तुलसी को जल सींचे।

कर्क – ही,हु,हे,हो,डा,डी,डू,डे,डो

आप अविवाहित है तो दुर्गा जीको घी का दीपक प्रज्वलित करें मंत्र का जप करें सम्बन्ध हो सकता हैं आप को रचनात्मक क्षेत्रों से जुड़े हैं तो अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के अवसर मिलेंगे और आकर्षक सौदे हाथ लग सकते हैं. आप स्वयं के लिए यश एव कीर्ति भी अर्जित कर पाएंगे. आपके काम और व्यवसाय में सकारात्मक विकास होगा. अगर आप नौकरी या व्यवसाय बदलना चाहते हैं, तो आपको सफलता मिलेगी. आप आध्यात्मिक और धार्मिक गतिविधियों की ओर आकर्षित होंगे. आप के दिन का उतरार्ध सुखमय बीतेगा।

सिंह – म,मी,मू,मे,मो,टा,टी,टू,टे

आज सामाजिक कार्यों हिस्सा लेने से दिन ठीक बीतेगा आप को भी कार्य के प्रति रुचि भी रहेगी . कार्यस्थल पर किसी सहयोगी से वाद–विवाद की स्थिति बन सकती है. किसी से बिना वजह आपको उलझने से बचना चाहिए. परिवार वालों के साथ किसी धार्मिक स्थल की यात्रा पर जा सकते हैं. आपको कोई नया काम सिखने का अवसर मिल सकता है. कोई व्यक्ति आपकी योजनाओं को बिगाड़ने की कोशिश कर सकता है. मा भगवती को कमल का पुष्प अर्पित करें धनकोष बढेगा मन भी प्रफुल्लित रहेगा।

कन्या – टो,प,पी,पू,ष,ण,ठ,पे,पो

आज कुछ नया निवेश करना जोखिम भरा हो सकता हैं फिलहाल निवेश की योजना को टालदें यात्राका योग बन रहा हैं संभव हो सके तो अचल संपत्ति के विषय में आज चर्चा टाल दें. रात्रि में कुछ लोगों पर धन खर्चा करना पड़ सकता है. रोजी व रोजगार में किया गया निवेश लाभप्रद रहेगा. कुछ लोगों के जीवन में नये अवसर आएंगे जिन्हे नजरअंदाज न करें अन्यथा बाद में आत्मग्लानि होगी. आपके स्वभाव की सबसे खास बात संतुलित रहना है.शक्कर की मिठाई कन्याओं को खिलाएं रुके हुए कार्य पूरे होंगे।

तुला – र,री,रू,रे,रो,ता,ति,तू,ते

आज का दिन सकारात्मक रहेगा कार्य के परिणामदायक सुखद रहेंगें . सामाजिक कार्य या राजनीति से जुड़े लोग कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल करेंगे. आप में से कुछ नवीन संपर्क स्थापित कर पाएंगे. रचनात्मक क्षेत्रों में आप असाधारण रूप से अच्छा करेंगे. परीक्षा या प्रतियोगिता के माध्यम से नौकरी की तलाश करने वालों को शुभ परिणाम प्राप्त होंगे. कोर्ट में लंबित कोई संपत्ति संबंधी मामला आपके पक्ष में जाएगा. घरेलू वातावरण अच्छा रहेगा डीनर को कुछ समय के लिए रोग दें आपका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा.।

वृश्चिक – तो,न,नी,नू,ने,नो,या,यी,यू

आज का दिन उर्जा से भरा रहेगा कोई शुभ समाचार मिलेगा आपके मन में किसी की मदद करने का भाव आ सकता है. आपकी रचनात्मक प्रतिभा खुलकर सामने आ सकती है. आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी. आप किसी धार्मिक यात्रा की योजना बना सकते हैं. आप खुद को सेहतमंद महसूस करेंगे. समाज में आपका मान–सम्मान बढ़ेगा. आगे बढ़ने के आपको नए मौके मिल सकते हैं. आज आप जिससे भी बात करेंगे, उसे अपनी राय से सहमत कर सकते हैं. शाम के वक्त शिवालय मे दर्शन करने जाए नारियल अर्पण करें।

धनु – ये,यो,भ,भी,भू,धा,फा,ढा,भे

आज कार्य मे रुकावटें तो जरुर आंएगी परन्तु दृढसंकल्पित होकर आगे बढते जाए. सफलता निश्चित होगी . नौकरी पेशावालों की पदोन्नति की संभावनाएं हैं. आपका साथी आपके विचारों के प्रति ग्रहणशील होगा. अपने पार्टनर के साथ मिलकर आप अपने संसाधनों को एकजुट करने में सफल रहेंगे. जीवन के प्रति गंभीरता को बनाये रखने की जरुरत है. कार्य क्षेत्र में सहकर्मियों का आपको सहयोग मिल सकता है. डिनर के वक्त कोई कारोबारी चर्चा नही करें केवल परिवार के साथ भोजन का आनंद उठाएं।

मकर – भो,ज,जी,खि,खू,खे,खो,ग,गि

आज स्वभाव कुछ मे चिडचिडापन रहेगा लोगों से वाद विवाद होगा , किन्तु आपको शांत और संयम रखने की ज़रूरत है. जल्द ही सब ठीक हो जाएगा. आपके बच्चे आपका ध्यान रखेंगे. आपको दफ़्तर में आपके सहयोगियों का सहयोग मिलेगा. वरिष्ठ आपके काम को सराहेंगे. वित्तीय फैसले लेने के लिए यह बहुत अच्छा वक़्त है. प्रेम प्रसंग के मामले में आज का दिन अनुकूलता लिए हुए है. खास कर वो लोग जो समाज की मर्यादाओ को अधिक महत्त्व नहीं देते ऐसे लोगों से दूरी बनाए रखें। गुरुदेव के मंत्र का जप करें।

कुम्भ – गु,गे,गो,सा,सी,सू,से,सो,द

आज खुश होने वाला दिन. रूका हुआ धन वापस मिल जायेगा. आपके अधूरे काम आसानी से पूरे होंगे. व्यापार में साझेदारी से आपको लाभ होगा. समाज के कार्यों में आप आगे रहेंगे. योजनाबद्ध तरीके से काम करने से आपको लाभ की प्राप्ति होगी. आपकी यात्रा सुखद रहेगी. आपके काम से सभी लोग प्रसन्न रहेंगे. स्टूडेंट्स को पढ़ाई–लिखाई में साथियों से मदद मिलेगी. आपका दाम्पत्य जीवन ख़ुशी से भरा रहेगा. सुबह भोर मे ॐ नम: शिवाय मंत्र का उच्चारण से कीर्तन करें।

मीन – दी,दू,थ,झ,ञ,दे,दो,चा,ची

आज कारोबार की स्थिति ठीक है परन्तु निवेश टाल दें क्योंकि आपकी परेशानी बढ़ने की भी संभावना है. दिनभर संभलकर रहना होगा. घर–परिवार की चिंता बढ़ सकती है. कामकाज में नए बदलाव करने से बचना होगा. उच्च अधिकारियों से अच्छे सम्बन्ध आपको बिजनेस में लाभ प्राप्त करवाएंगे. संतांन पक्ष की ओर से चिंताएं दूर होंगी. वैवाहिक जीवन आनंद पूर्वक बीतेगा. स्टूडेंट्स के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी बस किसी भी काम में लापरवाही न बरतें.आलस्य को छोड दें भविष्य सुनहरा होगा।

आज का पंचांग

दिनांक : 14 सितंबर 2026 , सोमवार
विक्रम संवत : 2083
मास : भाद्रपद , शुक्ल पक्ष
तिथि : तृतीया प्रातः 07:08 तक
नक्षत्र : चित्रा दोपहर 01:55 तक
योग : ब्रह्म दोपहर 12:46 तक
करण : गर प्रातः 07:08 तक
चन्द्रराशि : तुला
सूर्योदय : 06:04 ,सूर्यास्त 06:18 (हैदराबाद)
सूर्योदय :06:08 , सूर्यास्त 06:21 (बैंगलोर)
सूर्योदय : 06:01 , सूर्यास्त 06:13 (तिरुपति)
सूर्योदय : 05:55, सूर्यास्त 06:09 (विजयवाड़ा)

शुभ चौघड़िया
अमृत : 06:00 से 07:30
शुभ : 09:00 से 10:30
चल : 01:30 से 03:00
लाभ : 03:00 से 04:30
अमृत : 04:30 से 06:00
राहुकाल : प्रातः 07:30 से 09:00
दिशाशूल : पूर्व दिशा
उपाय : दही धनिया खाकर यात्रा का आरंभ करें
दिन विशेष : हरितालिका तीज , श्री गणेश चतुर्थी, भद्रा रात्रि 07:18 से , चन्द्र दर्शन निषेध चन्द्र अस्त रात्रि 08:44

* पाण्डित्य विषय में सम्पर्क करें *

पं.चिदम्बर मिश्र (टिल्लू महाराज)
हमारे यहाँ पाण्डित्य पूर्ण यज्ञ अनुष्ठान, भागवत कथा एवं मूल पारायण, वास्तुशान्ति, गृहप्रवेश,शतचंडी, विवाह, कुंडली मिलान, नवग्रह शान्ति, ज्योतिष सम्बन्धी शंका समाधान किए जाते हैं
फक्कड़ का मन्दिर, रिकाबगंज, हैदराबाद, (तेलंगाना)
9246159232, 9866165126
chidamber011@gmail.com

शमसाबाद में श्रद्धा-भक्ति से मनाया मां आईजी का 611वां अवतरण दिवस

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। सीरवी समाज शमसाबाद बडेर में मां आईजी का 611वां अवतरण दिवस एवं 12वां वार्षिक सम्मेलन दो दिवसीय कार्यक्रम के रूप में उत्साह, श्रद्धा और भक्तिभाव के साथ मनाया गया। इस अवसर पर श्री आईमाताजी के मंदिर को रंग–बिरंगे फूलों और रोशनी से आकर्षक ढंग से सजाया गया।

आज यहां जारी प्रेस विज्ञप्ति में सचिव भोलाराम पंवार एवं सह–सचिव नरेश परिहार ने बताया कि समाजबंधुओं के सान्निध्य में आयोजित महोत्सव के दौरान मंदिर परिसर में विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यक्रम हुए।

सामूहिक आरती के बाद हुआ भजन–जागरण

शनिवार शाम 7.15 बजे सभी भक्तों ने श्री आईमाताजी की भावपूर्ण सामूहिक आरती की। तत्पश्चात सभी भक्तों ने श्री आईमाताजी के पसंदीदा व्यंजन लापसी एवं कढ़ी का प्रसाद के रूप में आनंदपूर्वक ग्रहण किया। रात 8.15 बजे महिला मंडल द्वारा हरजस (भजन) का शुभारंभ किया गया। लगभग 9.15 बजे भजन गायक श्री विशाल श्रीमाली एवं पार्टी द्वारा सुमधुर वाणी में भजनों की प्रस्तुति दी गई।

रात्रि 10.30 बजे तक ऑनलाइन चल रही सभी बोलियों को पूर्ण विराम दिया गया। माताजी के पट खोलने की बोली हरजीराम हाम्बड़, माताजी के तिलक की बोली राजूराम हाम्बड़, माताजी के हार की बोली भेराराम परिहार, माताजी की चुनड़ी की बोली भुराराम परिहार, माताजी के नारियल–अगरबत्ती की बोली धर्माराम काग, पांचों भगवान की पोशाक की बोली रुपाराम गेहलोत, खेतलाजी के पट–हार–अगरबत्ती की बोली रमेश काग, गणेशजी के पट–हार–अगरबत्ती की बोली रुपाराम गेहलोत, हनुमानजी के पट–हार–अगरबत्ती की बोली आसाराम गेहलोत, रामदेवजी के हार–अगरबत्ती की बोली आसाराम गेहलोत तथा महाप्रसादी की बोली धर्माराम काग ने ली। सभी भक्तों ने बोलियों में बढ़–चढ़कर भाग लिया।

नवनिर्वाचित समितियों ने ली तीन वर्ष सेवा की शपथ

रविवार को प्रातः पूजा–अर्चना, ज्योत प्रज्ज्वलन एवं महाआरती के पश्चात समाजबंधुओं एवं बोलीदाताओं ने सपरिवार अपनी–अपनी बोली से संबंधित सभी प्रतिष्ठित देवी–देवताओं की श्रद्धा एवं भावपूर्ण तरीके से पूजा–अर्चना संपन्न कराई।

इसके पश्चात सचिव भोलाराम पंवार ने मंचीय कार्यक्रम का शुभारंभ किया। मुख्य अतिथि तेलंगाना महासभा के प्रांतीय अध्यक्ष हरजीराम काग, बडेर अध्यक्ष आसाराम गेहलोत, सचिव भोलाराम पंवार, नवनिर्वाचित अध्यक्ष भुराराम परिहार, सचिव हरिराम परिहारिया, कोषाध्यक्ष राजूराम परिहार, मारवाड़ गुड़िया ग्राम के पंच तिलोक रामजी बर्फा, सीरवी छात्रावास सोजत रोड के उपाध्यक्ष कन्हैयालाल गेहलोत, शिक्षा समिति के अध्यक्ष केसाराम काग, नवनिर्वाचित शिक्षा समिति के सचिव सोहनलाल बर्फा, महिला मंडल अध्यक्षा पारी देवी काग, सचिव भारती परिहारिया, नवनिर्वाचित अध्यक्षा संतोष देवी परिहार, सचिव कमला देवी पंवार तथा पूर्व रायपुर पंचायत समिति सदस्य गौरी देवी काग मंच पर विराजमान रहे।

महिला मंडल सचिव भारती परिहारिया के नेतृत्व में नन्हे–मुन्ने बाल कलाकारों ने राजस्थान की संस्कृति की झलक अपने सामाजिक परिवेश में शालीनता एवं भक्तिभाव के साथ नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत की। उनकी प्रस्तुतियों ने उपस्थित समाजबंधुओं एवं अतिथियों का मन मोह लिया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान अतिथि पैदा सापुरा तांडा के सरपंच रवि नायक एवं उपसरपंच के प्रतिनिधि गोपाल नायक का राजस्थानी साफा एवं शॉल द्वारा स्वागत किया गया। सरपंच रवि नायक ने सीरवी समाज की संस्कृति की प्रशंसा करते हुए श्री आईमाताजी की अखंड ज्योति को बार–बार नमन किया तथा सीरवी समाज शमसाबाद के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित कीं।

बाहर से पधारे दाहिमा समाज के सोहनलालजी, दिलीपजी एवं समस्त दाहिमा समाज की कार्यकारिणी का भी साफा एवं शॉल द्वारा हार्दिक स्वागत किया गया।

लगभग दो बजे सीरवी समाज शमसाबाद बडेर की नवनिर्वाचित कार्यकारिणी समिति, शिक्षा समिति एवं महिला मंडल के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने मां श्री आईजी की अखंड ज्योति को साक्षी मानकर आगामी तीन वर्षों तक समाज के प्रति निष्ठा एवं ईमानदारी से कार्य करने की शपथ ली। साथ ही वर्तमान में कार्यरत तीनों समितियों को विदाई दी गई।

कार्यकारिणी समिति, शिक्षा समिति एवं महिला मंडल के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा बोलीदाताओं का साफा एवं शॉल से बहुमान किया गया। वहीं सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी नन्हे–मुन्ने बालक–बालिकाओं, कलाकारों एवं नृत्यांगनाओं को उपहार एवं राशि देकर पुरस्कृत किया गया।

समाजबंधुओं एवं भक्तों के लिए कार्यक्रम स्थल पर भोजन प्रसादी की व्यवस्था की गई।

समाज के चहुंमुखी विकास का दिया भरोसा

नवनिर्वाचित अध्यक्ष भुराराम परिहार ने स्वागत भाषण में समाजबंधुओं एवं भक्तों को भादवा सुदी दूज की बधाई देते हुए कहा कि एक ही भवन के नीचे इस प्रकार का महोत्सव मनाना समाज के लिए बड़े ही गर्व की बात है। उन्होंने आगामी कार्यकाल में समाज के चहुंमुखी विकास के कार्य करने का आश्वासन दिया।

नवनिर्वाचित सचिव हरिराम परिहारिया ने भादवा सुदी दूज की बधाई देते हुए समाजबंधुओं की सुख–समृद्धि की कामना की। उन्होंने कहा कि हम सभी मिलकर कार्य करेंगे और सभी के सहयोग से समाजहित के कार्यों को आगे बढ़ाते रहेंगे।

मुख्य अतिथि एवं प्रांतीय अध्यक्ष हरजीराम काग ने अपने उद्बोधन में भादवा सुदी बीज की हार्दिक शुभकामनाएं दीं तथा समाज की नवनिर्वाचित तीनों समितियों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि तीनों समितियों को साथ मिलकर हर कार्य को पूर्ण करना है और समाज में नया आयाम स्थापित करना है। तभी एक विकसित सीरवी समाज का निर्माण होगा।

वर्तमान अध्यक्ष आसाराम गेहलोत ने कहा कि नई कार्यकारिणी को समाज के विकासशील कार्यों में हरसंभव सहयोग किया जाएगा।

सचिव भोलाराम पंवार ने समाजबंधुओं को दूज की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि पिछले तीन वर्षों के कार्यकाल में सभी भाई–बन्धुओं का सराहनीय सहयोग रहा है। उन्होंने सभी का हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करते हुए साधुवाद दिया।

इस महोत्सव में समाज की कार्यकारिणी समिति, शिक्षा समिति एवं महिला मंडल के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों के साथ समाज के सभी भाई–बन्धुओं का सराहनीय सहयोग एवं मेहनती उपस्थिति रही। श्रद्धा, भक्ति, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और सामाजिक एकजुटता के वातावरण में दो दिवसीय बीज महोत्सव सम्पन्न हुआ।

मल्लापुर में सीरवी विकास मंडल का भादवा सुदी बीज महोत्सव संपन्न

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। मल्लापुर स्थित श्री आईमाताजी मंदिर में श्री आईमां के 611वें अवतरण दिवस एवं 10वें वार्षिकोत्सव के तहत आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत भादवा सुदी बीज महोत्सव भव्य रूप से मनाया गया। कार्यक्रम में समाजबंधुओं ने सपरिवार भाग लेकर धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों का लाभ लिया।

जारी प्रेस विज्ञप्ति में अध्यक्ष तुलसाराम सिंदड़ा और सचिव ओकाराम ने बताया कि शनिवार, 12 सितंबर को भादवा सुदी एकम के अवसर पर श्री आईमाताजी मंदिर को पुष्प मालाओं और आकर्षक रोशनी से सजाया गया तथा श्री आईमाताजी का विशेष शृंगार किया गया। दोपहर 2 बजे से महिला मंडल की ओर से विशेष रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें समाज के नन्हे–मुन्ने बच्चों ने शानदार प्रस्तुतियां देकर समाजबंधुओं का भरपूर मनोरंजन किया।

सायं 5.15 बजे से पूजा–अर्चना, सांची ज्योत प्रज्वलित करने और महाआरती के पश्चात जागरण का आयोजन किया गया। इस दौरान श्री आईमाता भजन मंडली ने आईमां के चरणों में भजनों के पुष्प अर्पित किए।

रविवार, 13 सितंबर को भादवा सुदी बीज के अवसर पर प्रातःकाल समाजबंधुओं ने श्री आईमाताजी के चरणों में श्रद्धा के पुष्प एवं श्रीफल अर्पित किए। इसके बाद महाआरती की गई। समाजबंधुओं ने श्री आईमाताजी के दर्शन एवं प्रसाद का लाभ लिया।

कार्यक्रम में पधारे सम्मानित अतिथियों एवं समाजबंधुओं का विशेष सम्मान किया गया। समाज के युवा वक्ताओं ने अपने वक्तव्यों के माध्यम से समाज में नई ऊर्जा का संचार करने का प्रयास किया। कोषाध्यक्ष नेमीराम हाम्बड़ ने आय–व्यय का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम स्थल पर पधारे समाजबंधुओं के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था की गई थी। इसमें समाजबंधुओं ने सपरिवार पहुंचकर प्रसादी का लाभ लिया। महिला मंडल अध्यक्ष पार्वती देवी पंवार एवं महिला मंडल सचिव कविता चोयल ने सभी को भादवी बीज की शुभकामनाएं दीं।

अध्यक्ष तुलसाराम सिंदड़ा ने समाजबंधुओं को बीज महोत्सव की शुभकामनाएं देते हुए कार्यक्रम में पधारे सभी समाजबंधुओं का तहदिल से आभार प्रकट किया। मंच का संचालन सुरेश सैणचा ने शानदार एवं व्यवस्थित तरीके से किया। सचिव ओकाराम पंवार एवं सह–सचिव सुरेश सैणचा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

26 शिक्षकों को गुरु गौरव सम्मान

बीकानेर, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। लोकराग फाउंडेशन एवं बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. श्याम अग्रवाल के संयुक्त तत्वावधान में गुरु गौरव सम्मान समारोह आयोजित किया गया। समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले 26 शिक्षकों को उनके समर्पण, सेवाभाव, नवाचार एवं विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में योगदान के लिए सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि संभागीय आयुक्त विश्राम मीणा ने कहा कि शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कार, चरित्र निर्माण और समाज को दिशा देने का आधार है। शिक्षक शिक्षित समाज और विकसित भारत की नींव तैयार करते हैं। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. डॉ. सुमंत व्यास एवं साहित्यकार बुलाकी शर्मा ने भी विचार रखे। समारोह में अमित सोनी, सुरेंद्र सोलंकी, रमाकांत सिंह बिट्ठू, शफी मोहम्मद, हर्ष बाला पाराशर, डॉ. वर्षा मक्कड़, राजीव गौतम, डॉ. हुकमचंद चौधरी, आरिफ अली, अमीना फातिमा सहित अन्य शिक्षकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन रेखा आचार्य ने किया। आयोजन में शांतिलाल भोजक एवं राहुल मरवाह का विशेष योगदान रहा।

प्रथम पृष्ठ का शेष

मोदी...

प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंतोनियो गुतारेस से भी बातचीत की। इस दौरान दुनिया में जारी संघर्षों, बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार और विकासशील देशों से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई।

सात साल बाद भारत आए जिनपिंग

शनिवार को प्रधानमंत्री मोदी की द्विपक्षीय बैठकों का सबसे व्यस्त दौर देखने को मिला। उन्होंने इथियोपिया के प्रधानमंत्री अबी अहमद अली, मलेशिया के प्रधानमंत्री अनवर इब्राहिम, अबू धाबी के युवराज शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद और वियतनाम के प्रधानमंत्री फाम मिन्ह चिन्ह से मुलाकात की।

इसके बाद शाम को प्रधानमंत्री मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच अहम बैठक हुई। जिनपिंग करीब सात साल बाद भारत पहुंचे थे। इससे पहले वह अक्टूबर 2019 में प्रधानमंत्री मोदी के साथ मामल्लपुरम में अनौपचारिक शिखर सम्मेलन के लिए भारत आए थे। विदेश मंत्रालय के मुताबिक, मोदी और जिनपिंग ने भारत–चीन संबंधों में धीरे–धीरे हो रहे सुधार का स्वागत किया। दोनों नेताओं ने इस बात पर सहमति जताई कि भारत और चीन को प्रतिद्वंद्वी के बजाय साझेदार के रूप में आगे बढ़ना चाहिए।

हालांकि, प्रधानमंत्री मोदी ने साफ किया कि द्विपक्षीय संबंधों को लगातार आगे बढ़ाने के लिए सीमा पर शांति और स्थिरता जरूरी है। दोनों नेताओं के बीच व्यापार, बाजार तक पहुंच, आपूर्ति शृंखला और दोनों देशों के नागरिकों की आवाजाही बढ़ाने पर भी चर्चा हुई।

वैश्विक दक्षिण पर भारत का जोर

रविवार को भी प्रधानमंत्री की बैठकों का सिलसिला जारी रहा। उन्होंने कजाकिस्तान के राष्ट्रपति कासिम–जोमार्ट टोकायेव से मुलाकात की। कजाकिस्तान इस समय यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन की अध्यक्षता भी कर रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने फिलीपींस, मिस्र, दक्षिण अफ्रीका, बुरुंडी, नाइजीरिया और युगांडा के नेताओं और प्रतिनिधियों के साथ भी बातचीत की। मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल–सिसी और दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा के साथ बातचीत में द्विपक्षीय सहयोग के साथ वैश्विक दक्षिण की प्राथमिकताओं पर विशेष जोर रहा। ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डि सिल्वा और सऊदी अरब के शीर्ष नेतृत्व ने सम्मेलन में हिस्सा नहीं लिया। दोनों देशों का प्रतिनिधित्व उनके विदेश मंत्रियों ने किया।

ब्रिक्स के मंच से भारत ने आगे बढ़ाया अपना एजेंडा

औपचारिक द्विपक्षीय बैठकों के अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने कई नेताओं और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ छोटी अनौपचारिक बातचीत भी की। उन्होंने न्यू डेवलपमेंट बैंक के अधिकारियों और ब्रिक्स व्यापार मंच के प्रतिभागियों से भी संवाद किया। भारत ने अपनी ब्रिक्स अध्यक्षता का इस्तेमाल अलग–अलग देशों के साथ द्विपक्षीय हितों को आगे बढ़ाने के साथ वैश्विक दक्षिण से जुड़े बड़े मुद्दों को उठाने के लिए किया। नई दिल्ली ने मजबूत और लचीली आपूर्ति शृंखला, अंतरराष्ट्रीय व्यापार में स्थानीय मुद्राओं के अधिक इस्तेमाल और वैश्विक संस्थानों में सुधार की वकालत की, ताकि विकासशील देशों को अधिक प्रतिनिधित्व मिल सके।

इन बैठकों के जरिए प्रधानमंत्री मोदी ने यूक्रेन और पश्चिम एशिया में जारी संघर्षों पर भी भारत का रुख सामने रखा। भारत ने तनाव कम करने और बातचीत तथा कूटनीति के रास्ते पर लौटने की अपनी नीति दोहराई। ब्रिक्स सम्मेलन के दौरान तीन दिनों में 15 औपचारिक द्विपक्षीय बैठकों और कई अनौपचारिक मुलाकातों ने यह भी दिखाया कि भारत ने इस वैश्विक मंच का इस्तेमाल ब्रिक्स के सामूहिक एजेंडे के साथ ठोस द्विपक्षीय नतीजों के लिए भी किया।

माँसाहारी...

राहुल के बाद कांग्रेस ने भी साधा निशाना

राहुल गांधी के बयान के बाद कांग्रेस ने भी सरकार पर हमला बोला। कांग्रेस के मीडिया और प्रचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने रात्रिभोज के मेन्यू पर सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि भारत की खान–पान की परंपरा बेहद विविध है।

पवन खेड़ा ने कहा कि भारत में दुनिया के कई बेहतरीन मांसाहारी व्यंजन मिलते हैं। उन्होंने सवाल किया कि सरकार ने ब्रिक्स देशों से आए नेताओं के सामने इन्हें क्यों नहीं रखा। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा अपनी खान–पान की पसंद दूसरों पर थोपने की कोशिश कर रही है। खेड़ा ने कहा कि यह मामला सिर्फ भारतीयों तक सीमित नहीं है। अब दुनिया भर से आए विदेशी मेहमानों के सामने भी सरकार ने अपनी पसंद का खाना परोसा है।

भाजपा ने कहा– विपक्ष के पास आलोचना के लिए सिर्फ खाना बचा

कांग्रेस के आरोपों पर भाजपा ने भी पलटवार किया। भाजपा प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने कहा कि अगर विपक्ष के पास शिखर सम्मेलन की आलोचना करने के लिए सिर्फ खाने का मेन्यू है, तो यह सम्मेलन की सफलता को दर्शाता है।

उन्होंने कहा कि भारत अब वैश्विक स्तर पर सहमति बनाने वाली ताकत के रूप में उभर रहा है। भाजपा प्रवक्ता तुहिन सिन्हा ने भी राहुल गांधी पर निशाना साधा। उन्होंने राहुल की टिप्पणी को छोटी और गैरजरूरी राजनीति बताया।

तुहिन सिन्हा ने कहा कि अगर राहुल गांधी जिम्मेदार विपक्ष के नेता हैं, तो उन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत को बधाई देनी चाहिए थी। नई दिल्ली घोषणा में ब्रिक्स देशों ने कई गंभीर वैश्विक मुद्दों पर एकजुटता दिखाई।

केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू बोले– खाने पर भी राजनीति कर रही कांग्रेस

केंद्रीय मंत्री किरेन रिजिजू ने भी कांग्रेस पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ब्रिक्स देशों के नेताओं को परोसे गए खाने के मेन्यू पर भी राजनीति कर रही है। ब्रिक्स नेताओं ने भारतीय शाकाहारी व्यंजनों का आनंद लिया। भारत के अलग–अलग हिस्सों की खान–पान की परंपराओं में कई तरह के स्वाद और पोषण वाले व्यंजन हैं।

दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को नई दिल्ली के भारत मंडपम में ब्रिक्स नेताओं और प्रतिनिधियों के लिए रात्रिभोज का आयोजन किया था। इस रात्रिभोज में कई तरह के शाकाहारी व्यंजन परोसे गए।

मेन्यू में खांडवी, पनीर लबाबदार, गुच्ची मार्मिक, मोटे अनाज से बना पुलाव, मशरूम गलौटी और जलेबी शामिल थी। रात्रिभोज में मोटे अनाज यानी श्री अन्न पर भी खास जोर दिया गया। यह भारत के श्री अन्न और टिकाऊ खान–पान को बढ़ावा देने के प्रयास से जुड़ा था।

रात्रिभोज के दौरान 100 से ज्यादा कलाकारों ने प्रस्तुति भी दी। इनमें भारत के अलावा ब्रिक्स के अन्य सदस्य देशों के कलाकार भी शामिल थे।

80 फीसदी मांसाहारी वाले दावे पर क्या है आंकड़ा?

राहुल गांधी ने 80 फीसदी भारतीयों के मांसाहारी भोजन करने का दावा किया है। हालांकि, उन्होंने इस आंकड़े का कोई स्रोत नहीं बताया। मौजूदा राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–6 में मांसाहारी भोजन को लेकर ऐसा कोई राष्ट्रीय आंकड़ा नहीं दिया गया है।

इससे पहले हुए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण–5 के मुताबिक, 15 से 49 साल की उम्र के 83.4 फीसदी पुरुष और 70.6 फीसदी महिलाएं कम से कम कभी–कभार मछली, चिकन या मांस खाती थीं।

ब्रिक्स का 18वां शिखर सम्मेलन रविवार को समाप्त हुआ। भारत ने इस दो दिवसीय सम्मेलन की मेजबानी की। सम्मेलन में 11 सदस्य देशों के नेता शामिल हुए। रात्रिभोज के खाने को लेकर शुरू हुई बहस अब राजनीतिक बयानबाजी का मुद्दा बन गई है।

श्रीमद् भागवत कथा की तैयारियों को लेकर बैठक सम्पन्न

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। राजस्थानी जागृति समिति हैदराबाद के तत्वावधान में आगामी पितृपक्ष मास के पावन अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन गुरुवार, 1 अक्टूबर से बुधवार, 7 अक्टूबर 2026 तक प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से शाम 7 बजे तक साई बाबा मंदिर के प्रांगण, एन.एम. गुडा चौरस्ता, अतापुर, हैदराबाद में किया जाएगा।

पितृपक्ष मास के अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा की तैयारियों के संदर्भ में बैठक का आयोजन रविवार, 13 सितंबर को दोपहर 12:30 बजे साई बाबा मंदिर प्रांगण, एन.एम. गुडा चौरस्ता, अतापुर में श्री संजय गुप्ता की अध्यक्षता में किया गया। आशय की जानकारी समिति अध्यक्ष श्रीनिवास सोमाणी ने एक प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से दी।

समिति अध्यक्ष श्रीनिवास सोमाणी ने बैठक में उपस्थित सभी बंधुओं एवं समिति के सदस्यों को श्रीमद् भागवत कथा के आयोजन की संपूर्ण जानकारी दी तथा अब तक की गई तैयारियों को सभी के समक्ष रखा। श्रीमद् भागवत कथा कार्यक्रम के लिए बनाए गए सभी संयोजकों से उनके कार्यों की जानकारी प्राप्त की गई। सभी संयोजकों ने अपने-अपने कार्यों की प्रगति एवं तैयारियों की जानकारी समिति अध्यक्ष तथा बैठक में उपस्थित सदस्यों के समक्ष प्रस्तुत की।

कलश यात्रा के संयोजकों ने जानकारी दी कि अभी तक 20 नाम पंजीकृत हो चुके हैं। श्रीनिवास सोमाणी ने बताया कि श्रीमद् भागवत कथा के अंतर्गत आयोजित होने वाली कलश यात्रा में 108 कलश का लक्ष्य रखा गया है। कलश यात्रा के लिए पंजीकरण की अंतिम तिथि 25 सितंबर निर्धारित की गई है। उन्होंने सभी कलश लेने वाली महिलाओं से आग्रह किया कि वे 25 सितंबर तक पंजीकरण राशि जमा कर अपना नाम दर्ज कराएं।

दैनिक यजमान के रूप में श्री राम निरंजन जी अग्रवाल, प्रसिद्ध उद्योगपति, का श्रीनिवास सोमाणी ने शाल एवं मोती की माला पहनाकर सम्मान किया। दैनिक यजमान के रूप में श्रीमती कोमल बेहवाल का भी शाल एवं मोती की माला से सम्मान किया गया। कलश यात्रा की संयोजक श्रीमती जमुना लाठी एवं श्रीमती आशा देवी सोमाणी ने उनका सम्मान किया।

श्रीनिवास सोमाणी ने कहा कि धार्मिक आस्था रखने वाले समाज के बंधु अपने पितरों के निमित्त पितृपक्ष मास के इस पावन अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा में अपने एवं अपने परिवार का नाम दैनिक यजमान के रूप में समिति अध्यक्ष के पास लिखाएं।

उन्होंने बताया कि प्रतिदिन शाम आरती के पश्चात कथा श्रवण करने वाले बंधुओं एवं भक्तों के लिए भोजन की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने समाज के सभी बंधुओं से पितृपक्ष मास के अवसर पर भोजन व्यवस्था में सहयोग कर पुण्य के लाभार्थी बनने का आग्रह किया।

बैठक में अध्यक्षीय संबोधन देते हुए श्री संजय गुप्ता ने कहा कि श्रीमद् भागवत कथा में अतापुर निवासी धार्मिक आस्था रखने वाली महिलाओं एवं पुरुषों को जोड़ने के लिए सभी को प्रोत्साहित किया जाए, ताकि अतापुर में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन भव्य रूप से सफल बनाया जा सके।

संजय गुप्ता ने कहा कि प्रत्येक परिवार अपने पितरों के मोक्ष के लिए पितृपक्ष के इस पावन अवसर पर श्रीमद् भागवत कथा से जुड़कर अपना नाम समिति अध्यक्ष के पास लिखाए तथा कार्यक्रम की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करे।बैठक में समिति अध्यक्ष श्रीनिवास सोमाणी, संगठन मंत्री रमेश मोदानी, संजय गुप्ता, श्री किशन काबरा, रामदेव व्यास, रामदयाल शर्मा, श्याम सुंदर जांगिड़, निखिल सोमाणी, पंकज बंग, श्रीमती जमुना देवी लाठी, श्रीमती आशा देवी सोमाणी, श्रीमती मनीषा बंग, श्रीमती कोमल बेहवाल, पांडुरंग पवार, वेल्लापुरम, प्रशांत भरमचटे, एम. ईश्वर, एन. गणपति, उग्र बसवराज, शिवराज बिरादर, दत्ता प्रभु एवं श्री केदारनाथ लाठी सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

गणेश उत्सव पर गौ उत्पादों के उपयोग एवं गौशालाओं के सहयोग की अपील

हैदराबाद, 12 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। लव फॉर काऊ फाउंडेशन एवं प्राणीमित्र रमेश जागीरदार फाउंडेशन के पदाधिकारियों की संयुक्त बैठक सुलतान बाजार स्थित रॉयल प्लाजा कार्यालय में आयोजित हुई। बैठक में आगामी गणेश उत्सव के दौरान गौ उत्पादों के उपयोग तथा तेलंगाना में कम वर्षा के कारण गौशालाओं में उत्पन्न चारे की कमी एवं आर्थिक समस्याओं पर चर्चा की गई।

लव फॉर काऊ फाउंडेशन की ट्रस्टी रंजना शाह एवं वीरेंद्र अग्रवाल ने बताया कि संस्थाओं ने सनातन धर्मप्रेमियों से गणेश उत्सव के अवसर पर गौसेवा को बढ़ावा देने तथा गौ उत्पादों का उपयोग करने की अपील की है। उन्होंने घरों, मंदिरों एवं गणेश मंडपों में गणेश प्रतिमा के साथ गौमाता की प्रतिमा स्थापित करने तथा गाय के दूध एवं घी के उपयोग का आह्वान किया।

जसमत पटेल ने कहा कि गणेश उत्सव आस्था के साथ संस्कृति एवं गौ संरक्षण के प्रति जागरूकता का भी पर्व है। रिद्धी जागीरदार ने गौ संरक्षण के लिए जनभागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता बताई। पारस जागीरदार ने सरकार से आर्थिक संकट से जूझ रही गौशालाओं को चारा एवं दवाइयों सहित आवश्यक सहायता उपलब्ध कराने की अपील की।

संस्था के पदाधिकारियों ने जियागुडा स्थित समर्थ कामधेनु गौशाला का दौरा कर वहां की समस्याओं की जानकारी ली तथा एक गाड़ी घास-चारे का सहयोग किया।

गौशाला के प्रभुदत्त महाराज ने बताया कि गौशाला में प्रतिमाह 100 टन से अधिक चारे की आवश्यकता होती है तथा विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए करीब 30 लाख रुपये की आवश्यकता रहती है।

इस अवसर पर काचीगुडा क्षेत्र में गौदान एवं गौग्रास के लिए जनजागरूकता अभियान चलाया गया। काचीगुडा स्थित पटेल नमकीन की ओर से गौग्रास के लिए 12 हजार रुपये की राशि सहयोग स्वरूप प्रदान की गई।

बाबा रामदेव से डॉ. अजय कुमार अग्रवाल ने की मुलाकात

योग को हर व्यक्ति अपनाए और बढ़ावा दे : बाबा रामदेव

हरिद्वार, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)।

इंटरनेशनल चैंबर्स ऑफ पब्लिक रिलेशंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स से जुड़े डॉ. अजय कुमार अग्रवाल ने प्रसिद्ध योग गुरु एवं पतंजलि पीठ के संस्थापक परम पूज्य बाबा रामदेव से उनके हरिद्वार स्थित आश्रम 'संत कुटीर' में दोपहर के भोजन पर मुलाकात की। इस अवसर पर डॉ. अग्रवाल के साथ उनकी बहन रीता एवं बहनोई रजनीश कुमार, भारतीय स्टेट बैंक के पूर्व अध्यक्ष, भी मौजूद रहे।

इस अवसर पर उन्होंने आचार्य बालकृष्ण से भी मुलाकात की। आचार्य बालकृष्ण पतंजलि आयुर्वेद एवं पतंजलि योगपीठ के सह-संस्थापक, प्रबंध निदेशक एवं प्रसिद्ध आयुर्वेद विद्वान हैं। डॉ. अग्रवाल ने उनसे भी आशीर्वाद प्राप्त किया।

मुलाकात के दौरान बाबा रामदेव ने व्यक्ति को पूरी तरह स्वस्थ एवं फिट रखने तथा मानसिक तनाव एवं पीड़ा से दूर रखने में योग के लाभों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने अच्छे स्वास्थ्य को बनाए रखने एवं स्वास्थ्यवर्धन में सुधार के लिए कई सुझाव भी दिए।

बाबा रामदेव ने इस बात पर जोर दिया कि लोगों और राष्ट्र को खुशहाल रखने तथा वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए योग को हर व्यक्ति को अपनाना चाहिए और इसे बढ़ावा देना चाहिए।

बाबा रामदेव ने कहा कि योग केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन एवं स्वस्थ जीवनशैली के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि बच्चों में बचपन से ही योग करने की आदत विकसित की जानी चाहिए, ताकि वे स्वस्थ एवं संतुलित जीवन की ओर अग्रसर हो सकें।

प्रेरणा फाउंडेशन ने पर्यावरण-अनुकूल गणेश प्रतिमाओं का वितरण किया

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। प्रेरणा फाउंडेशन द्वारा गणेश चतुर्थी के पावन अवसर पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पर्यावरण-अनुकूल मिट्टी से निर्मित गणेश प्रतिमाओं का निःशुल्क वितरण किया गया। इस अभियान के अंतर्गत एक ही दिन में 250 से अधिक गणेश प्रतिमाओं का वितरण किया गया।

यह विशेष अभियान हैदराबाद के अशोक नगर स्थित शीतल ग्रैंड बाजार तथा सिखारा, अत्तापुर में दो अलग-अलग स्थानों पर आयोजित किया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं स्थानीय नागरिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और पर्यावरण-अनुकूल गणेश प्रतिमाएं प्राप्त कीं।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को पर्यावरण संरक्षण, मिट्टी से निर्मित गणेश प्रतिमाओं के उपयोग तथा प्रदूषणमुक्त गणेशोत्सव के प्रति जागरूक करना था। नागरिकों ने प्रेरणा फाउंडेशन की इस पहल की सराहना करते हुए इसे पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय कदम बताया।

इस अवसर पर जिग्नेश जोशी, सत्यनारायण गुप्ता, वैभव गुप्ता, मधुसूदन डालिया, अजय तुलशन, महेश अग्रवाल एवं पुष्पा गुप्ता सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

प्रेरणा फाउंडेशन की संस्थापिका एवं अध्यक्षा श्रीमती पूजा गुप्ता ने कहा कि संस्था द्वारा प्रत्येक वर्ष पर्यावरण-अनुकूल गणेश प्रतिमाओं के निःशुल्क वितरण के माध्यम से लोगों को प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित किया जाता है। उन्होंने इस अभियान को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी नागरिकों एवं शुभचिंतकों का आभार व्यक्त किया।

रासूलपुरा आराधना भवन में भगवान महावीर का जन्म वाचन सम्पन्न

पर्युषण पर्व के अवसर पर धार्मिक आयोजनों में उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। रासूलपुरा स्थित आराधना भवन में पर्वाधिराज पर्युषण के पावन अवसर पर भगवान महावीर स्वामी का जन्म वाचन समारोह श्रद्धा एवं भक्तिभाव के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने सहभागिता करते हुए भगवान महावीर स्वामी की आराधना एवं पूजा-अर्चना की।

जैन रत्न रमेश पी. तातेड के अनुसार कार्यक्रम का शुभारंभ गीताबेन संजय सुरेशजी सिंघवी द्वारा भगवान की झाझम बिछाने से हुआ। वीरसैनिक अंजन विनोदजी, बाल वीरसैनिक कल्प संतोषजी एवं मोक्ष कैलाशजी द्वारा कल्पसूत्र का वाचन एवं उच्चारण किया गया। भगवानजी के पालने के साथ 14 स्वप्न, मुनीमजी, माला एवं तिलक सहित अन्य बोलियों में समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

प्रभु महावीर स्वामी को श्रद्धापूर्वक झूले में विराजमान किया गया। इसके पश्चात लाभार्थी परिवार द्वारा अष्टप्रकारी पूजा, आरती एवं मंगल दीपक का आयोजन भक्तिभाव के साथ किया गया। समारोह में संघाध्यक्ष निर्मल कोठारी, महामंत्री सुधीर कोठारी, संघ के सभी ट्रस्टीगण एवं अन्य गणमान्य श्रद्धालु उपस्थित रहे।

श्री पार्श्वनाथ जैन मंडल, बैंड मंडल एवं आंगी महिला मंडल रासूलपुरा की भी सहभागिता रही। ये मंडल पर्वाधिराज पर्युषण के दौरान भव्य एवं आकर्षक आंगी सजाते हैं। इस अवसर पर संघ की ओर से तथा योगेश भाई खरगंधी की ओर से मोतीचूर के लड्डू की प्रभावना की गई।

स्वामिवात्सल्य, भवन की आकर्षक सजावट, द्वार का उद्घाटन एवं पारणा सहित विभिन्न धार्मिक आयोजनों के लाभार्थियों का सम्मान एवं अभिनंदन किया गया।

समारोह के बाद पालनाजी एवं 14 स्वप्न रेखाबेन सरदारमलजी भौडतरीया परिवार के सुपुत्र मनोज-सोनल एवं मनीष-मीना द्वारा धूमधाम से अपने निवास पर ले जाए गए। रात्रि में उनके निवास पर भव्य भक्ति संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने भावपूर्वक भगवान महावीर स्वामी की आराधना की।

पूरे आयोजन के दौरान आराधना भवन में श्रद्धा, भक्ति एवं धार्मिक उल्लास का वातावरण बना रहा। समाजजनों ने भगवान महावीर स्वामी के सिद्धांतों को आत्मसात करने तथा उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया।

मिट्टी के गणेश विग्रहों का निःशुल्क वितरण

इंदुर, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। श्री धनपाल लक्ष्मी बाई विठ्ठल गुप्ता चैरिटेबल ट्रस्ट के सदस्यों ने मिट्टी के गणेश विग्रहों की पूजा कर पर्यावरण की रक्षा करने का आह्वान किया है। ट्रस्ट के सदस्य प्रणय कुमार ने शहर के आरपी रोड स्थित किसान फैशन मॉल के पास निःशुल्क मिट्टी के गणेश विग्रह वितरित किए।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रणय कुमार ने कहा कि हिंदू परंपरा में भगवान गणेश का विशेष स्थान है। वे विघ्नहर्ता भगवान हैं। उन्होंने बताया कि उनके ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष मिट्टी के गणेश विग्रहों का वितरण किया जाता है। उन्होंने कहा कि अब तक शहर के सभी मंडपों को चंदे के रूप में सहयोग भी प्रदान किया जा चुका है।

प्रणय कुमार ने पुराणों का उल्लेख करते हुए कहा कि मिट्टी के गणेश विग्रहों की ही पूजा करनी चाहिए।

सेवा से ही समाज में जागता है मानवता का भाव : जगत नारायण अग्रवाल

हैदराबाद। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में रविवार को बेगम बाजार स्थित भू देवी माता मंदिर के पास गौशाला के सामने नियमित सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ग्रुप के सदस्यों ने जरूरतमंदों की सेवा करने के साथ ही गौसेवा में भी सहभागिता निभाई। नियमित रूप से किए जा रहे इस सेवा कार्य में सदस्यों की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली।

इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए जगत नारायण अग्रवाल ने कहा कि सेवा से ही समाज में मानवता का भाव जागता है। किसी जरूरतमंद के चेहरे पर मुस्कान लाना और उसकी आवश्यकता के समय उसके साथ खड़ा होना ही सच्ची मानव सेवा है। उन्होंने कहा कि सेवा के लिए केवल साधन ही नहीं, बल्कि संवेदनशील मन और समर्पित भावना की आवश्यकता होती है। जब समाज के लोग मिलकर निस्वार्थ भाव से सेवा कार्य करते हैं, तो उसका सकारात्मक प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है।उन्होंने कहा कि राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद द्वारा नियमित रूप से किए जा रहे सेवा कार्य केवल जरूरतमंदों की सहायता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज में सेवा, संस्कार और सहयोग की भावना को भी मजबूत कर रहे हैं। गौसेवा और अन्नसेवा भारतीय संस्कृति की महान परंपरा का हिस्सा हैं। इन कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाना प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक जिम्मेदारी भी है।

जगत नारायण अग्रवाल ने कहा कि सेवा कार्य में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। जरूरतमंद व्यक्ति तक सहायता पहुंचाना ही सेवा की वास्तविक भावना है। उन्होंने राधे-राधे ग्रुप के सभी सदस्यों की सराहना करते हुए कहा कि सामूहिक प्रयासों से सेवा का यह कारवां निरंतर आगे बढ़ रहा है और अनेक लोगों को इससे जुड़कर समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाने की प्रेरणा मिल रही है।कार्यक्रम में दीपचंद अग्रवाल, नीलम विजयवर्गीय, अरुण विजयवर्गीय, मीना अग्रवाल सहित राधे-राधे ग्रुप के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने सेवा कार्य में सहयोग करते हुए इसे निरंतर जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया। सदस्यों ने कहा कि जरूरतमंदों की सेवा, गौसेवा और समाजहित के कार्यों के माध्यम से मानवता की भावना को मजबूत करना ही ग्रुप का प्रमुख उद्देश्य है। इस अवसर पर सेवा और समर्पण की भावना के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्रीकृष्ण छठी पर भजन संध्या एवं महाप्रसादी आयोजित

हैदराबाद, 12 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)।

शंकर बाजार, बेगम बाजार स्थित जगन्नाथ द्वारा खाकी अखाड़ा मठ में मठ पीठाधीश्वर अमृत दास खाकी जी के सान्निध्य में भगवान श्रीकृष्ण जी की छठी के अवसर पर भजन संध्या एवं महाप्रसादी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में महंत शिवशंकर दास, महंत अरुण दास, महंत संजय दास, विंध्याचल ब्राह्मण सेवा संघ के अध्यक्ष सुनील कुमार पाण्डेय, उपाध्यक्ष रामशिरोमणि तिवारी, विजय कुमार तोतला, लखन तोतला, ऋत्विक सिंह, विनोद पोरवाल, रमेश लाल यादव, संतोष पाठक, जीवेश द्विवेदी, प्रकाश गर्ग, पुष्पेंद्र शुक्ला, सोनू मिश्रा, महेश गौतम, श्याम दायमा, सूरज महाराज, राजेश महाराज, मनीष मालाणी, कमलेश द्विवेदी, शिवनारायण त्रिपाठी, नीरज शुक्ला सहित अनेक श्रद्धालु एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

जीएसआई की पहली महिला महानिदेशक वार्शा अशोक आगलवे का भव्य अभिनंदन

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। जीएसआई एससी/एसटी कर्मचारी कल्याण संघ के तत्वावधान में जीएसआई की महानिदेशक श्रीमती वार्शा अशोक आगलवे ने पहली बार जीएसआई हैदराबाद का दौरा किया। इस अवसर पर उनका भव्य स्वागत-सत्कार किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अदर्ला महेश ने उनका अभिनंदन किया।

इस मौके पर बोलते हुए श्रीमती आगलवे ने कहा कि भू-संसाधनों के दोहन में जीएसआई की भूमिका देश की संपत्ति के लिए अमूल्य है।

उन्होंने सुझाव दिया कि जीएसआई कर्मचारियों को समय पर कार्यालय पहुंचकर समर्पण और अनुशासन के साथ कार्य करना चाहिए, ताकि संस्था देश के विकास में और अधिक योगदान दे सके।

अपने स्वागत भाषण में अदर्ला महेश ने कहा कि जीएसआई के 176 वर्ष के इतिहास में वार्शा अशोक आगलवे का हाल ही में पहली महिला महानिदेशक के रूप में पदोन्नत होना और हैदराबाद आना हर्ष का विषय है।

इस कार्यक्रम में एडीजी विजय विष्णुपंत मुघल, डीडीजी सत्यनारायण महा पात्रो, दीपक हाजरा, वी.वी. शेष साई, दीपक एम.एन. प्रवीण, अजय निरवान, के.वी. मारुति, शैलेंद्र कुमार सिंह, निदेशक (जी) एचओओ सी.के. राजा, निदेशक-संपर्क अधिकारी श्री बनर्जी, निदेशक पीएसएस श्री हर मोहन मिश्रा, निदेशक (पी एंड ए) एस्टेट्स, अखिल भारतीय महासचिव श्री हेमंत दास, क्षेत्रीय सचिव जे. राजशेखर, उपाध्यक्ष बी. लिंगैया, आर. अरुण कुमार, बी. श्रीनिवास, संयुक्त सचिव ए. मेघ राज, बी. प्रभाकर, ए. शिवशंकर, सुनील कुमार, जी. प्रकाश, कोषाध्यक्ष बी. आनंद कुमार, एम. चक्रेश्वर, रविंदर, बी. नरेश संगमनेनी नायडू तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

सिकंदराबाद में पर्युषण महापर्व के तहत जप दिवस आयोजित

आध्यात्मिक आरोहण का प्रशस्त उपक्रम है जप : मुनि दीप कुमार

हैदराबाद, 13 सितंबर (शुभ लाभ ब्यूरो)। सिकंदराबाद के डायमंड प्वाइंट स्थित राजराजेश्वरी गार्डन में युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनिश्री दीप कुमारजी ठाणा-2 के सानिध्य में पर्युषण महापर्व के अंतर्गत जप दिवस का आयोजन जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद द्वारा किया गया।

इस अवसर पर श्रद्धालुओं ने आध्यात्मिक वातावरण में जप, मंत्र-साधना एवं ध्यान के माध्यम से अपनी चेतना को जागृत करने का प्रयास किया। पर्युषण महापर्व के प्रत्येक दिवस को साधना की विशेष कड़ी के रूप में मनाया जा रहा है।

मुनिश्री दीप कुमारजी ने कहा कि जप आध्यात्मिक आरोहण का एक प्रशस्त उपक्रम है। मंत्र अचिंत्य प्रभाव उत्पन्न करने वाली शक्तियों में से एक है। मंत्र का बार-बार उच्चारण जप है। मंत्र-साधना में शब्द, भावना और प्रकंपन तीनों का योग आवश्यक है। भावना प्रबल हो तो कोरा शब्द भी शक्तिशाली बन जाता है। विधिपूर्वक, अनुष्ठानपूर्वक एवं लयबद्ध उच्चारण के साथ जब उसमें भावना का समावेश होता है, तभी मंत्र में प्राणशक्ति का संचार होता है। शुद्ध एवं लयबद्ध मंत्रोच्चारण से प्राणशक्ति प्रखर होती है।

उन्होंने कहा कि जप केवल शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि मन, वचन और चेतना को एक दिशा में प्रवाहित करने की साधना है। जप में श्रद्धा जुड़ती है तो वह साधना बन जाता है और साधना में भावना जुड़ने पर वह आध्यात्मिक शक्ति का रूप ले लेती है। केवल मुख से मंत्र का उच्चारण करना पर्याप्त नहीं है। मंत्र के प्रत्येक अक्षर के साथ मन की उपस्थिति और हृदय की भावना जुड़नी चाहिए।

मुनिश्री ने कहा कि आज मनुष्य के पास साधन बहुत हैं, लेकिन मन की शांति कम होती जा रही है। जप मन को एकाग्र करने की प्रक्रिया है। बार-बार एक ही पवित्र ध्वनि, मंगल भावना और आध्यात्मिक लक्ष्य की ओर मन को ले जाने से उसकी चंचलता कम होती है और चेतना में स्थिरता आती है।

उन्होंने कहा कि जप के द्वारा मनुष्य जैसा चाहे, वैसा बन सकता है। मनुष्य जैसा बार-बार सोचता है, बोलता है और करता है, धीरे-धीरे उसका व्यक्तित्व वैसा ही बनने लगता है। इसलिए जप के माध्यम से मन में शांति, करुणा, मैत्री, अहिंसा, आत्मविश्वास और आध्यात्मिक जागरण की भावना को बार-बार स्थापित किया जाए तो जीवन की दिशा भी उसी ओर परिवर्तित होने लगती है।

मुनिश्री ने जप को आध्यात्मिक चिकित्सा बताते हुए कहा कि जिस प्रकार शरीर की चिकित्सा के लिए औषधि की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मन और चेतना की चिकित्सा के लिए आध्यात्मिक साधना आवश्यक है। तनाव, भय, क्रोध, चिंता, असंतोष और नकारात्मक विचारों से घिरे मन को सकारात्मक एवं शांत बनाने में जप प्रभावी साधना बन सकता है। जप मन को बाहर से भीतर की यात्रा करवाता है।

उन्होंने मंत्र-साधना में शब्द, भावना और प्रकंपन के महत्व को समझाते हुए कहा कि मंत्र के शब्दों का अपना महत्व है, लेकिन शब्द तभी प्रभावशाली बनते हैं जब उनके पीछे भावना की शक्ति हो। जिस जप में केवल होंठ चलते हैं, लेकिन मन कहीं और भटक रहा होता है, उसकी गहराई सीमित रह जाती है। वहीं उच्चारण के साथ श्रद्धा, समर्पण और जागरूकता जुड़ने पर जप साधक के भीतर गहरा परिवर्तन ला सकता है।

मुनिश्री ने नमस्कार महामंत्र आदि मंत्रों के प्रयोगों के माध्यम से मंत्र-साधना का विस्तार से विवेचन किया। उन्होंने नमस्कार महामंत्र के प्रत्येक पद की आध्यात्मिक गरिमा को समझाते हुए बताया कि यह मंत्र किसी व्यक्ति विशेष की आराधना तक सीमित नहीं है, बल्कि साधक को अपने भीतर स्थित गुणों की ओर बढ़ने की प्रेरणा देता है। अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु इन पंच परमेष्ठियों के गुणों के प्रति नमन करते हुए साधक अपने जीवन में भी उन गुणों को विकसित करने की दिशा में आगे बढ़ सकता है। उन्होंने भगवान महावीर के पूर्व भव के नंदन कुमार के भव का वर्णन करते हुए जप, श्रद्धा और आध्यात्मिक भावना के प्रभाव को स्पष्ट किया। प्रसंग के माध्यम से उन्होंने बताया कि साधना का मूल्य केवल बाहरी क्रिया में नहीं, बल्कि उसके पीछे निहित आंतरिक भाव में होता है। भावना में जितनी प्रबलता होती है, साधना का प्रभाव उतना ही गहरा होता है।

इस अवसर पर मुनिश्री काव्य कुमारजी ने कहा कि सभी धर्म-संप्रदायों में मंत्र-साधना की परंपरा रही है। मंत्र साधक के पास एक ऐसी आध्यात्मिक शक्ति है, जो उसके जीवन को सकारात्मक दिशा प्रदान कर सकती है। उन्होंने कहा कि मंत्र केवल बोलने की वस्तु नहीं, अनुभव करने की साधना है। मंत्र के साथ श्रद्धा और समर्पण जुड़ जाए तो साधक की चेतना में विशेष प्रकार की जागृति का अनुभव हो सकता है। मुनिश्री ने आगे कहा कि वर्तमान समय में मनुष्य का मन अनेक प्रकार की सूचनाओं, चिंताओं और विचारों से घिरा हुआ है। ऐसे समय में जप मन को एक बिंदु पर लाने का माध्यम बन सकता है। उन्होंने श्रद्धालुओं को जप को जीवन की नियमित साधना बनाने तथा इसे केवल विशेष अवसरों तक सीमित न रखने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम में मंगलाचरण राजलदेसर, रतनगढ़, श्रीडूंगरगढ़, नोहर-भादरा, हरियाणा, पंजाब, लूनियाबास एवं सूरतगढ़ से संबंधित श्रद्धालुओं ने किया। सूचनाएं महासभा के क्षेत्रीय प्रभारी लक्ष्मीपतजी बैद ने दी।

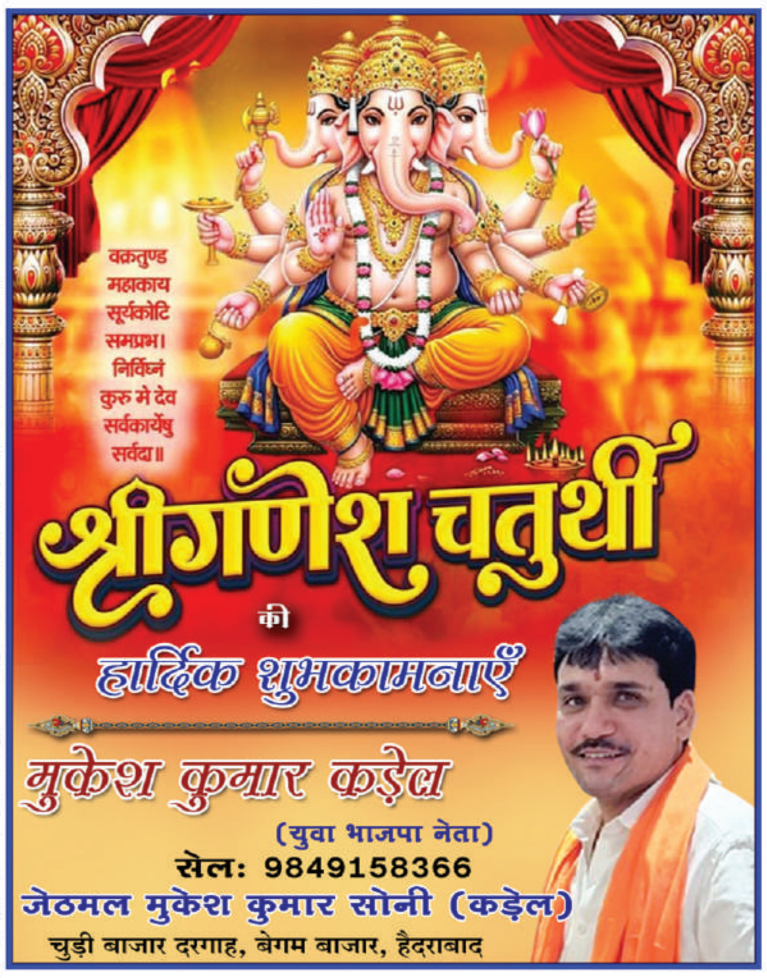

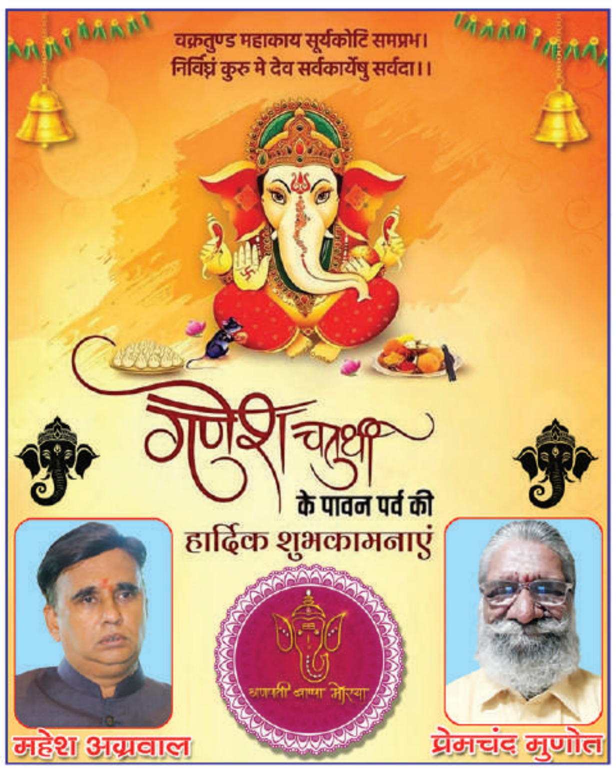

राधे-राधे ग्रुप की सेवा से जुड़ रहा समाज, केबीआर पार्क पर नियमित सेवा कार्यक्रम

हैदराबाद। राधे-राधे ग्रुप हैदराबाद के तत्वावधान में इंडो अमेरिकन कैंसर हॉस्पिटल के पास केबीआर पार्क स्थित वाटर टैंक पर नियमित सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान जरूरतमंदों को अन्नदान एवं सेवा प्रदान करते हुए मानव सेवा का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों ने कहा कि राधे-राधे ग्रुप द्वारा नियमित रूप से किए जा रहे सेवा कार्य समाज में सेवा, सहयोग और संस्कार की भावना को मजबूत कर रहे हैं। बिना किसी भेदभाव के जरूरतमंदों तक भोजन पहुंचाना वास्तव में मानवता की सच्ची सेवा है। सेवा कार्यों के माध्यम से समाज को यह संदेश दिया जा रहा है कि सामूहिक प्रयासों से जरूरतमंदों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

इस अवसर पर मनीष अग्रवाल, जगत नारायण अग्रवाल, भंवरलाल गुप्ता, वीणा गुप्ता सहित राधे-राधे ग्रुप के अनेक सदस्य उपस्थित रहे। सदस्यों ने नियमित सेवा कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया।

कार्टून कॉर्नर

मौसम हैदराबाद

अधिकतम : 31^0
न्यूनतम : 24^0

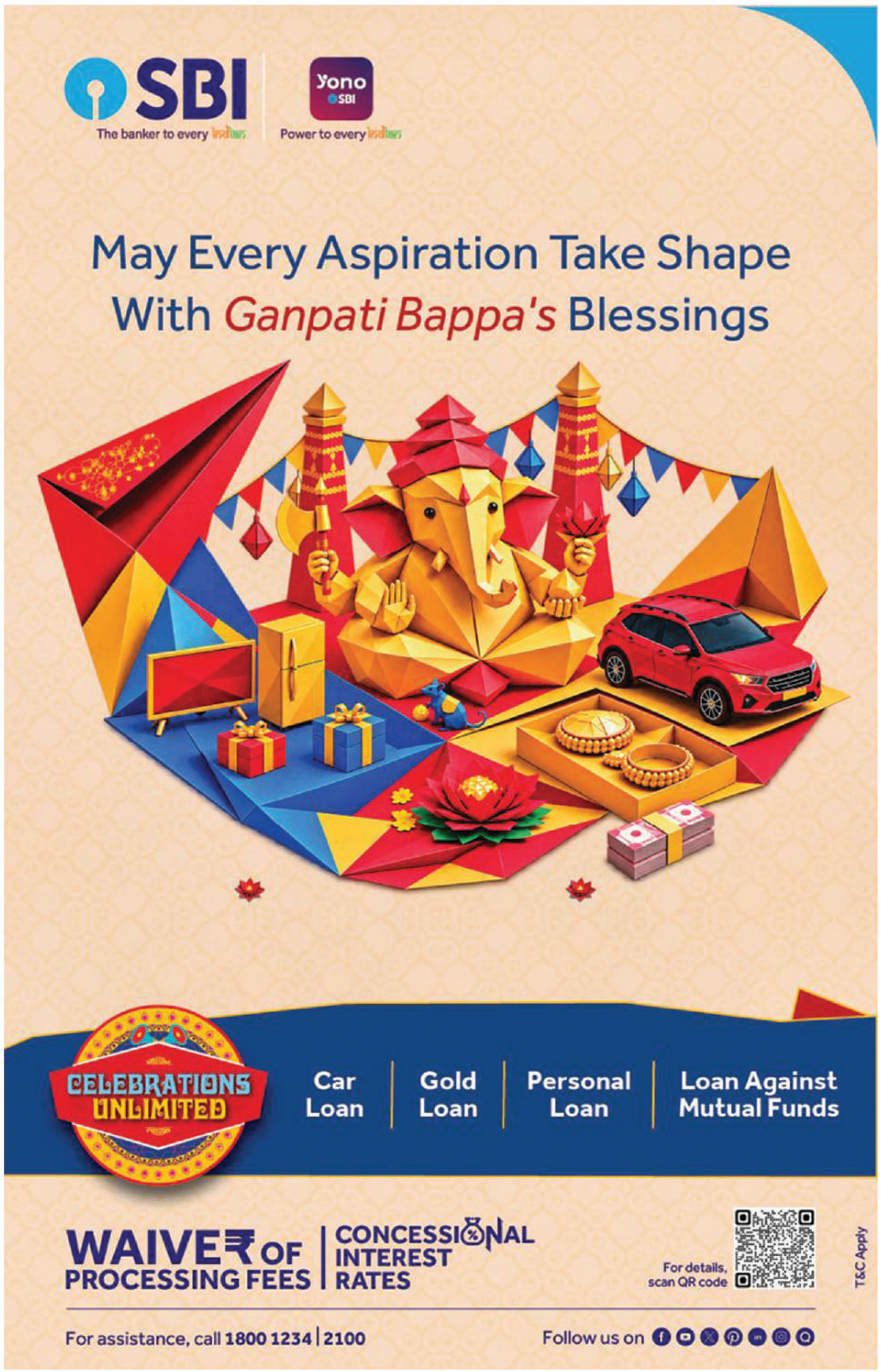

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक गोपाल अग्रवाल द्वारा श्री शेषसाई इंटरप्राइजेज प्लॉट नंबर. 98/1, को-ऑपरेटिव इंडस्ट्रीयल एस्टेट, गांधी नगर, बालानगर के पास मेडचेल-मल्काजगिरि जिला. हैदराबाद 500037, तेलंगाना स्टेट से मुद्रित तथा प्लॉट नं. ए-23/5 तथा 6, दूसरा माला, ओपीआईई, बालानगर, हैदराबाद, मेडचल मलकाजगिरी जिला, तेलंगाना राज्य-500037 से प्रकाशित। आर. एन. आई रजिस्टर्ड नं. TELHIN/2019/78163, फोन नं. 040-29551811. E-mail : dailyshubhlabh@gmail.com.